ज्ञान महाविद्यालय
अलीगढ़

ज्ञान पुष्प

ज्ञान महाविद्यालय, अलीगढ़

Scanned by CamScanner

ज्ञान महाविद्यालय अलीगढ़

प्रबन्ध समिति के पदाधिकारियों एवं सदस्यों की सूची

1. श्रीमती आशा देवी	--	अध्यक्ष
2. श्री राधेश्याम गुप्ता	--	उपाध्यक्ष
3. श्री दीपक गोयल	--	सचिव
4. कु0 पुष्पा शर्मा	--	सदस्य
5. डॉ0 मधु गर्ग	--	सदस्य
6. श्री अनिल खण्डेलवाल	--	सदस्य
7. श्री असलूब अहमद	--	सदस्य
8. श्री अवि प्रकाश मित्तल	--	सदस्य
9. डॉ0 पूरन मल	--	प्राचार्य
10. डॉ0 वाई0 के0 गुप्ता	--	शिक्षक प्रतिनिधि
11. डॉ0 अन्तिमा कुलश्रेष्ठ	--	शिक्षक प्रतिनिधि
12. डॉ0 सुरेन्द्र सिंह यादव	--	शिक्षक प्रतिनिधि
13. डॉ0 बी0 डी0 उपाध्याय	--	शिक्षक प्रतिनिधि
14. डॉ0 बी0 डी0 गुप्ता	--	शिक्षाविद्
15. डॉ0 धर्मेन्द्र गोयल	--	शिक्षाविद्
16. श्री मनोज यादव	--	तृतीय श्रेणी (कर्मचारी प्रतिनिधि)

Scanned by CamScanner

2007-08

ज्ञान-पुष्प

द्वितीय अंक

संरक्षक : डॉ० पूरन मल, प्राचार्य

प्रधान सम्पादक :

डॉ० योगेश कुमार गुप्ता, प्रवक्ता वाणिज्य संकाय

सम्पादक मण्डल :

डॉ० अन्तिमा कुलश्रेष्ठ

डॉ० सुरेन्द्र सिंह यादव

डॉ० बी०डी० उपाध्याय

ज्ञान महाविद्यालय

आगरा रोड, अलीगढ़

Scanned by CamScanner

अनुक्रमणिका

1.	अनुक्रमणिका		2–3
2.	डॉ0 एल0सी0 गौड़ – एक अविस्मरणीय व्यक्तित्व	– श्री मनोज यादव	12–13
3.	अखिर किस ओर जा रहा है हमारा समाज	– श्रीमती मंजूलता गोला	14–17
4.	प्रदूषण	– डा0 पूरनमल	18–19
5.	स्पेक्ट्रमदर्शी विधि द्वारा खोजे गये रासायनिक तत्व	– डा0 सुरेन्द्र सिंह यादव	20–25
6.	पुस्तकालयों का परिवर्तित स्वरूप	– डॉ0 कुसुमलता	26–27
7.	मेरे विचार	– स्नेहलता सागर	28
8.	अवसर न चूकें, सदा सक्रिय रहें	– अर्चना रानी	28
9.	भारतीय अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ बनाने में सेवा क्षेत्र के साथ–साथ उत्पादन बढ़ाना	– डॉ0 जे0के0 शर्मा	29–31
10.	कन्या भ्रूण हत्या : अंधकारमय भविष्य	– कृष्ण कुमार कश्यप	31
11.	हमारा नया सौरमंडल	– श्री अनन्त कुमार	32–33
12.	विद्यालय अनुशासन	– शिवानी माहेश्वरी	34
13.	उच्च शिक्षा की उपेक्षा	– श्रीमती सीमा पाठक	35–37
14.	श्रीराम भक्त गोस्वामी तुलसीदास	– डा0 शिवदत्त शर्मा	38–47
15.	मन की शक्ति	– लता वार्ष्णेय	48–49
16.	आत्म चिन्तन	– चन्द्रमोहन	50
17.	बेरोजगार एवं नववर्ष मंगल कामनाएँ	– चौ0 नरेन्द्र सिंह	50
18.	आज की महंगाई	– इन्द्र प्रताप सिंह	51
19.	शिक्षा	– डा0 अमित भार्गव	51
20.	विद्यालय एवं कक्षा का वातावरण	– डा0 रेखा शर्मा	52–55
21.	ग्लोबल वार्मिंग	– डा0 अन्तिमा कुलश्रेष्ठ	56–57
22.	देश की बेटियाँ	– रश्मि शर्मा	57
23.	आविष्कारों के जनक महान वैज्ञानिक जे0सी0 बोस	– चितरंजन वार्ष्णेय	58–60
24.	सत्य बोलना पाप हो गया	– रश्मि शर्मा	60
25.	गुरू–शिष्य और शिष्टाचार	– श्री खजान सिंह	61–62
26.	गुरू की महिमा	– गरिमा शर्मा	63
27.	मुस्कराते रहो	– गरिमा शर्मा	63
28.	जीवन क्या है	– अली अहमद खाँ	64
29.	कुछ जानने योग्य बातें	– अली अहमद खाँ	64

Scanned by CamScanner

30. एक विवाह हजारों बाराती	– अंकित पाण्डेय	65
31. संकल्प	– प्रदीप कुमार शर्मा	65
32. व्यक्तिगत विकास में शिक्षक का योगदान	– डा0 योगेश कुमार गुप्ता	66–67
33. निरोगी काया	– महेश कुमार सिंह 'जादौन'	68
34. चुटकुले	– मनोज कुमार	69–70
35. मुस्लिम समुदाय की समस्या समाधान	– हरिओम	71–72
36. संघर्ष ही जीवन है	– मुकेश दत्त	73–74
37. कर्म से ही जीवन है	– संदीप वार्ष्णेय	75–77
38. चार मुक्तक	– विपिन कुमार शर्मा	77
39. स्वर्ग की सरकार	– इन्द्र प्रताप सिंह	78
40. दोहे विज्ञान के	– ब्रजेश मोहन	78
41. गणितज्ञ का प्रेम पत्र	– मुकेश दत्त	79
42. शांति चाहते हो तो तृष्णा को जीतो	– सत्यपाल सिंह	80–81
43. शैक्षिक क्षेत्रीय भ्रमण का सामान्य परिचय	– हरिओम	82–84
44. विकास में परिवर्तन एक आवश्यकता	– श्री डी0के0 रावत	85–87
45. खेलों द्वारा व्यक्तित्व विकास	– डा0 वाई0के0 गुप्ता	88
46. वृक्ष – एक इतिहास	– राहुल गुप्ता	89–90
47. अनुशासन की ओर	– डा0 बी0डी0 उपाध्याय	91
48. Exam. Ka Bhoot Bhagao	- Hemant Kumar	92
49. My Parents	- Pankaj Kumar	92
50. Challenges Faced in the Implict Growth of India	- Sri Deepak Goel	93–99
51. Inspiration To Youths	- Dr. B.D. Gupta	100–101
52. Environmental Protection has no meaning to the World's poor-affuent nations know it but don't act	- Dr. Puran Mal	102–103
53. Success	- Smt. Seema Pathak	103
54. Relevance of one year B.Ed.	- Smt. Seema Pathak	104–105
55. A Curse to our Society	- Gunjan Sharma	106–107
56. CO_2 and the Biosphere	- Atul Kumar Chauhan	108
57. Just ! A Goal	- Dhavan Kumar Varshney	109
58. Water & Education	- Vipin Kumar Sharma	110
59. Grammer	- Natasha Gupta	111
60. Teaching	- Preeti Gupta	112
61. Poem - When We Share	- Harish Kumar Agrawal	112

Scanned by CamScanner

Our Tribute to

LATE Dr. GYANENDRA GOEL

Founder
Gyan Mahavidhyalaya, Aligarh

Vision of Dr. Goel was to ensure all round development of Gyan Mahavidyalaya, Aligarh in field of Higher/Professional education.

Above philosophy of Dr. Goel is charter of whole Gyan Mahavidyalaya family. We pray to the Almighty to give us the desired power to follow the path enlightened by Dr. Goel to achieve the goal.

This will be a better way to pay respectful homage to Dr. Goel by Gyan Mahavidyalaya family members. May God provide peace to the noble soul

* * * *

Scanned by CamScanner

आशुतोष वार्ष्णेय
महापौर
नगर निगम, अलीगढ़

आवास :
रिसाल सिंह नगर, आई०टी०आई० रोड
अलीगढ़–202001 (उत्तर प्रदेश)
: 98370-36369 (M)
: 0571-2401117 (R)
: 0571-2400138 (C)
: 0571-2400985 (O)

बधाई सन्देश

महोदय,

हर्ष का विषय है कि आपके विद्यालय द्वारा गत वर्षों की भाँति वार्षिक पत्रिका "ज्ञान पुष्प" का प्रकाशन किया जा रहा है। पत्रिका का उद्देश्य बहुआमी क्षमताओं को विकसित करना होगा ऐसी मेरी आशा है।

पत्रिका प्रकाशन हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनायें।

सेवा में,
डा० वाई०के० गुप्ता
प्रधान सम्पादक

आशुतोष वार्ष्णेय
महापौर

Scanned by CamScanner

जय भीम ! बहिन कु० मायावती जी जिन्दाबाद !! जय भारत !!!

रामेश्वर उपाध्याय
(एडवोकेट)
ब्लाक प्रमुख मुरसान
प्रतिनिधि
मा० श्री रामवीर उपाध्याय
(ऊर्जा एवं ग्रामीण समग्र विकास मंत्री),
उ०प्र० शासन लखनऊ)

निवास एवं कार्यालय :
आगरा रोड, हाथरस
कार्यालय : 224209
आवास : 235710, 231738
मोबाइल : 9412277444
लखनऊ : 0522–2238124

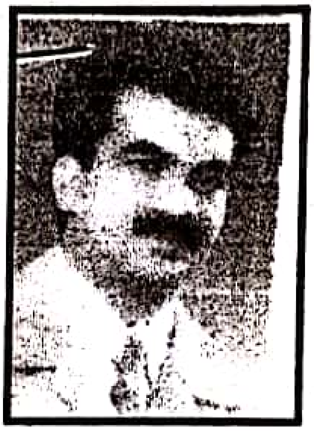

बधाई सन्देश

महोदय,

मुझे जानकर अत्यन्त हर्ष हो रहा है कि ज्ञान महाविद्यालय, आगरा रोड, अलीगढ़ अपनी वार्षिक पत्रिका "ज्ञान पुष्प" का प्रकाशन कर रहा है।

आशा करता हूँ कि यह पत्रिका छात्र-छात्राओं में सृजनात्मक क्षमता विकसित करने में मील का पत्थर साबित होगा।

इसी विश्वास के साथ।

रामेश्वर उपाध्याय (एड०)
ब्लाक प्रमुख
प्रतिनिधि
मा० श्री रामवीर उपाध्याय
ऊर्जा मंत्री – उत्तर प्रदेश शासन

Scanned by CamScanner

विवेक बंसल
सचिव
पूर्व विधायक, अलीगढ़

आवास :
"अयोध्या कुटी"
मैरिस रोड, अलीगढ़ – 202001
0571-2403302
2403476, 2400777

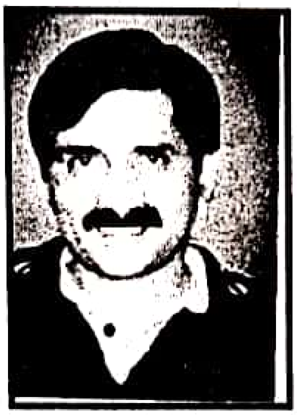

बधाई सन्देश

महोदय,

मुझे यह जानकर काफी हर्ष हुआ कि ज्ञान महाविद्यालय द्वारा "ज्ञानपुष्प" पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है। आशा है इस पत्रिका के माध्यम से छात्रों को ज्ञानवर्धक व स्वस्थ मनोरंजक पाठन सामग्री प्राप्त होगी।

मैं इस पत्रिका के उज्जवल भविष्य की कामना करता हूँ।

शुभकामनाओं सहित।

सेवा में,
डा० वाई०के० गुप्ता
सम्पादक
"ज्ञानपुष्प" पत्रिका
ज्ञान महाविद्यालय, अलीगढ़

विवेक बंसल
पूर्व विधायक

Scanned by CamScanner

CH. VIJENDRA SINGH
Member of Parliament
Aligarh (U.P.) - Lok Sabha
Member :
- Standing Committee on Home Affairs
- Committee on Estimates
- Privileges & Ethics Committee
- Animal Welfare Board
- Central Advisory Board of Archaeology (CABA)
- Court Member of Aligarh Muslim University (AMU)
- Consultative Committee on Agriculture & Consumer Affairs
- Sub-Committee on Modernisation of Prison Administration

6, Talkatora Road
New Delhi-110001
Phone : 011-23329414
6, Kishore Nagar, ITI Road, Aligarh
Phone : (0571) 2402020, 2406060
E-mail : ch.bijendra.singh@gmail.com

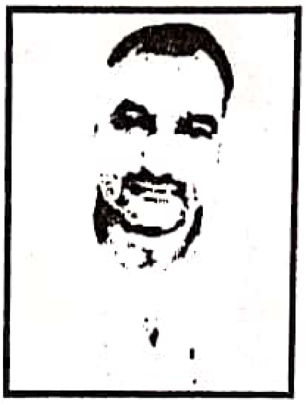

बधाई सन्देश

महोदय,

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि ज्ञान-महाविद्यालय, आगरा रोड, अलीगढ़ अपनी वार्षिक पत्रिका 'ज्ञान पुष्प' का प्रकाशन करने जा रहा है।

विद्यार्थियों में अपार क्षमताएँ निहित होती है जो कि पत्रिका के माध्यम से उदय होती है। पत्रिका समाज को एक नया आयाम देगी ऐसा मेरा विश्वास है।

मैं इस अवसर पर समस्त शिक्षकों एवं विद्यार्थियों तथा सम्पादक मण्डल के साथ-साथ प्रबन्धतन्त्र को अपनी शुभकामनाएँ देते हुए, पत्रिका की सफलता की काना करता हूँ।

चौ० बिजेन्द्र सिंह
सांसद

Scanned by CamScanner

श्रद्धाँजलि

स्व० डा० एल० सी० गौड

जन्म : 08 जनवरी, 1958

स्वर्गवास : 11 जून 2007

Scanned by CamScanner

Principal's Message

It is a matter of great pleasure to me that Gyan Mahavidyalaya is going to publish the College Magazine **"GYAN PUSHP"**. The whole team is entitled to be congratulated at this occassion.

To compile all the essays, poems and priceless views of college students about science, literature and social problems, is a very difficult job. So you are congratulated for this special work.

I wish all succss for your efforts of compilling the views of all with factfully in manner which will enhance the knowledge of all.

I again congratulate Dr. Yogesh Kumar Gupta and all the team members of Publication Department.

Dr. Puran Mal
M.Sc., Ph.D FBS

सम्पादकीय......

यह एक सुखद संयोग हे कि महा विद्यालय की अपनी वार्षिक पत्रिका 'ज्ञान पुष्प' महाविद्यालय के विकास तथा नवोत्थान की सूचक प्रतिष्ठित पत्रिका है । पत्रिका द्वारा महाविद्यालय के वर्तमान तथा पूर्व छात्रों, एवम् प्राध्यापकों तथा अन्य सम्बद्ध पक्षों की रचनात्मक अभिव्यक्ति के विविध आयामों को प्रतिनिधित्व प्रदान करते हुये इस अंक को काफी प्रभावशाली सिद्ध करने की कोशिश की गयी है ।

दुनिया की सशक्तीकरण की दौड़ में भारत भी पूरी तरह से अपने आपको सक्रिय किये हुये है । भारत में निवेश की सीमा और क्षेत्र भी विकसित हो रहे हैं । विश्व शक्ति के रूप में भारत ने एक अपनी नई पहचान बनाई' है । वर्तमान में भारत का विदेशी पूँजी भण्डार बढ़ने से एशिया के पाँच सर्वाधिक विदेशी पूँजी वाले देशों में भारत की गणना की जाने लगी है। शेयर बाजार भी जिस तेजी से बढ़ा है कि हमने 20,000 हजार के सेसेक्स को भी पार किया है । दुनिया के सर्वाधिक धनिकों की सूची में भारतीयों ने प्रथम पाँच में अपना उच्च स्थान बनाया है ।

आज के प्रतिस्पर्धा के युग में वही व्यवस्था अपने आप को आगे बढ़ा सकती है जो कार्य कुशलता और गुणवत्ता को बनाये रख सकती है। अतः इसके लिये आवश्यक है कि श्रेष्ठतम योग्यता और उचित प्रबन्धन किया जाये ताकि उच्च शिक्षा के केन्द्रों में बिना किसी भेदभाव के योग्य, परिश्रमी और लगनशील छात्रों को प्रवेश दिया जा सके ।

'ज्ञान पुष्प' का यह अंक अनेक समस्याओं के कारण विलम्ब हुआ है फिर भी सम्पादक–मंडल स्वयं को इसका दोषी मानता है । सम्पादक मंडल का प्रयास रहा है कि पत्रिका कालेज प्रबन्धन की परिकल्पना के अनरूप प्रकाशित की जायें । दिशा–निर्देशन के लिये हम लोग

Scanned by CamScanner

अध्यक्षा महोदया, सचिव महोदय एवम् प्राचार्य जी के आभारी हैं ।

पत्रिका का मूल उद्देश्य यही होता है कि छात्रों में लेखन के प्रति रूचि बढ़े। उन्हें लिखने की प्रेरणा मिले, किन्तु इस दृष्टि से न तो कभी छात्र प्रयास करते हैं और न ही उन्हें अपेक्षित मार्गदर्शन प्राप्त हो पाता है । सम्पादक मंडल का यही प्रयास रहा है कि अधिक से अधिक छात्रों की रचनाओं को प्रकाशित किया जाये परन्तु स्थानाभाव के कारण जिन छात्रों की रचनाओं का प्रकाशन नहीं हो पा रहा है, वे निराश न हों, नहीं उसे अन्यथा लें । हमारा विनम्र आग्रह है कि वे लिखने का निरन्तर प्रयास करें और समझें कि क्या और कैसे लिखा जाय? हमारा विश्वास है कि जिज्ञासा, लगन, मेहनत उन्हें एक दिन अवश्य सफल बनायेगी । पत्रिका के प्रकाशन को पूरी तरह से यथासंभव प्रस्तुत करने का प्रयास किया है । यदि यह पत्रिका तनिक भी पठनीय बन सके तो इसका श्रेय सभी सम्बद्ध पक्षों को जाता है । यदि इसमें कुछ कमियाँ रह गई हैं तो उनकी जिम्मेदारी मेरी स्वयं की है ।

अन्त में हमारे बहुत ही प्रिय प्राचार्य डा० एल०सी० गौड़ जी के अचानक हृदयगति रूक जाने से निधन हो गया । परमात्मा से प्रार्थना है कि उनकी आत्मा को शांति प्रदान करे ।

मैं सभी लेखकों के प्रति आभार व्यक्त करना अपना कर्तव्य समझता हूँ ।

डा० वाई०के० गुप्ता
प्रधान सम्पादक

★ ★ ★
★

डॉ० एल०सी० गौड़ - एक अविस्मरणीय व्यक्तित्व

श्रद्धांजलि

श्री मनोज यादव

डॉ० एल०सी० गौड़ का जन्म 8 जनवरी सन् 1958 को जनपद अलीगढ़ के नगला देवी सिंह (नगला अरसू) ग्राम में हुआ । यह गाँव अलीगढ़ से खैर जाने वाली सड़क पर गोमत चौराहा से लगभग 3 किमी० दूरी पर स्थित है ।

डॉ० एल०सी० गौड़ के पिता श्री बाबूलाल गौड़ बड़े ही धार्मिक एवं आध्यात्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति थे । उनकी चार संतान थीं जिनमें दो पुत्र व दो पुत्रियाँ हुई । डॉ० गौड़ साहब सबसे बड़ी सन्तान थे । गौड़ साहब अपने पिता के धार्मिक व आध्यात्मिक होने के कारण स्वयं भी बड़े ही आध्यात्मिक एवं धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति थे ।

गौड़ साहब का मूल्यांकन एक सत्यनिष्ठ व तत्वनिष्ठ एवं मिलनसार व्यक्ति के रूप में किया जाता रहा है । आप अध्यापन एवं प्रशासन कार्य के सन्दर्भ में भी समय के पाबन्द रहे एवं अपने कर्तव्य के प्रति गम्भीर भी । आपने कभी भी छोटे बड़ों का भेदभाव नहीं किया, अपने सहयोगियों के प्रति आपका व्यवहार सरल, सहृदय एवं मार्गदर्शक के रूप में रहा । आपने कभी भी किसी के अनिष्ठ की कामना नहीं की ।

गौड़ साहब की प्रारम्भिक शिक्षा बॉकनेर के प्राथमिक विद्यालय में हुई । आपने मिडिल की परीक्षा बॉकनेर के जूनियर हाईस्कूल से उत्तीर्ण की । तत्पश्चात् आगे की शिक्षा ग्रहण करने के लिए आप अपनी बुआ के यहाँ चले गये । वहाँ पर रहकर आपने हाईस्कूल व इण्टरमीडिएट की परीक्षा जनता इण्टर कॉलेज, जेवर से उत्तीर्ण की । आपने बी०एस–सी० व एम०एस–सी० की परीक्षा श्री वार्ष्णेय महाविद्यालय, अलीगढ़ से उत्तीर्ण की आपने एम०फिल० व पी०एच–डी० की उपाधि अलीगढ़ मुस्लिम विश्व विद्यालय अलीगढ़ से प्राप्त की ।

आपका विवाह 24 जून 1977 को गाँव– राजागढ़ी (खॉकल) मथुरा के श्री पुरूषोत्तम लाल रावत की पुत्री राज गौड़ के साथ हुआ आपके एक पुत्र हुआ ।

आप लगभग 8 वर्ष तक जैड०एच० कालेज ऑफ इंजीनियरिंग एण्ड टैक्नोलौजी ए०एम०यू० अलीगढ़ में प्रवक्ता पद पर कार्यरत

Scanned by CamScanner

रहे । तत्पश्चात आपने आदर्श इंस्ट्टीयूट ऑफ टैक्नो– मैनेजमेण्ट अलीगढ़ के निदेशक पद को लगभग 13 साल तक सुशोभित किया । उसके उपरान्त आपने ज्ञान महाविद्यालय अलीगढ़ में प्राचार्य पद को सुशोभित किया ।

आप अपने जीवन काल में समाज में शिक्षा के प्रचार प्रसार हेतु आप इंडियन काउन्सिंल ऑफ मैनेजमेन्ट एक्जीक्यूटिवस मुम्बई, आदर्श एजूकेशन सोसाइटी, अलीगढ़, भारत विकास परिषद्, अलीगढ़ आदि सामाजिक संस्थाओं से जुड़े रहे । आपको सन् 1997 में समाज श्री अवार्ड से सम्मानित किया गया ।

आपने अपने कार्यकाल में महाविद्यालय के विकास में अथक परिश्रम किया जो कि अविस्मणीय रहेगा ।

11 जून 2007 को आपका देहान्त देहरादून में हो गया । जो कि शिक्षा जगत के लिए अपूर्णनीय क्षति है ।

उनकी आकांक्षा थी कि महाविद्यालय में किसी तरह से परास्नातक कक्षायें (पी०जी०) प्रारम्भ हों लेकिन दुर्भाग्य से उनके सेवाकाल में ऐसा नहीं हो सका । आशा है कि भविष्य में हम उनकी आकांक्षा को पूर्ण करने में सफल होंगे ।

इस बीच की अनेक यादें आज मन में घूम रही हैं । गौड़ सहाब के साथ शहर व शहर के बाहर अनेक यात्रायें करनी पड़ी और उस समय जो आत्मयीयता, स्नेह व सम्मान अधिकारी हाने के बावजूद मुझे दिया उसको विस्मृत करना सम्भव नहीं है । आज वह हमारे मध्य नहीं हैं । अतः हम परमात्मा से केवल यही प्रार्थना कर सकते हैं कि ईश्वर उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करे ।

गौड़ साहब ने महाविद्यालय में 2001 में सेवा प्रारम्भ की । गौड़ साहब केवल ये विभागीय अधिकारी ही नहीं रहे बल्कि मुझे अपना पारिवारिक सदस्य मानकर हमेशा सहयोग प्रदान करते रहे। मेरी और उनकी उम्र में काफी अन्तर था फिर भी उन्होंने मुझे जो सम्मान दिया वह उनके जाने पर एक ऐसी कसक बनकर चुभती है जिसकी पीड़ा कभी समाप्त नहीं हो सकती ।

★ ★ ★ ★

Scanned by CamScanner

आखिर किस ओर जा रहा है हमारा समाज

श्रीमती मंजूलता गोला, 13-A, रेलवे कालोनी, हाथरस जंक्शन

टेलीविजन, रेडियो, समाचार पत्रों के द्वारा प्रत्येक दिन किसी न किसी हृदय विदारक हादसे से दो चार होना पड़ता है । मन क्षोभ, दुखं व घृणा से भर उठता है कभी दिल्ली में चलती बस में युवती से बलात्कार के बाद उसे उठाकर सड़क पर फेंक देना तो कभी स्वतन्त्रता दिवस के अवसर पर महिला सरपंच द्वारा राष्ट्रीय ध्वज फहराये जाने के कारण उसका अपमान करना, संरेआम बिहार प्रांत में महिलाओं को निर्वसन करना व उनको डायन बताकर प्रताड़ित कर हत्या करना तो आम बात ही हो गई हैं । (हद तो तब हो गई जब एक ग्रामीण महिला द्वारा अपना खेत जोते जाने के कारण) महिलाओं ने ही इसे अपराध मानकर उसके बालों को बुरी तरह मूँड डाला यहाँ तक कि उसके कान भी काटने की कोशिश की, ये सारी घटनाएँ आखिर हमारे समाज का कौन सा रूप पेश करती हैं । हम अपनी सभ्यता, संस्कृति नैतिकता चाल, चलन सभी कुछ तो भूलते जा रहे हैं । समाज किसी एक व्यक्ति से तो नहीं बना है । महिला, पुरुष, बूढ़े, बच्चे, वैज्ञानिक, डाक्टर, इन्जीनियर, शिक्षक, नेता, अभिनेता चाहे जो भी हों वे सब इस समाज की ही इकाई है, लेकिन इसके साथ–साथ हमें ये नहीं भूलना चाहिये कि सब कुछ होने से पहले एक अच्छा इन्सान होना बहुत ही आवश्यक है । और एक ऐसे समाज की संरचना भी, जहाँ मनुष्य का मनुष्य के द्वारा आदर व सत्कार किया जाता है । किन्तु ऐसा नहीं हो रहा है, और जो हो रहा है उसे देखकर सुनकर हमारे सिर शर्म से झुके हुये हैं । एक सामाजिक प्राणी होने के नाते इस समाज के प्रति हम सभी लोगों की क्या कोई जबाब देही नहीं होनी चाहिये, क्या हमारा ये नैतिक कर्त्तव्य नहीं होना चाहिये कि जिस चारित्रिक अवमूल्यन व अपराधिकरण की आग में हमारा समाज जल रहा है उसे वक्त रहते जलने से रोका जा सके उस आग को बुझाने का प्रयत्न करना चाहिये वरना एक दिन ये देश ये राष्ट्र ही नहीं बल्कि पूरी मानव जाति ही जलकर भस्म हो जायेगी । नारी जाति का ऐसा अपमान आखिर किस लिये ?

लेकिन हम मूक और बधिर बने हुये सिर्फ अपने अधिकारों की बात करते हैं और कर्त्तव्यों से आँख चुराते आये हैं पर हमें ये मालूम होना चाहिये कि कर्त्तव्य और अधिकार अलग–अलग न होकर एक दूसरे के पूरक हैं । जब हम अपने कर्त्तव्यों को समझ लेंगे तो

Scanned by CamScanner

अधिकार स्वतः ही प्राप्त हो जायेंगे ।

खासतौर से हमारा युवा वर्ग सामाजिक विकृतियों के भँवर जाल में फँसता ही चला जा रहा है उन्होंने अपना एक अलग ही कल्चर विकसित कर लिया है इस लाइफ स्टाइल को एक अलग नाम भी दे डाला है 'यप्पी कल्चर' जहाँ तक हमारी समझ में आया है इनका ये 'यप्पी कल्चर' 'हिप्पी कल्चर' से प्रभावित लगता है । अब वे न जल्दी उठना चाहते हैं और न रात को सुख पूर्वक नींद लेना चाहते हैं विशेष तौर से नव धनाढ्य वर्ग का बुरा हाल है माता पिता की खून पसीने की कमाई से बाहर जाकर ऐश मौज करते हैं इसमें लड़कियाँ भी बराबर शामिल होती है । पढ़ाई के नाम पर दिन में देर तक सोना व देर रात तक क्लब व पार्टियों में शराब व शबाब में मशगूल रहना इसी के चलते आगरा के मानसिक अस्पताल में पाँच युवा रोगी बनकर पहुँच चुके हैं । इन युवाओं का फंडा 'टोटल मस्ती' करने का टेंशन लेने का नहीं देने का बन चुका है । और यहीं उनसे चूक हो गई क्योंकि मस्ती की दुनियाँ से बाहर आने के बाद 'यप्पी कल्चर' के फंडे का डंडा तो उन्हीं पर चलना है और उसी का परिणाम है कि उन्हें मानसिक रोग सौगात के रूप में मिल गया । क्योंकि जब तक वे होश में आते हैं तब तक बहुत कुछ खो चुके होते हैं यानि अब उन्हें पढ़ाई, लिखाई व फ्यूचर के डर का भूत सताने लगता है अत्यधिक मानसिक दबाव के चलते उनका मानसिक सन्तुलन ही बिगड़ जाता है और परिणाम स्वरूप वे अपने आपको बर्बादी के रास्ते पर ले जाते हैं । उसी के चलते उनका चारित्रिक हनन भी हो जाता है । हमारा युवा वर्ग ये क्यों नहीं समझ पा रहा है कि हमारे देश की परम्परा किसी का अपमान करने की तो बिल्कुल भी अनुमति नहीं देती । ये देश तो ध्रुव प्रहलाद का है राम और रहीम का है विप्र सुदामा का है हुमायुँ और कर्मवती का है द्रौपदी की लाज बचाने आये कृष्ण का है । दुर्योधन का तो कभी नहीं ।

फिर इस सामाजिक विद्रूपता ने कब और कैसे जन्म ले लिया कि घृणित से घृणित कार्य होते चले जा रहे लेकिन हमारा जमीर हमें धिक्कारता नहीं, हमारा सोया स्वाभिमान जागता नहीं । हमारी आचार संहिता हमारे नीति शास्त्र सदियों से चली आ रही कर्त्तव्य परक भावना ही तो जो हमें विश्व का सिर मौर बनाये हुये है । फिर ऐसी हरकत क्यों कर हो जाती है कि पूरे राष्ट्र को लज्जित होना पड़े नैतिकता का पाठ पढ़ाने वाली हमारी शिक्षा का क्या हुआ । वैसे इतना तय है कि जब कभी भी ऐसे शर्मनाक हादसे हुये हैं, तो चाहे दबी जुवान से ही सही ये

Scanned by CamScanner

तो जरूर निकलता है कि ऐसा नहीं होना चाहिये आपस में ही हम एक दूसरे से मुँह चुराने लगते हैं । इसका अर्थ यह हुआ कि चाहे आड़ लेकर ही सही हम अपने दोषों को मानते तो हैं । फिर दोषों को दूर करने की कोशिश क्यों नहीं करते? क्या कोई ऐसी समस्या हो सकती है जिसका समाधान ही न हो, ऐसा कदापि नहीं हो सकता, दरअसल हमें तना काटने की आदत पड़ गई है समस्याओं की जड़ में जाने की कभी कोशिश ही नहीं करते हैं जहाँ से कि विकृत मानसिकता जन्म लेती है । परिणाम स्वरूप समस्या ज्यों की त्यों बनी रहती है ।

आज आवश्यकता है आत्म चिंतन करने की उन परिस्थितियों पर दृष्टिपात करने की जिसके कारण हमारा युवा वर्ग भटक गया है ।

१. सर्वप्रथम तो वर्तमान में हमारी सामाजिक व्यवस्था ऐसी है कि हम सही कार्य के लिये उत्साहवर्धन व गलत कार्य के लिये खुलकर भर्त्सना करने का साहस ही नहीं जुटा पाते, कानून व नियम चाहे जितने बन जायें वे सब जब तक बेमाने हैं जब तक कि हम स्वयं अपने अन्दर इच्छा शक्ति पैदा नहीं कर लेते ।

२. आज के युग में पुरुष व नारी में बराबरी का अधिकार पाने की अज्ञानतावश जो होड़ लगी है । ऐसा नहीं कि इसके लिये अकेला पुरुष ही जिम्मेदार है नारी भी बराबर की दोषी है । क्योंकि नारी की परस्पर ईर्ष्या ने भी उसे बर्बादी के कगार पर पहुँचाया है दूसरी ओर नारी को पुरुष से कम तर समझना भी हमारे समाज की संरचना में सामंतवाद हावी रहा है जिसमें मात्र युद्ध सामर्थ्य के कारण पुरुष स्त्री से प्रधान हो गया, पुरुष के दैहिक बल के आगे स्त्री के सारे गुण नगण्य हो गये किन्तु वह आंकलन करने में यह भूल बैठा कि अगर स्त्री को अगर पुरुष के समान दैहिक बल मिल गया होता तो आज स्त्री पुरुष का जो कुछ सामंजस्य बना हुआ है व कभी न होता और पुरुष नारी बलिदान, ममत्व व प्रेम की भावना से वंचित रह जाता ।

३. बालक जन्म से ऐसी विकृत मानसिकता लेकर पैदा नहीं होता वरन कुछ सामाजिक व मानसिक परिस्थितियाँ उसे ऐसा बना देती हैं क्योंकि बाल मन इतना संवेदनशील होता है कि वह जो अपने आस पास देखता है सुनता है उसे पूरी तरह आत्मसात करने की कोशिश करता है ।

४. ऐसे बच्चों का अपराधीकरण अधिकांशतया होता है जिनको अपने परिवार में मन माफिक वातावरण नहीं मिलता परिवार के आपसी झगड़ों से उनकी मानसिकता प्रभावित

Scanned by CamScanner

होती है । जिन परिवारों में माता–पिता दोनों का व्यवहार तानाशाहों जैसा होता हे ऐसे बच्चे उद्दण्ड हो जाते हैं क्योंकि वे अपने मन को भावना को मारे डर के माता पिता से शेयर नहीं कर पाते और मन ही मन घुटते रहते हैं ये प्रायः घर से दूर भागने की सोचते हैं मौका मिलते ही वे भाग भी जाते हैं और गलत लोगों के चंगुल में फँस कर खुद को बर्बाद कर लेते हैं ।

५. गरीबी बेरोजगारी अशिक्षा तो मूल–भूत कारक है ही साथ ही ऐशो आराम के अनगिनत साधनों ने भी इनको अपराधी बनाने में पूरा योगदान दिया है । दूसरी उन्हें प्राप्त करने के लिये वह किसी हद तक जाने से नहीं चूकता फिर चाहे वह चरित्र हनन ही क्यों न हो जगह–जगह देह व्यापार में लिप्त युवतियों का पकड़ा जाना इसका ज्वलंत उदाहरण है ।

६. व्यक्ति इतना धन लोलुप हो गया है कि उसकी जुगाड़ में उसे अपने परिवार व बच्चों के लिये समय ही नहीं मिलता उनको वह भूल ही जाता है और जब तक उसे ध्यान भी नहीं आता तब तक सर्वस्व लुट चुका होता है ।

कहने का तात्पर्य यह है कि हमें भेदभावपूर्ण मानसिकता को बदलना होगा, हम चाहें कितने भी प्रगतिशील क्यों न बन जायें लेकिन जब तक अपने जीवन में नैतिक व चरित्रगत मूल्यों का समावेश नहीं करेंगे प्रेम व भाईचारे से नहीं रहेंगे हम उन्नति नहीं कर सकते आवश्यकता इस बात की है कि हम अपनी जिम्मेदारियों से नजरें चुराने की जगह परिस्थितियों का डटकर मुकाबला करें । एक दूसरे के साथ सामजस्य बैठाते हुये ईमानदारी से समस्याओं का समाधान करें, हमें ये नहीं भूलना चाहियें कि मनुष्य संसार में सामाजिक प्राणी होने के साथ–साथ सबसे शक्तिशाली भी है उसे अपनी शक्ति को देश की गरीब, अशिक्षित, बेसहारा जनता का जीवन संवारने में लगाना चाहिये, उन्हें समझना चाहिये कि बिना जड़ के, बिना उचित खाद पानी के कोई पौधा पेड़ नहीं बन सकता ठीक उसी तरह हमारी भारतीय संस्कृति युवाओं को दिशा देने का काम करती है हमें अपनी जड़ों की ओर लौटना होगा और छोड़ना होगा 'यप्पी कल्चर' को तभी मानव जाति और इस देश का कल्याण होगा । हमें परस्पर चाहे वह स्त्री हो या पुरुष एक दूसरे का सम्मान करना सीखना होगा, तभी सही मायनों में हम इस देश और मानव जाति के विकास में अपना योगदान दे पायेंगे ।

★ ★ ★
★

Scanned by CamScanner

प्रदूषण

डा० पूरनमल, प्राचार्य

प्रदूषण शब्द से सभी परिचित हैं । प्रदूषण से तात्पर्य है कि हमारे वातावरण का दोषपूर्ण होना । वैज्ञानिकों के अनुसार प्रदूषण मुख्यतः जल, मृदा, वायु शोर, रेडियाधर्मी प्रदूषण आदि प्रकार का होता है । अगर हम आज के परिवेश में चिन्तन करें तो हमारे सामने जो प्रदूषण उभर कर आता है वह है मानसिक सामाजिक व वातावरणीय प्रदूषण ।

ये तीनों प्रकार के प्रदूषण किसी न किसी रूप में एक दूसरे से सम्बन्धित है । जैसे हम मानसिक प्रदूषण को ही लेते हैं तो हम देखते हैं कि आज मनुष्य मानसिक रूप से ऐसा प्रदूषित हो चुका है कि वह अपने निजी हितों के लिए परिवार, समाज व देश को भी बेच सकता है । आज मानव की सोच इतनी गिर चुकी है कि वह केवल अपना ही स्वार्थ देखता है, लेकिन वह यह भूल जाता है, कि जिसमें वह अपना हित खोज रहा है वह एक दिन उसके लिए ही नहीं बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए भी अहितकारी होगा। आज मानव की मानसिकता इतनी विकृत हो चुकी है वह अपने घरों, अस्पतालों, नर्सिंग होमों, फैक्ट्रियों से उत्सर्जित रसायनिक अपशिष्टों जिसमें खतरनाक टैम्पर्ड पोटाश जैसा खतरनाक जहर भी पाया जाता है, को बोरिंग करके जमीन के अन्दर सीधे-सीधे ग्राउण्ड वाटर में मिला रहा है। आप स्वतः ही अन्दाजा लगा सकते हैं इसकी विभीषिका का । जो जल प्राणदायी द्रव्य है वह आने वाले समय में कितना प्राणघातक हो जायेगा।

मानसिक प्रदूषण का ही परिणाम है जो आज हम समाज में व्याप्त बुराईयों को देख रहे हैं । आज मानव, मानव को मार रहा है निजी हितों के लिए । छोटी-छोटी बातों पर कत्ल करना चोरी, डकैती, खाद्य मिलावट यहाँ तक रेप जैसे घिनौने कृत्य सब विकृत मानसिकता के ही प्रतिफल हैं । हमें समाचार पत्रों में पढ़ने को मिलता है २ वर्ष की बच्ची के साथ कुकृत्य, एक गज जमीन के लिए कत्ल, यहाँ तक कि एक गन्ना तोड़ने पर कत्ल कर दिया जाता है।

यह मानसिक प्रदूषण अब इतना बढ़ चुका है कि इसकी जड़ें हमारे समाज में इतनी गहराई तक जम चुकी हैं कि उनका नष्ट करना कितना मुश्किल है, ये तो आने वाला वक्त ही बतायेगा । ये दूषित मानसिकता का ही कारण है जिसके चलते हमारा समाज इतना गिर चुका है कि भाई-भाई का पुत्र-माता पिता को कत्ल कर रहा है । हमारे आपसी पवित्र रिश्तों का कोई अस्तित्व नहीं बचा है । दूषित मानसिकता ने उन सभी पवित्र रिश्तों को खत्म कर दिया है ।

आज समाज में जो बुराईयाँ फैली हैं

Scanned by CamScanner

उनका मुख्य कारण है मनुष्य का खान पान। जैसा कि हमारे बुजुर्गों ने कहा है कि जैसा खाओगे अन्न वैसा रहेगा मन। आज समाज में तामसी प्रदूषित भोजन का प्रचलन बढ़ा है जिससे मनुष्य की मानसिकता भी प्रदूषित हो गयी है। पहले लोग खुले विचारों वाले (Broad minded) थे जो छोटी–२ बातों पर ध्यान नहीं देते थे लेकिन आज छोटी–२ बातों को तूल दे दिया जाता है और वह एक इतना विकराल रूप ले लेती है कि बाद में मनुष्य को स्वयं पछताना पड़ता है।

आज मनुष्य धन अर्जित करने के लिए विभिन्न प्रकार के हथकन्डे अपना रहा है जैसे खाद्य पदार्थों में मिलावट, सिन्थैटिक दूध और तो और सब्जियों में इन्जैक्शन का प्रयोग कर रहा है। अतः जिस प्रकार मनुष्य की धन लोलुपता बढ़ी है उसी प्रकार उसकी मानसिकता क्षीण, निकृष्ट व तुच्छ हुई है। जिस प्रकार इन्जैक्शन लगाने से लौकी का आकार बढ़ता है उसी अनुपात में मनुष्य की मानसिकता सिकुड़ गयी है।

हमारे देश का राजनैतिक क्षेत्र भी इस प्रदूषित मानसिकता से अछूता नहीं रहा है और राजनेताओं की मानसिकता देश हित में न होकर अपने स्वार्थों तक सिमट कर रह गई है। आप सभी ने कछुए व खरगोश की कहावत तो सुनी होगी। कछुआ निरन्तर लगनपूर्वक अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए दौड़ता रहा और दौड़ जीत गया था।

उसी खरगोश के नाती व कछुये के नाती में एक बार फिर दौड़ के लिए बहस होती है तो कछुआ कहता है कि खरगोश तो पहले ही दौड़ में हार चुके हैं, लेकिन खरगोश जवाब देता है कि हमारे पुरखे बेबकूफ थे जो तुम्हारे जैसे तुच्छ प्राणी से हार गये। फिर क्या था दौड़ का समय निर्धारित कर दिया गया। खरगोश सीधा खेल मन्त्री के पास पहुँचा और तय हो गया मन्त्री जी से दौड़ जिताने के लिए सुविधा शुल्क। दौड़ शुरू हुई, खरगोश दौड़कर आगे निकल गया और एक पेड़ के नीचे जाकर आराम करने लगा। पीछे से कछुआ पहुँचा और खरगोश को जगाया और कहा ऐसे ही तुम्हारे पुरखे हारे थे उठो दौड़ो। लेकिन क्या था खरगोश वहीं सोता रहा और कछुआ आगे निकल गया। लेकिन वही हुआ जो तय था यानी खरगोश को दौड़ जितानी थी। यह क्या, कछुआ देखता है कि खरगोश तो वहाँ पहले ही पहुँच चुका था जबकि कछुए ने उसे सोते हुए छोड़ा था। कछुए को हरा दिया गया क्योंकि उस खरगोश का जुड़वा भाई वहाँ पहले ही मौजूद था। इस प्रकार आज कितने ही ऐसे सुस्त, आलसी खरगोश दौड़ जीत रहे हैं और कर्मठ, लगनशील कितने कछुए दौड़ हार रहे हैं।

आप स्वयं ही सोच सकते हैं कि आज हम मानसिक, सामाजिक रूप से, कितने प्रदूषित हो चुके हैं यदि इस पर अंकुश नहीं लगा तो हमारी आने वाली पीढ़ियों का अस्तित्व भी खतरे में पड़ जायेगा। हमें अपनी आने वाली पीढ़ियों को बचाना है तो मनुष्य को अपनी सोच, अपने विचारों को बदलना होगा जिससे समाज का वातावरण दूषित न हो। फैसला आपके हाथ है।

Scanned by CamScanner

स्पेक्ट्रमदर्शी विधि द्वारा खोजे गये रासायनिक तत्व

डा० सुरेन्द्र सिंह यादव, प्रवक्ता रसायन विभाग

19वीं शताब्दी में शायद ही ऐसा कोई दशक हुआ हो, जब रासायनिक तत्वों की सूची में नये तत्व शामिल न किये गये हों । कुछ दशकों में खोजे गये तत्वों की संख्या काफी ज्यादा थी । पिछली शताब्दी का छठा दशक जरूर अपवाद है । जब वैज्ञानिकों ने एक भी तत्व नहीं खोजा । इस बात पर आश्चर्य नहीं होना चाहिए यह स्वभाविक था । उस वक्त तक Analytical Chemistry अपनी पूरी ताकत दिखा चुकी थी । पिछली शताब्दी के मध्य तक रासायनिक Analytical Method ने उन सभी तत्वों की खोज संभव कर दी थी । जिनकी खोज में और किसी विशेष विधि की जरूरत महसूस नहीं हुई थी । खोजे गये तत्व या तो प्रकृति में काफी विस्तृत थे या तत्वों का सौभाग्यवश पता लग गया था । उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य तक लगभग 60 तत्व खोजे जा चुके थे ।

सन् 1859-1860 में दो जर्मन वैज्ञानिकों Bunson तथा Kehrgoff ने एक नयी विधि विकसित की जिसने नये तत्वों की खोजों के इतिहास में आया सन्नाटा खत्म कर दिया । यह थी– स्पेक्ट्रमदर्शी विधि । इसके तुरंत बाद नये तत्वों की खोजों की खबरें सुनायी देने लगी और हर बार नये तत्व की खोज का संकेत स्पेक्ट्रम रेखा देती थी । स्पेक्ट्रमदर्शी विधि से चार नये रासायनिक तत्व (सीजियम (Cs), रुबिडियम (Rb), थैलियम (Tl) तथा इंडियम (In)) खोजे गये ।

सीजियम (Cs)

सीजियम ऐसा पहला रासायनिक तत्व साबित हुआ जिसकी पृथ्वी पर उपस्थिति की बात स्पेक्ट्रमदर्शी वैश्लेषिक विधि (Analytical Method) के आधार पर सिद्ध की गयी । परंतु इस विरल Alkali Metal की किस्मत कुछ और भी हो सकती थी । 1846 में जब खनिजविद् Brethaupt, Alba (ब्रेथाउण्ट एल्वा) द्वीप से लाये गये कुछ खनिजों (Minerals) तथा अयस्कों (Ores) का अध्ययन कर रहे थे, उन्हें रंगीन (Coloured) क्वार्टजाइट का एक नमूना मिला जिसका नाम उन्होंने पालुक्स या पालीसाइट रखा । पालुक्स का नमूना फ्रेबर्ग की खनिज अकादमी (Academy) के एक प्रोफेसर, जर्मन Chemist Platner (प्लैटर) के हाथ लग गया उन्हें जो पालुक्स का नमूना मिला था वह केवल एक Analysis के लिए काफी था । उस खनिज से कोई नयी चीज नहीं मिली, परन्तु

उन्हें यह देखकर बहुत आश्चर्य हुआ कि खनिज के Components (घटकों) का योग केवल 92.75% निकल रहा था । बाकी 7.25% का क्या हुआ ? Platner इस प्रश्न का उत्तर नहीं ढूंढ सके, क्योंकि वे सारा पालुक्स खर्च कर चुके थे । फिर भी उन्होंने इस बात को स्थापित किया कि उन दिनों ज्ञात सभी Silicates में से पालुक्स में ही क्षारों की सबसे अधिक मात्रा उपस्थिति थी । इसके दौरान Platner को Cs की खोज करने का सुअवसर इसलिए नहीं मिला क्योंकि वह Sodium तथा Potassium की अधिक मात्रा के पीछे छिप गया था ।

1860 में Bunsen तथा Kehrgoff ने Spectrophotometer Method द्वारा विभिन्न खनिज जलों के रासायनिक Component ratio (अवयव अनुपात) का अध्ययन किया । एक बार वे खनिज के एक जल का अध्ययन कर रहे थे । इस खनिज जल, Ca (Calsium), Sr (Strontium), Mg (Magnesium) तथा Li (Lithium) पृथक करने के बाद वैज्ञानिकों ने जब Vapourised solution (वाष्पित विलयन) की एक बूँद का स्पेक्ट्रमदर्शी अध्ययन किया, तो उन्हें Spectrum में दो स्पष्ट नीली (Blue) रेखाऐं दिखाई दी । इनमें से एक रेखा स्थिति Strontium रेखा से मिलती थी । इस प्रयोग से दोनों वैज्ञानिक इस निष्कर्ष पंर पहुँचे कि यह किसी अज्ञात पदार्थ (Unknown substance) की रेखायें थी क्योंकि ऐसी रेखाओं वाला कोई पदार्थ उस समय ज्ञात नहीं था । उनके विचारानुसार यह अज्ञात पदार्थ Alkali metals (क्षारीय धातुओं) के ग्रुप के साथ सम्बंधित था । उन्होंने इसका नाम सीजियम (Cs) रखने का प्रस्ताव किया । पुराने जमाने में यह शब्द आसमान के नीले रंग के लिए इस्तेमाल किया जाता था । Caesium के अतिसुन्दर नीले वाष्प के आधार पर वैज्ञानिकों ने यह सिद्ध कर दिया कि Sodium, Lithium तथा Strontium के मिश्रण में इस पदार्थ की 1/1000000 mg मात्रा उपस्थिति होती है ।

11 April 1860 को Bunsen ने अपने सहयोगी Rosko को एक पत्र लिखा और एक नई Metal के बारे में सूचना दी । 10 May को Bunsen ने Berlin Science Academy की बैठक में Cs (सीजियम) की खोज की Report प्रस्तुत की । 6 महीने बाद Bunsen Pure Cs (सीजियम) Chloroplatinate (क्लोरोप्लैटिनेट) की 50 gm मात्रा प्राप्त कर चुके थे । इतनी मात्रा प्राप्त करने के लिए 300 टन खनिज जल (Mineral Water) की जरूरत पड़ी थी तथा 1 Kg Lithium Chlocide (LiCl) Slag (धातुमल) के रूप में प्राप्त हुआ था । इन आंकड़ों से स्पष्ट है कि खनिज जलों में सीजियम की मात्रा कितनी तुच्छ (कम) थी ।

चार साल बाद Italian विश्लेषक Pizani ने पालुक्स का अध्ययन किया, जिसका कुछ साल पहले Platner अध्ययन कर चुके थे । Pizani की किस्मत अच्छी निकली । उन्होंने खनिज से Caesium ढूंढ निकाला और यह दिखा दिया कि जर्मन वैज्ञानिक Platner ने भावी सीजियम के

Scanned by CamScanner

सल्फेट को भ्रमवश सोडियम तथा पोटेशियम के सल्फेटों का मिश्रण समझ लिया था । परन्तु Metallic Caesium अभी भी प्राप्त नहीं हो सका है । केवल 1882 में German Chemist Zetterberg ने Cyanides (सायनाइडों) के मिश्रण (CsCN तथा $Ba(CN)_2$) के Electrolysis (वैद्युत अपघटन) से शुद्ध सीजियम धातु प्राप्त की । रूस में उन्हीं दिनों स्वतंत्र रूप से Bekatov (बेकेतोव) ने सीजियम एल्यूमिनेट ($CsAlO_2$) को Hydrogen के प्रवाह में Magnesium (मैग्नीशियम) द्वारा अपचयित करके सीजियम प्राप्त किया ।

Rubidium, Rb

दूसरे "स्पेक्ट्रमदर्शी तत्व" की खोज एक खनिज Lapidolyte के अध्ययन के साथ सम्बंधित है । 18वीं शताब्दी के अन्त में क्लाप्रोत (Claprote) ने पहली बार इस खनिज का रासायनिक विश्लेषण किया । परन्तु यह अनुभवी विश्लेषक इसमें क्षारों को नहीं ढूंढ पाया । अपने Results पर शक होने के कारण उन्होंने प्रयोग दोहराने का फैसला किया और इस बार (1797) Lapidolyte में 54.5% Silicon oxide, 38.25% Aluminium oxide, 4% Potassium oxide, 0.75% Magnesium oxide निम्न अवयन (Component) प्राप्त किये । बाकी 2.5% कहाँ गया? Claprote ने इसे खनिज में उपस्थित जल की हानि बताया । Chemist ने सभी बढ़िया तरीके अपनाये फिर भी दो महत्वपूर्ण अवयवों का पता लगाने में असफल रहे । यह दो अवयव : लीथियम (Li) (उस वक्त तक इसकी खोज नहीं हुई थी) तथा Fluorine (F_2) थे ।

1861 के शुरुआत् में सैक्सन में मिले इस खनिज का एक नमूना Bunsen तथा Kehrgoff के हाथ लग गया । वैज्ञानिकों ने इसमें से क्षारीय अवयव अलग कर दिये तथा Potassium को क्लोरोप्लैटिनेट के रूप में अवक्षेपित कर दिया । अच्छी तरह से धोने के बाद इस ppt (अवक्षेप) का Spectra लिया गया । 23 Feb., 1861 के दिन Berlin Science Academy की सभा में खोजकर्ता ने Lapidolyte में एक नयी Alkali Metal की उपस्थित की घोषणा की इन वैज्ञानिकों ने इस सभा में कहा कि– "नयी क्षारीय धातु की Spectrum line अति सुन्दर गहरे लाल रंग की होने के कारण हमने इस धातु का नाम Rubidium तथा इसका सूत्र 'Rb' रखने का फैसला किया है । यह शब्द हमने Lattin word 'Rubidus' से लिया है जिसका अर्थ **"गहरा लाल रंग"** होता है । इसके बाद Bunsen तथा Kehrgoff ने उन खनिज जलों में Rubidium उपस्थित पाया जिनमें एक साल पहले Cs पाया गया था । Rb की मात्रा Cs से कुछ ज्यादा निकली । Metallic Rubidium Bunsen द्वारा 1863 में प्राप्त किया गया ।

Scanned by CamScanner

थौलियम

यह तीसर तत्व था जिसकी पृथ्वी के खनिजों में उपस्थित Spectrum Method द्वारा सिद्ध की गयी । इसके कुछ गुण क्षारीय धातुओं के समान निकले जिसके कारण कुछ वैज्ञानिक इसे स्वतंत्र रासायनिक तत्व न मानकर कुछ क्षारीय धातुओं, मुख्यतः अज्ञात रुबीडियम, तथा सीजियम का मिश्रण समझ रहे थे । इस गलतफहमी को दूर करने के लिए समय चाहिए था । जिस वक्त Bunsen तथा Kehrgoff अपने द्वारा खोजे गये तत्वों में व्यस्त थे, एक अंग्रेज Chemist तथा Physist (भौतिकविद्) Crux ने स्पेक्ट्रमदर्शी Analytic Method में दिलचस्पी दिखायी । उस वक्त विज्ञान जगत क्रुक्स को मुख्यतः Chemical News जर्नल के सम्पादक तथा प्रकाशक के रूप में जानता था । क्रुक्स ने थैलियम की खोज की शुरुआत किसी विशेष विधि से नहीं की । 1850 में उन्हें तिल्केरोडे प्लांट (जर्मनी) से सल्फ्यूरिक अम्ल (H_2SO_4) के उत्पादन के बाद Lead Chambers में 10 पाउंड Slag मिला था । वैज्ञानिक ने इस Slag से Selenium पृथक कर दिया। उन्हें Selinocyanide (सेलीनो सायनाइड) नामक यौगिक के अध्ययन के लिए इस तत्व की जरूरत थी (तथा क्रुक्स का पहला प्रकाशित लेख इसी विषय पर था) तत्पश्चात् Selinium को शुद्ध किया । इसके बाद भी पदार्थ की कुछ मात्रा बची रही गयी तथा यह सोचना स्वभाविक था कि उसमें Tellurium उपस्थित है क्योंकि Tellurium रासायनिक गुणों की दृष्टि से Selenium का सीधा सादृश रूप है । परन्तु क्रुक्स की काफी कोशिशों के बावजूद Tellurium प्राप्त नहीं हुआ । उन्होंने प्रयोग बंद कर दिये । संयोग की बात थी कि उन्होंने Slag संभाल कर रख दिया । उन्हें अब विश्वास था कि इस Slag में Thallium छिपा है ।

सीजियम तथा रुबीडियम की खोज से क्रुक्स बहुत प्रभावित हुए । उन्होंने एक स्पेक्ट्रमदर्शी विधि विश्लेषण (Analysis) करने के लिए अपनायी उनके अध्ययन का विषय 10 साल से संभालकर रखा Sulphuric Acid का Slag था । Cruxslag को बर्नर की ज्वाला के पास लाये, परन्तु उन्हें निराशा हाथ लगी : Spectrum में Tellurium रेखा के कोई चिन्ह दिखाई नहीं दिये । Selenium रेखायें प्रकट हुई, परन्तु शीघ्र ही फीकी पड़ गयी । उनकी जगह एक हरी (Green) रेखा नजर आने लगी जिसे Crux ने पहले कभी नहीं देखा था । यह रेखा Slag से नये रासायनिक तत्व की खोज का इशारा कर रही थी । उन्होंने इसका नाम Thallium रखा । इसके लिए उन्होंने यूनानी भाषा का शब्द "Thalos" लिया जिसका अर्थ होता है– "एक नयी हरी शाखा" ।

Crux ने Journal Chemical news के 30 March 1861 के अंक में इस खोज के बारे में पहला लेख प्रकाशित किया जिसका शीर्षक था– "एक नये तत्व की उपस्थिति, संभवतः सल्फर

Scanned by CamScanner

समूह के" । यहाँ लेखक से गलती हो गयी क्योंकि सर्वविदित है कि Thalium Sulfur तथा इसके समरूप के साथ किसी तरह का संबंध नहीं रखता है । एक साल बाद Crux ने अपनी गलती मान ली और नये लेख का शीर्षक था– "थैलियम नया धात्विक तत्व" । इस लेख में सल्फर की कोई बात नहीं कही गयी । थैलियम की खोज का यह किस्सा है यहाँ खोज का अर्थ है कि थैलियम की एक नयी विधि द्वारा पुष्टि होना परन्तु Crux थैलियम का Spectrum देखने के बाद न तो थैलियम प्राप्त कर सके और न ही इसके यौगिक । यह काम फ्रेंच Chemist लामी ने किया जिसके कारण अक्सर उन्हें थैलियम का खोजी बताया जाता है ।

लगभग एक साल बाद 23 जून 1862 को लामी ने Paris Science Academy को Metallic Thalium का एक नमूना भेंट किया जिसमा वजन 14 ग्राम था । क्रुक्स भी Metallic Thalium प्राप्त करने में सफल रहे, परन्तु केवल Powder के रूप में । लामी ने बताया कि Crux का नमूना Thalium नहीं बल्कि Thalium Sulphide (सल्फाइड) था । इस बात पर विवाद खड़ा हो गया । Crux ने कहा कि उन्होंने 1862 की 01 May से पहले Metallic Powder प्राप्त कर लिया था, परन्तु उसकी उड़नशीलता (Vapourization) के कारण वे उसे सिल्ली में परिवर्तित करने से डर रहे थे । इस झगड़े को मिटाने के लिए Paris Science Academy ने एक विशेष समिति बनायी जिसके सदस्य प्रसिद्ध वैज्ञानिक सेंट क्लेर डेविल, पिलोजे और ड्यूमा थे । इस समिति से लामी की प्रथमता को मान्यता दे दी ।

इस बात में कोई संदेह नहीं कि थैलियम के रसायन के अध्ययन में वैज्ञानिक क्रुक्स ने काफी ज्यादा योगदान दिया । लामी ने यह सिद्ध किया कि धातु Trivalent या Monovalent यौगिक बनाती है । Monovalent Thalium क्षारीय धातुओं के साथ मिलता है तथा Trivalent Aluminium के साथ । ड्यूमा ने इसे "विरोधाभासी धातु" के नाम से पुकारा । Thalium की Potassium तथा Sodium के साथ समानता ने इस विचार को जन्म दिया कि Thalium उच्च Atomic weights वाली अज्ञात क्षारीय धातुओं का मिश्रण था । बड़े अफसोस की बात है कि थैलियम की खोज का सारा श्रेय क्रुक्स को दिया जाता है तथा लामी की महत्वपूर्ण उपलब्धियों की उपेक्षा की जाती है।

सन् 1866 में प्रसिद्ध पर्यटक तथा खनिजविद् नोरडेनशल्ड (ग्रीनलैंड) को एक नया खनिज मिला जिसमें रजत, ताम्र, सेलीनियम तथा थैलियम उपस्थित थे । उन्होंने इस खंनिज का नाम क्रुक्स के सम्मान में "क्रूकेसाइट" रखा । काफी समय तक यही माना जाता रहा कि यह एक मात्र खनिज है जिसमें थैलियम का Concentration (सांद्रण) उपस्थित होता है । जबकि इसकी खोज पहले ही हो चुकी थी ।

Scanned by CamScanner

ज्ञान मार्ग का लोकार्पण व वार्षिकोत्सव कार्यक्रम एक नजर

सांसद श्री विजेन्द्र चौधरी का स्वागत करते हुये प्राचार्य डा. एल.सी. गौड़

ज्ञान मार्ग का शिलान्यास करते हुये सासंद चौ. विजेन्द्र सिंह एवं साथ में अध्यक्ष तथा सचिव

वार्षिकोत्सव पर पुरुस्कार वितरण करते सासंद श्री विजेन्द्र सिंह

Scanned by CamScanner

इंडियम

रासायनिक तत्वों के इतिहास में अक्सर ऐसा होता है कि किसी नये तत्व की खोज दूसरे तत्व की खोज को प्रेरणा देती है। स्पेक्ट्रमदर्शी विधि द्वारा खोजे चार तत्वों के ग्रुप के अंतिम सदस्य इंडियम की खोज में थैलियम ने ऐसी ही भूमिका निभायी। यह घटना जर्मन नगर फ्रेबर्ग में घटी इसके मुख्य दो पात्र खनन अकादमी में भौतिक शास्त्र के प्रोफेसर रैख तथा उनके सहायक रिख्तर थे। यह दोनों थैलियम के गुणों की आगे की खोज में व्यस्त थे। लम्बे समय तक रासायनिक प्रयोगों के बावजूद भी उन्हें अपनी मर्जी का तत्व नहीं मिला। इसकी जगह उन्हें फूस जैसे पीले रंग का अज्ञात अवक्षेप प्राप्त हुआ। कहा जाता है कि जब विन्कलर (जर्मेनियम के भावी अन्वेषक) रैख की Lab में आये तो रैख ने उन्हें Test Tube में रखा एक ppt दिखाया और कहा कि यह एक नये तत्व का सल्फाइड है। इसके लिए उन्होंने स्पेक्ट्रमदर्शी विधि अपनायी परन्तु दुर्भाग्यवश वे वर्णान्धता के रोगी थे। अर्थात् उन्होंने अपने सहायक रिख्तर को Spectrum Analysis का काम सौंपा। रिख्तर को पहले ही प्रयास में सफलता मिल गयी। उन्हें नमूने के Spectrum में एक अति चमकीली नीली (Blue) रेखा दिखायी दी यह रेखा सीजियम की नीली रेखा से भी नहीं मिल रही थी। रिख्तर ने रैख को उसके Results बताये और दोनों वैज्ञानिक इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि जिंक अयस्कों में एक नया तत्व उपस्थिति है। इस तत्व का नाम इंडियम रखने का फैसला किया। यह शब्द "इंडियो" से लिया गया जिसका अर्थ "एक चमकीला नीला रजक" होता है। इंडियम की खोज की सूचना पर दोनों वैज्ञानिकों ने हस्ताक्षर किये थे परंतु रैख के अनुसार इसकी खोज का श्रेय अकेले रिख्तर को मिलना चाहिए था।

प्रकृति में इंडियम की उपस्थिति सिद्ध करने के बाद दोनों वैज्ञानिकों ने इस Element की थोड़ी सी मात्रा प्राप्त कर ली। तथा उसके कुछ गुणों का अध्ययन किया। इस काम में उनकी सहायता विन्कलर ने की। इतने में Metallic इंडियम प्राप्त हो गया। 1867 में रिख्तर ने Paris Science Academy के सामने शुद्ध इंडियम के नमूने पेश किये और उनकी कीमत 800 पाउंड बतायी। उन दिनों के हिसाब से यह पैसा काफी ज्यादा था। इसकी खोज के बाद रासायनिक गुणों का वर्णन किया गया। परन्तु पहली बार इसका Atomic weight (परमाणु भार) गलत निश्चित किया गया (75.6)। मेडेलीफ इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि इस परमाणु भार से इंडियम को आवर्त सारणी में सही जगह नहीं दीं जा सकती। अतः उन्होंने इसका मान डेढ़ गुना करने का प्रस्ताव रखा। मेडेलीफ की बात ठीक निकली तथा इंडियम को आवर्त सारणी के तीसरे ग्रुप में स्थान दिया गया।

Scanned by CamScanner

पुस्तकालयों का परिवर्तित स्वरूप

डॉ० कुसुमलता, पूर्व पुस्तकालयाध्यक्षा

पुस्तकालयों की संवृद्धि समय के साथ, सामाजिक, सांस्कृतिक, वैज्ञानिक एवं प्रौद्योगिक परिवेश में हुई है । आधुनिक पुस्तकालय ज्ञान एवं सूचना के मात्र संग्रह–कक्ष नहीं हैं, वरन् वे जीवंत एवं सक्रिय घटक हैं, जो समाज की महत्वपूर्ण सेवा से सम्बद्ध हैं । वर्तमान में ज्ञान एवं सूचना का उतना ही महत्व है जितना शक्ति (एनर्जी) एवं प्रौद्योगिकी का ।

विश्वविद्यालय पुस्तकालय आज भी शिक्षा प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन कर रहे हैं । सूचना क्रान्ति के युग में पुस्तकालयों के स्वरूप परिवर्तन के साथ उनकी उपादेयता में आशातीत वृद्धि हुई है । अब व्यवस्थित एवं त्वरित पुस्तकालय सेवाएँ आवश्यक होती जा रही हैं ।

विश्वविद्यालयों में शिक्षण तथा शोध कार्य पुस्तकालय सेवाओं पर ही केन्द्रित हैं तथा विभिन्न विश्वविद्यालयों के पुस्तकालयों के विकास का स्तर समान नहीं है ।

विश्वविद्यालय के केन्द्रीय पुस्तकालयों का दायित्व बढ़ता ही जा रहा है । विभागीय पुस्तकालयों का सहयोग एवं विकास करना तथा उचित नेटवर्क द्वारा उनसे सीधा सम्पर्क साधन समय की मांग है ।

रिग्स ने स्पष्ट किया है कि प्रौद्योगिकी ने शैक्षिक पुस्तकालयों को बौद्धिक ज्ञान परिक्षेत्र का महत्वपूर्ण एवं अभिन्न अंग बना दिया है ।[1] विश्वविद्यालय पुस्तकालय ज्ञान के भण्डार हैं, जहाँ शोध कार्य किया जाता है तथा शोधकर्ता उपलब्ध ज्ञान का परीक्षण कर, उपयोगी सार–तत्व की निरन्तर खोज करते हैं ।[2] वैवस्टर्स के वृहद अन्तर्राष्ट्रीय शब्द कोश के अनुसार, शोध से अभिप्राय गहन अध्ययन आधारित खोजबीन अथवा परीक्षण है, जो आलोचनात्मक, विस्तृत खोज अथवा प्रयोग हैं, जिनका उद्देश्य नवीन सत्यों की अवधारणा तथा उनका सही विश्लेषण, स्वीकृत निष्कर्षो, सिद्धान्तों, नियमों में पुनः सुधार है ।[3] प्रगति की सतत प्रक्रिया की इन गतिविधियों में पुस्तकालयों की अहम भूमिका रहती है ।

सूचना प्रौद्योगिकी सेवाएँ :

वर्तमान युग, कम्प्यूटर, विज्ञान एवं सूचना का युग माना जाता है । अतः अब पुस्तकालय को पुस्तकालय नहीं अपितु सूचना केन्द्र के रूप में अधिक माना जाता है ।

विश्व का कोई भी बड़े से बड़ा पुस्तकालय यह दावा नहीं कर सकता कि विश्व की समस्त पाठ्य सामग्री उसके पास है । पहले यह कार्य पुस्तकालय सहयोग द्वारा किया जाता था लेकिन वर्तमान में यह कम्प्यूटर नेटवर्क के नाम से जाना जाता है । इसके द्वारा अनेक पुस्तकालयों को कम्प्यूटर के माध्यम से जोड़ दिया जाता है

Scanned by CamScanner

तथा एक पुस्तकालय में बैठकर इन सभी पुस्तकालयों की सूचना प्राप्त की जा सकती है जो लाइब्रेरी नेटवर्क से जुड़े हैं । यह नेटवर्क राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर स्थित अपनी सेवायें प्रदान कर रहे हैं । इन्फिलबनेट (Information and Library Network) भारत के पुस्तकालयों का राष्ट्रीय स्तर का नेटवर्क है ।

वर्तमान युग को कम्प्यूटर का ही युग कहा जाये तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी । इसी का परिणाम है कि आज सम्पूर्ण विश्व कम्प्यूटर नेटवर्क से जुड़ा हुआ है । कोई ऐसा क्षेत्र नहीं है जिस पर कम्प्यूटर ने अपनी कोई छाप नहीं छोड़ी हो । अगर पुस्तकालय के संदर्भ में देखें तो इसके समस्त कार्य एवं सेवायें कम्प्यूटर के माध्यम से कुशलतापूर्वक सम्पन्न किये जा रहे हैं । पुस्तकालय के प्रशासनिक कार्यो को दक्षता से सम्पन्न करने एवं पाठकों को अपनी सर्वोत्तम सेवायें प्रदान करने के कार्य में कम्प्यूटर का योगदान अभूतपूर्व है । सूचना संचार की नई तकनीक के कारण, पुस्तकालय सेवाओं की आवश्यकता, स्वरूप में परिवर्तित हो रहा है तथा इस क्षेत्र में शोध के नये आयाम खुल रहे हैं ।

सूचना प्रौद्योगिकी का मुख्य कार्य सूचना संग्रह एवं पुनः प्राप्ति है । सूचना प्रौद्योगिकी के निम्न माध्यम संग्रह एवं पुनः प्राप्ति में सहायक होते हैं :

वर्ड प्रोसेसिंग, सूचनाओं के संग्रह एवं पुनः प्राप्ति की आधुनिक प्रणाली है । इसमें 1,50,000 सूचनाएँ एक ही साथ संग्रहीत की जा सकती हैं एवं तीव्र गति से वांछित सूचना को विशेष प्रारूप में पुनः प्राप्त किया जा सकता है । इस प्रणाली में पहले सूचनाओं को निवेशित किया जाता है और उसके बाद प्रोग्राम की सहायता से उसको प्रिन्ट द्वारा प्राप्त कर लिया जाता है ।

अन्त में हम चाहेंगे कि पुस्तकालय व्यवसाय केवल एक सेवा कार्य नहीं वरन व्यवसाय के रूप में आगे बढ़ाया जाना चाहिए । अपनी सेवाओं के प्रबन्धन को समाजपयोगी बनाकर, सूचना व्यवसायी के रूप में पुस्तकालयकर्मी नई पीढ़ी का मार्गदर्शन कर देश को नई दिशा दे सकते हैं । इस प्रकार पुस्तकालय तथा सूचना विभाग के पुस्तकालय प्रतिनिधि बनकर अन्य व्यवसाइयों के साथ साइबर युग में कार्यकारिणी में स्थान प्राप्त कर, अपनी महत्ता प्रतिपादित कर सकते हैं ।

संदर्भ

1. Riggs (DE), Creating and managing change; Some controvery, some level-Headedness, Editorial views, college and Research Libraries, 57 (5), 1996, p.402.
2. Panda (KC), Multitype of library Resource Sharing and Networks with special reference to university libraries of Orissa. 1989. Ph.D. Thesis, Berhampur Univ. p.61.
3. Websters, Third New International Dictionary of the English Language U.S.A., G and C Merriam Company, 1971.

मेरे विचार

स्नेहलता सागर, बी०एड०

१. मानवता ही मनुष्य का सबसे बड़ा धर्म है ।

२. इस देश के सबसे बड़े हीरो हमारे देश के सिपाही हैं । जो अपनी जान की परवाह किये बिना हमारे देश की रक्षा करते हैं । तब हम आराम से अपने घरों में रहते हैं ।

३. सबसे बड़ी सेवा माता–पिता की सेवा है । उन्होंने हमें जन्म दिया हमें बुढ़ापे में उनका सहारा बनाना चाहिये, ना कि उन्हें अनाथ आश्रम या अकेला छोड़ देना चाहिये जो व्यक्ति अपना यह धर्म नहीं निभाता वह मनुष्य कहलाने के लायक नहीं है ।

४. गुरू ही एकमात्र ऐसा इन्सान है ? चाहे वह एक झोपड़ी में रहता हो, लेकिन एक आम इन्सान को पढ़ा लिखा, कर देश को विभिन्न पदों पर बैठाता है । जैसे कि राष्ट्रपति ।

५. सबसे बड़ा दान शिक्षा का दान है ।

६. किसी की भलाई के लिये बोला गया एक झूठ सौ सच के बराबर होता है ।

७. हमारे देश की सबसे बुरी प्रथा दहेज प्रथा है ।

८. यदि हम किसी के साथ अच्छा नहीं कर सकते तो हमें उसके साथ बुरा भी नहीं करना चाहिये ।

९. शिक्षा ही मात्र ऐसा धन है । जिसे हम से कोई छीन नहीं सकता । बाँट नहीं सकता।

अवसर न चूकें, सदा सक्रिय रहें

अर्चना रानी, बी०एड०

यदि हम सतर्क और सक्रिय रहें, तो कोई अवसर व्यर्थ नहीं जा सकता । हमारे जीवन में कई अच्छे अवसर आते हैं पर हम उस अवसर से लाभ नहीं उठा पाते क्योंकि हम इसके लिए तैयार नहीं रहते, सतर्क और सक्रिय नहीं रहते। अवसर कहकर नहीं आता और जब निकल जाता है तब हमें ख्याल आता है कि हम मौका चूक गये । प्रत्येक अवसर का लाभ उठाने के लिए हमें सतत रूप से सजग और सक्रिय रहना होगा, यानि हमारे अन्दर एक सुरति हमेशा बनी रहनी चाहिए ताकि हम गफलत में गाफिल न रहें, तभी हम सुअवसर से लाभ उठा सकेंगे । किस क्षण हमारी चेतना क्या ग्रहण कर ले, कुछ नहीं कहा जा सकता । एक–एक क्षण अमूल्य होता है क्योंकि जो क्षण बीत जाता है, वह फिर वापिस नहीं लौटता, किसी भी कीमत पर प्राप्त नहीं किया जा सकता । जनाब मीर हसन ने क्या खूब कहा है– सदा ऐश दौरा दिखाता नहीं, गया वक्त फिर हाथ आता नहीं । और कौन सा क्षण कितना कीमती हो क्या पता ? इसीलिए किसी ने ठीक ही कहा था– फालतू न बैठ, कुछ किया कर, भले ही पाजामा फाड़कर सिया कर।।

Scanned by CamScanner

भारतीय अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ बनाने में सेवा क्षेत्र के साथ-साथ उत्पादन बढ़ाना

डॉ० जे०के० शर्मा

अर्थव्यवस्था के विकास का अर्थ यह नहीं है कि बंगलौर में तेजी से सूचना तकनीकी का विकास होना वरन् अलीगढ़, एटा, मैनपुरी, जौनपुर का विकास भी होना चाहिए । पूर्णिया और भागलपुर का विकास भी होना चाहिए । यह सही है कि यहाँ शिक्षा का स्तर बंगलौर और पूणे जैसा विकसित नहीं है यहाँ पर रोजगार उच्च शिक्षित अथवा उच्च तकनीकी शिक्षित को प्राप्त है परन्तु कम शिक्षित को नहीं परन्तु चीन देश ने सभी को रोजगार दिया है । वहाँ बिजली के बल्वों, दो-दो रुपये वाले बाल पेनों से लेकर कम्प्यूटर के माउस तक पर लिखा मिलता है 'मेड इन चाइना' और भारतीय कारोबारी देश में अपनी फैक्टरियाँ बंदकर चीन ले जा रहे हैं । चीन ने अपने मैन्युफैक्चरिंग क्षेत्र को बहुत मजबूती से जमाया है यही कारण रहा कि चीन विश्व की सर्वाधिक जनसंख्या वाला देश होने पर भी अर्थव्यवस्था में दूसरा स्थान रखता है और भारत अर्थव्यवस्था में चतुर्थ स्थान पर । उसके सकल घरेलू उत्पाद में मैन्युफैक्चरिंग क्षेत्र का योगदान लगभग पचास प्रतिशत है जबकि हमारे देश भारत में यह पच्चीस प्रतिशत के आसपास है ।

विश्व की 50% मोटर साइकिलें चीन में बनती हैं । ब्रिटेन में बिकने वाली एक चौथाई हलकी मोटरसाइकिलें व स्कूटर चीन में बनते हैं । कोई वजह नहीं कि सॉफ्टवेयर में अगर हम शीर्ष स्थान पर हैं तो बनियान बनाने में उच्च स्थान नहीं हासिल कर सकते ।

बनियान बनाने का काम सॉफ्टवेयर के काम के मुकाबले भले ही कम मुनाफ वाला हो पर इसमें बहुत लोगों को रोजगार मिलेगा जिससे कि हमारे देश की बेरोजगारी काफी हद तक दूर होगी ।

जिन वजहों से माल चीन में सस्ता है, उनमें एक वजह यह है कि वे सिर्फ चीन के लिए ही माल नहीं बनाते बल्कि पूरी दुनियां के लिए माल बनाते हैं । अगर उत्पादन की मात्रा ज्यादा होती है, तो प्रति इकाई लागत कम हो जाती है । प्रति इकाई लागत कम होने से अन्तर्राष्ट्रीय बाजारों में किसी भी प्रतिस्पर्धी को पीटना आसान हो जाता है । चीनी उत्पादों की लागत कम होने की एक वजह यह भी है कि वहाँ बुनियादी ढाँचे पर पर्याप्त ध्यान दिया गया है । हम यह देख रहे हैं कि अलीगढ़ शहर में ताला बनाने वाले किसी (भारतीय कारोबारी) अलीगढ़ कारोबारी को अबाधित बिजली की आपूर्ति

Scanned by CamScanner

सुनिश्चित नहीं है । इसलिए (भारतीय कारोबारी) अलीगढ़ कारोबारी जेनरेटर का इस्तेमाल करेगा। जेनरेटर की लागत कीमत में जुड़ेगी, तो कीमत ज्यादा होगी । इस ज्यादा कीमत को चीन की सस्ती कीमत पीट देगी क्योंकि चीन की कारोबारी को बिजली लगातार उपलब्ध है । ऐसा नहीं है कि चीनी कारोबारी तकनीक या कुशलता के मामले में भारत से आगे है ।

यहाँ नोट करने की बात यह है कि बनियान निर्माण के लिए ज्यादा शिक्षण आवश्यक नहीं अपितु आवश्यक है प्रशिक्षण जो कि अशिक्षितों को भी दिया जा सकता है तो देश को सॉफ्टवेयर बनाने वाली बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ तो चाहिए ही, साथ बनियान बनाने वाली बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ भी चाहिए, क्योंकि सबके लिए रोजगार चाहिए।

फैक्टरी की नौरियों के लिए करीब सौ रुपये रोज पर अप्रशिक्षित लोग कई राज्यों में उपलब्ध है । थाईलैंड में ऐसे लोग कम से कम डेढ़ सौ से दो सौ रुपये में उपलब्ध होते हैं । चीन में अब मजदूर औसतन दो सौ, तीन सौ रुपये रोज माँग रहे हैं । सौ रुपये रोज वाले मजदूर भारत में अब भी कम नहीं यहाँ तक कि गाँवों में 80/- रु० प्रतिदिन के हिसाब से भी नहीं मिलता है ।

भारतीय मैन्युफैक्चरिंग को चीन के स्तर तक लाने में बाधा न तो यहाँ के कारोबारी हैं, न कर्मचारी बल्कि बाधा है नेताओं की इच्छाशक्ति और रचनात्मक सोच की कमी । यहाँ के इंजीनियरों ने सावित कर दिया है कि वे किसी से कम नहीं । यहाँ के कम प्रशिक्षित लोगों को मौका मिले तो वे भी साबित कर सकते हैं कि वे चीन से किसी मामले में पीछे नहीं हैं जो कुछ चीन कर सकता है वह वे भी कर सकते हैं पर ऐसा कर पाने के लिए अनावश्यक स्थितियों को पैदा करना जरूरी है । इसके लिए जरूरी है कि राजनीतिक नेतृत्व में विजन हो और राजनीतिक इच्छाशक्ति हो । पूरे देश में बहुत कम राज्य ऐसे हैं जहाँ कहा जा सकता है कि नेताओं के पास विजन और राजनीतिक इच्छा शक्ति है । तमिलनाडु इस मामले में अपवाद है वहाँ बेहतर बुनियादी सुविधाओं, सड़क और बिजली के बूते यहाँ पर कई प्लांट लग रहे हैं जिससे साफ जाहिर है कि रोजगार के अधिक अवसर पैदा होंगे ही ।

उत्तर प्रदेश और बिहार को भी इस तरह की तमाम छूटें अपने यहाँ देनी चाहिए ताकि व्यापक स्तर पर मैन्युफैक्चरिंग वाला निवेश यहाँ आए । इससे शहरीकरण भी रूकेगा हमारे अलीगढ़, एटा, मैनपुरी आदि इलाकों में प्लांट पड़े तो शहरीकरण ज्यादा नहीं बढ़ेगा यहाँ उद्योग नोयडा क्षेत्र में ही पनप रहे हैं जो कि ठीक नहीं है । शहरकरण को बढ़ावा मात्र है । उत्तर प्रदेश और बिहार की बेरोजगारी की स्थिति को देखते हुए यहाँ बनियान जैसे अधिक रोजगार वाले

Scanned by CamScanner

निम्न तकनीक के प्लांट जरूरी हैं, ताकि यहाँ भी कम शिक्षित या अशिक्षित महिलाओं को रोजगार मिल सके । यहाँ बिजली सड़क की व्यवस्था बेहतर करना भी जरूरी है । जौनपुर, एटा और अलीगढ़ सॉफ्टवेयर के बूते आगे नहीं जाएंगे, उनके लिए तो मैन्युफैक्चरिंग वाले प्लांट ही चाहिए ।

इस तरह हम यह कह सकते हैं कि जो काम चीन ने करके दिखाया और जो तमिलनाडु कर रहा है यदि इसे उत्तर भारत के बाकी राज्य करें तो यह निश्चित है कि उत्तर भारत की अर्थव्यवस्था का विकास नहीं वरन् पूरी भारतीय अर्थव्यवस्था मजबूत बनेगी ।

कन्या भ्रूण हत्या : अंधकारमय भविष्य

कृष्ण कुमार कश्यप, बी०एस०सी० पूर्व छात्र

बन्द कमरों में चीखें दब जाती है,
कहीं दीपक गिरने से नदियाँ जल जाती हैं,
कहीं गहरी नींद में सोई उठ नहीं पाती है,
अपने ही घर में अपनों द्वारा अस्मत लूटी जाती है,
कहीं दहेज की खातिर क्रूरता से काट दी जाती है,
किसी की वासना पूरी न होने पर तेजाब में झुलस जाती है,
कहीं वंश न बढ़ाने के नाम पर दुनिया में कदम रखने से पहले ही,
मार दी जाती है ।
जरा सोचो
रक्षा बंधन पर कौन बाँधेगा राखी
कौन करवा चौथ का व्रत करेगा ?
कौन कहेगा कि नारी, लक्ष्मी स्वरूपा है ?
किसे कहोगे बेटी, बहन और माँ ?
किसके घर बारात लेकर जाओगे,
किसके डोली में कंधा लगाओगे ?
क्या यही भारतीय संस्कृति है ।

Scanned by CamScanner

हमारा नया सौरमंडल

श्री अनन्त कुमार, प्रवक्ता भौतिक विभाग

कहने को तो आकाशीय पिंड परलोक में रहते हैं लेकिन वे भी जन्म मरण के चक्कर से परे नहीं है । प्लूटो की मौत और उसके नये जन्म ने यह बात सिद्ध कर दी है ।

अलविदा प्लूटो : चेक गणराज्य की राजधानी प्राग में 24 अगस्त 2006 को अंतर्राष्ट्रीय खगोल विज्ञान संघ (IAU) की बैठक में सारी दुनिया से इकट्ठे हुए खगोल विज्ञानियों ने प्लूटो का ग्रह होने का दर्जा खत्म कर दिया। प्लूटो अब ग्रह नहीं रहा बल्कि उसे अब एक नये नाम '134340' से जाना जायेगा ।

नई खगोलीय व्यवस्था : IAU की नई परिभाषा के अनुसार ग्रह वह आकाशीय पिंड है जो सूर्य के चारों ओर परिक्रमा करता है । साथ ही उसमें पर्याप्त गुरुत्वाकर्षण बल हो जिससे वह गोल स्वरूप ग्रहण कर सके । इसके अतिरिक्त उसके आस–पास का क्षेत्र साफ होना चाहिये यानि उसके आस–पास अन्य खगोलीय पिंडों की भीड़भाड़ न हो । दूसरी श्रेणी बौने ग्रहों या ड्वार्फ प्लेनेट्स की है जिनमें प्लूटो, सेरस व 2003UB313 शामिल हैं । लघु पिंडों का एक तीसरा वर्ग भी बनाया गया है जो सूर्य की परिक्रमा करते हैं । इनके लिए लघु सौर मंडल पिंड या स्माल सोलर सिस्टम बॉडीज शब्द का प्रयोग किया जाता है । यह अनेक धूमकेतुओं और प्राकृतिक उपग्रहों पर लागू होता है ।

नया सौरमंडल : नई व्यवस्था के अनुसार हमारे सौरमंडल में आठ ग्रह हैं जिनकी कुछ मुख्य विशेषताएँ निम्नलिखित हैं–

1. बुध (Mercury) :

- यह सूर्य का निकटतम तथा सौरमंडल का सबसे छोटा ग्रह है ।
- इसका कोई उपग्रह नहीं है ।
- यहाँ दिन अत्यन्त गर्म तथा रातें बर्फीली होती हैं ।
- यह सूर्य की परिक्रमा सबसे कम समय में पूरी करता है ।

2. शुक्र (Venus) :

- यह 'शाम का तारा' तथा 'भोर का तारा' के नाम से प्रसिद्ध है ।
- इसका कोई उपग्रह नहीं है ।
- यह पृथ्वी के लगभग बराबर आकार तथा भार का है । इस कारण इसको पृथ्वी का 'भगिनी ग्रह' भी कहा जाता है ।
- यह अपनी धुरी पर सभी ग्रहों के विपरीत पूर्व से पश्चिम की ओर घूमता है ।
- यह अपनी धुरी पर सबसे धीमी गति से घूमता है ।
- यह सौरमंडल का सबसे गर्म ग्रह है । (97% CO_2 के कारण) ।
- यह सबसे चमकीला ग्रह है । (परावर्तन क्षमता = 70%) ।

3. पृथ्वी (Earth) :

- पृथ्वी सौर परिवार का पाँचवा बड़ा ग्रह है ।

Scanned by CamScanner

- इसके 71% भाग पर जल तथा 29% भाग पर थल है ।
- पृथ्वी एक गोलाकार पिंड है परन्तु यह ध्रुवों पर थोड़ी चपटी है ।
- पृथ्वी का एकमात्र उपग्रह चन्द्रमा है ।

4. मंगल (Mars) :

- यह 'लाल ग्रह' के नाम से प्रसिद्ध है ।
- मंगल के दो उपग्रह हैं– फोबोस तथा डीमोस।
- मंगल ग्रह का सबसे ऊँचा पर्वत निक्स आलंपिया है जो एवरेस्ट से तीन गुना ऊँचा है ।
- यह अपनी धुरी पर लगभग पृथ्वी की घूर्णन गति के बराबर घूमता है ।
- मंगल पर अब तक कई अंतरिक्ष अभियान भेजे जा चुके हैं जैसे– वाइकिंग, पाथफाइंडर, मार्स ओडिसी, बीगल–2 (2003), स्पिरिट व अपॉर्च्युनिटी (2004) ।

5. बृहस्पति (Jupiter) :

- यह सौरमंडल का सबसे बड़ा ग्रह है ।
- यह अपनी धुरी पर सबसे तेजी से घूमता है।
- इस ग्रह के 63 उपग्रह हैं । जिसमें गैनीमेड सौरमंडल का सबसे बड़ा उपग्रह है ।
- बृहस्पति पर एक विशालकाय लाल धब्बा (Great Red spot) है जो वास्तव में एक तीव्र चुम्बकीय तूफान है ।

6. शनि (Saturan) :

- यह आकार में दूसरा सबसे बड़ा ग्रह है ।
- यह नंगी आँखों द्वारा दिखने वाला सबसे दूर का ग्रह है ।
- यह आकाश में पीले तारे के समान नजर आता है ।
- इसके उपग्रहों की संख्या 47 है ।
- टाइटन इसका प्रमुख उपग्रह है । इस पर N_2 युक्त वायुमण्डल है ।
- शनि के चारों ओर वलय (Rings) पाये जाते हैं ।
- शनि अपनी धुरी पर घूमने में 10.3 घंटे से ज्यादा समय लेता है ।
- यह सबसे कम धनत्व वाला ग्रह है । (पृथ्वी से 30 गुना कम) ।

7. अरुण (Uranus) :

- यह सूर्य से सातवां तथा आकार में तृतीय ग्रह है ।
- इस ग्रह की सोज 1781 में सर विलियम हर्शल ने की थी ।
- यह अन्य ग्रहों के विपरीत उत्तर से दक्षिण की ओर घूमता है ।
- इसके 27 उपग्रह हैं । जिनमें एरियल तथा मिरांडा प्रमुख हैं ।
- इसके चारों ओर 9 धुंधले वलय (Rings) हैं।

8. वरुण (Neptune) :

- यह सौर परिवार का चौथा बड़ा तथा सूर्य से आठवाँ ग्रह है ।
- यह मीथेन गैस के कारण धुंधले हरे रंग का नजर आता है ।
- इसके पाँच धुंधले वलय (Rings) है ।
- इसके 13 उपग्रह हैं जिनमें ट्राइटन प्रमुख है ।
- इसकी खोज 1846 में जर्मन वैज्ञानिक जे०जी० गेले ने की थी ।
- यह सूर्य से सबसे दूर तथा सबसे ठण्डा ग्रह है जो सूर्य की परिक्रमा सबसे ज्यादा समय में पूरी करता है ।

नोट : यहाँ दी गई जानकारी 'नासा' द्वारा उपलब्ध नवीनतम आंकड़ों पर तथा IAU द्वारा उपलब्ध जानकारी पर आधारित है ।

Scanned by CamScanner

विद्यालय अनुशासन

शिवानी माहेश्वरी, बी०एड०

अनुशासन का शाब्दिक अर्थ मानसिक और नैतिक प्रशिक्षण है । साधारण शब्दों में किसी संस्था, देश या समाज में प्रचलित व्यवस्था के प्रति श्रद्धा और उसके नियमों का पालन ही अनुशासन है । विद्यालय के सन्दर्भ में इसका अभिप्राय उस विद्यालय के छात्रों के व्यवहार, सज्जनता, उनके गुण, नैतिकता और नियम पालन से है । अनुशासन का अर्थ समय–समय पर बदलता रहा है । प्रारम्भ में अनुशासन का अर्थ दमन था । अध्यापक का डण्डा अनुशासन का प्रतीक था । ऐसी धारणा थी कि डण्डे का सहारा छोड़ देने से बच्चे बिगड़ जायेंगे । ऐसी दशा में बालकों को कठोर नियमों का पालन करना पड़ता था अन्यथा उनको कठोर दण्ड सहना पड़ता था । बाद में अनुशासन का अर्थ अध्यापक के आदर्शमय जीवन का अनुकरण माना जाने लगा कोई भी प्रधानाचार्य अपने उद्देश्य में तभी सफल हो सकता है जबकि शिक्षा संस्था का प्रत्येक अंग अनुशासित हो अर्थात् व्यवस्थित रूप से श्रद्धापूर्वक नियमों का पालन करता हुआ अपनी अधिकतम सीमा तक कर्तव्य पालन करे और उसमें प्रसन्नता अनुभव करे । विद्यालय एक ऐसी संस्था है जहाँ देश का नेतृत्व करने वाले नवयुवकों का निर्माण होता है उसमें उन गुणों का विकास किया जाता है जिनके द्वारा वह अपने समाज तथा राष्ट्र के लिए उपयोगी प्राणी बन सकेगा । यदि संस्था में अनुशासन न होगा तो कोई भी कार्य सुचारु रूप से न चल सकेगा और उसका कुप्रभाव सारे समाज को भुगतना पड़ेगा । आजकल देश की समस्याओं और आवश्यकताओं को देखते हुए अनुशासन की महत्ता सर्वोपरि है । सामाजिक श्रृंखला की प्रत्येक कड़ी ढीली हो चुकी है चारों ओर अस्त–व्यस्तता और अव्यवस्था फैली हुई है । अनुशासन के अभाव का दुष्परिणाम स्वयं उसके महत्व को स्पष्ट कर रहा है । विद्यालयों के लिए अनुशासन महत्वपूर्ण विषय बन गया है छात्रों में अनुशासनहीनता व्याप्त है । नित्य कहीं न कहीं छात्रों द्वारा प्रदर्शन, हड़ताल, मारपीट, आक्रमण, तोड़–फोड़ पुलिस से संघर्ष, परीक्षाओं में नकल तथा गुरुजनों पर आक्रमण आदि की घटनाएँ होती रहती हैं । हम स्वयं अनुशासित भले ही न हों किन्तु भावी नवयुवकों की यह अनुशासनहीनता हमारे लिए सिर दर्द बनी हुई है । यह परिस्थितियाँ स्पष्ट रूप से संकेत कर रही हैं कि अनुशासित जीवन का विकास न किया गया तो राष्ट्र अपनी रक्षा भी नहीं कर सकेगा । संक्षेप में हम कह सकते हैं कि अनुशासन ही व्यक्ति को व्यक्ति बनाता है, समाज की हर कड़ी को मजबूत करता है । यह राष्ट्रीय उत्थान का आधार और संस्थाओं के सुसंचालन की धुरी है ।

Scanned by CamScanner

उच्च शिक्षा की उपेक्षा

''उच्च शिक्षा की दुर्दशा को देश के विकास की एक बड़ी बाधा मान रही हैं''

श्रीमती सीमा पाठक, प्रवक्ता बी०एड० विभाग

मानव संसाधन विकास मंत्री अर्जुन सिंह की इस टिप्पणी से असहमत नहीं हुआ जा सकता कि उच्च शिक्षा की स्थिति बीमार बच्चे जैसी है, लेकिन उनका यह कथन इसलिए आश्चर्य चकित करता है, क्योंकि उच्च शिक्षा में सुधार की जिम्मेदारी उनके मंत्रालय की है । उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्रों की संख्या दिन–प्रतिदिन बढ़ती चली जा रही है । स्थिति यह है कि प्रतिवर्ष तमाम छात्र मनपसन्द विश्वविद्यालयों अथवा पसंदीदा विषयों में दाखिला नहीं ले पाते। विश्वविद्यालयों पर दबाव बढ़ते चले जाने से उसकी शैक्षिक गुणवत्ता पर प्रभाव पड़ रहा है । उच्च शिक्षा की बढ़ती माँग और विश्वविद्यालयों पर बढ़ते दबाव को देखते हुये निजी क्षेत्र ने भी उच्च शिक्षा में अपने पैर पसार लिए हैं । निजी विश्वविद्यालयों की उपस्थिति में इस बहस को जन्म दे दिया है कि क्या वे गुणवत्ता प्रधान शिक्षा उपलब्ध करा रहे हैं अथवा ऐसा करने के नाम पर महज आर्थिक लाभ अर्जित कर रहे हैं ? यह बहस अपनी जगह है, लेकिन इसमें संदेह नहीं है कि सरकारी विश्वविद्यालयों और निजी क्षेत्र के कालेजों से निकलने वाले अधिकांश छात्रों का बौद्धिक स्तर ऐसा नहीं है कि वे उद्योग और व्यवसायिक जगत की अपेक्षाओं पर खरे उतर सकें ।

यदि भारत को विकास के अपने रथ को आगे बढ़ाना है तो उसके युवाओं को न केवल उच्च शिक्षा ग्रहण करनी होगी, बल्कि उपयोगी ज्ञान से भी लैस होना पड़ेगा । आज हमारे औसत युवा जैसी शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं वह गुणवत्ता के मानदंडों से पीछे है । शायद यही कारण है कि उद्योगों के एक संगठन ने मत व्यक्त किया है कि भारत को अपनी विकास दर बरकरार रखने के लिए कुशल एवं योग्य युवाओं की फौज तैयार करनी होगी और इसे उच्च शिक्षा के केन्द्रों में गुणवत्ता प्रधान शिक्षा उपलब्ध कराकर ही हासिल किया जा सकता है । उद्योग जगत यह महसूस कर रहा है कि योग्य एवं दक्ष युवाओं को खोज पाना मुश्किल होता जा रहा है । यदि यही स्थिति रही तो भारतीय उद्योगों और विशेष रूप से सेवा क्षेत्र को विश्व स्तरीय साख बरकरार रख सकने में कठिनाई होगी । यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि आज

अब भारत विकास के पथ पर तेजी से अग्रसर है और यह माना जा रहा है कि दुनिया भारत के दरवाजे पर दस्तक दे रही है तब उच्च शिक्षा की स्थिति दुर्दशाग्रस्त है । जिस देश की आत्मा में ज्ञान भरा हो और जिसके पूरे इतिहास और संस्कृति में शिक्षा को अत्यधिक महत्त्व दिया गया हो वहाँ पिछले करीब सौ वर्षों और विशेष रूप से आजादी के बाद शिक्षा के क्षेत्र में गिरावट एक विचारणीय विषय है । आज इससे इन्कार नहीं किया जा सकता कि देश के नीति–निर्याताओं ने शिक्षा के क्षेत्र की अनदेखी की है ।

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आई.आई.टी.), भारतीय प्रबन्धन संस्थान (आई.आई.एम.) और कुछ मेडीकल कालेजों को छोड़ दिया जाये तो भारत की उच्च शिक्षा विश्व स्तरीय तो दूर रही, एशिया के प्रमुख देशों के स्तर की भी नहीं है । विश्व के चुनिंदा 300 विश्वविद्यालयों में भारत का एक भी विश्वविद्यालय न होना यह बताता है कि सरकारों ने युवाओं को गुणवत्ता प्रधान उच्च शिक्षा प्रदान करने की कोई विशेष योजना नहीं बनाई आज भारत में जितने भी विश्वविद्यालय हैं उनकी संख्या देश के युवाओं के दसवें हिस्से को भी शिक्षित करने लायक नहीं है । यद्यपि उच्च शिक्षा में सुधार के लिये गठित समितियों ने अनेक बार यह सिफारिश की कि इसके लिए बजट दो गुना किया जाना चाहिये, लेकिन इन शिफारिसों पर ध्यान नहीं दिया गया । ऐसा तब हुआ जब उच्च शिक्षा में भारत विकसित और विकासशील देशों के मुकाबले सबसे कम धन खर्च कर रहा है । कई बार तो ऐसा लगता है कि देश के राजनेता समाज के शिक्षित होने से भयभीत नजर हैं । शायद उन्हें इस बात का डर सताता है कि यदि उनको वोट बैंक शिक्षित होकर सही लगेगा तो फिर वे उसे बरगला कर वोट नहीं बटोर सकेंगे ।

आज जितना बुरा हाल विश्वविद्यालय का है उतना ही प्राइमरी सरकारी स्कूलों का भी है। सरकारी सेकेंडरी स्कूलों की भी स्थिति कोई बहुत अच्छी नहीं हैं । सरकारी प्राइमरी और सेकेंडरी स्कूलों से निकलने वाले छात्र पब्लिक स्कूलों के छात्रों के समक्ष ठहर ही नहीं पाते । यही कारण है कि सरकारी स्कूलों के विद्यार्थी विश्वविद्यालयों में दाखिला लेने से वंचित रहते हैं । और अपने जीवन यापन के लिये छोटे–मोटे कार्य करने तक सीमित रहते हैं । आखिर बड़ी तादात में मामूली रूप से शिक्षित युवाओं की फौज लेकर हम देश को विकसित बनाने की परिकल्पना कैसे कर सकते हैं ? ध्यान रहे कि विश्वविद्यालयों से निकलने वाले स्नातकों के बारे में यह महसूस किया गया है कि उनमें से आठ–नौ प्रतिशत ही अच्छी नौकरियाँ हासिल करने के योग्य होते हैं । इसका मतलब है कि 90 प्रतिशत डिग्रीधारक देश के विकास में उपयुक्त योगदान देने में समर्थ नहीं ।

Scanned by CamScanner

क्या भारत की नीति–निर्माता यह नहीं जानते कि जो भी देश पूर्णरूप से विकसित है उनके विकास में उच्च शिक्षा के ढांचे ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है ? अमेरिका को आज जो मुकाम हासिल है उसके पीछे शिक्षा के ढांचे में किया गया व्यापक निवेश है । आज भारत के पास धन की कमी नहीं, लेकिन उच्च शिक्षा में सुधार इच्छाशक्ति नहीं नजर आती । एक ओर जहां प्राइमरी स्कूलों से लेकर विश्वविद्यालयों तक के शिक्षकों की आर्थिक स्थिति ठीक करने की जरूरत है वहीं दूसरी ओर पाठ्यक्रम और पठन–पाठन के स्तर को भी दुरूस्त करने की आवश्यकता है । वर्तमान में औसत शिक्षकों को जो वेतन मिल रहा है उसे देखते हुये योग्य व्यक्ति अध्यापन का पेशा अपनाने में हिचकते हैं। इधर यह चर्चा हो रही है कि उच्च शिक्षा के क्षेत्र में विदेशी निवेश को अनुमति प्रदान कर दी जाय । फिलहाल इसकी कोई आवश्यकता नहीं। आखिर सरकार स्वयं शिक्षा के क्षेत्र में व्यापक निवेश क्यों नहीं करती ? जब देश के नागरिकों को शिक्षा पाने का मौलिक अधिकार प्राप्त है तो फिर यह सरकार की जिम्मेदारी बनती है कि वह ऐसी व्यवस्था करे जिससे सभी अपने इस अधिकार को हासिल करने में समर्थ हों । शिक्षा के क्षेत्र निजी क्षेत्र को बढ़ावा देने में कोई हर्ज नहीं, लेकिन उपर्युक्त नियम कानून और निगरानी की व्यवस्था बनाने की आवश्यकता है । चूँकि धीरे–धीरे शिक्षा का क्षेत्र एक उद्योग के रूप में उभर आया है इसलिये यह आवश्यक हो गया है कि निजी क्षेत्र के शिक्षा संस्थानों को पारदर्शी तरीके से नियंत्रित किया जाय ताकि न तो कहीं भ्रष्टाचार पनपने पाये और न ही निजी विद्यालय शिक्षा की दुकानें बनने पायें ।

शिक्षा के क्षेत्र कोई गुणात्मक परिवर्तन तभी लाया जा सकता है जब राजनीतिक इच्छा शक्ति का परिचय दिया जायेगा । दुर्भाग्य से ऐसी इच्छाशक्ति का न तो पूर्व की सरकारों ने दिया न ही वर्तमान केन्द्र सरकार दे रही है । यदि ऐसा नहीं होता तो मानव संसाधन विकास मंत्री महज उच्च शिक्षा की बदहाली का जिक्र करके नहीं रह जाते । आखिर वह उच्च शिक्षा रूपी बीमार बच्चों को दवा देकर ठीक करने का काम क्यों नहीं कर रहे ? इस कार्य की ओर अनदेखी का मतलब देश के भविष्य से खिलवाड़ करना है । उन्हें यह समझना होगा कि समस्या को सामने लाने अथवा नसीहत देने से काम नहीं चलने वाला । अगर शिक्षा के क्षेत्र में सुधार के लिए कड़े कदम नहीं उठाए गए तो सामाजिक असमानताएं तो बढ़ेंगी ही, विकास की गति भी धीमी पड़ सकती है ।

* * *

Scanned by CamScanner

श्रीराम भक्त गोस्वामी तुलसीदास (एक सामान्य परिचय)

डॉ० शिवदत्त शर्मा, भू०पू० डिप्टी लाईब्रेरियन, अ०मु०वि०

जन्म : गोस्वामी तुलसीदास के जन्म के विषय में विद्वानों के भिन्न-भिन्न मत हैं । इनका जन्म कब हुआ यह अभी तक विवादास्पद है । कुछ विद्वानों के मत में इनकी जन्मतिथि निम्नलिखित के आधार पर संवत् 1554 बैठती है ।

पंद्रह सै चौवन विषै, कालिन्दी के तीर ।
स्रावन सुक्ला सप्तमी, तुलसी घरेउ सरीर ।।

''रत्नावली के दोहे'' में वर्णित इनकी पत्नी रत्नावली के कथानुसार तुलसीदास के गृह-त्याग के समय अर्थात् संवत् 1604 में रत्नावली की आयु 27 वर्ष की थी । तुलसीदास दो-चार वर्ष बड़े हो सकते हैं । परन्तु फिर भी यह जन्मतिथि प्रमाणिक नहीं कही जा सकती । इतना कहना उचित रहेगा कि इनकी भक्ति और ज्ञान की ख्याति दिल्ली दरबार तक हो गई थी । उस समय अकबर बादशाह का शासन था । रत्नावली की माता की मृत्यु और पति वियोग का संवत् 1604 को बताती है-

सागर वर रस ससि रतन, संवत् भो दुषदाय ।
पिय वियोग जननी मरन, करन न मूल्यो जाय ।।

रत्नावली के दोह (42/128) पृ० 156

मृत्यु : तुलसीदास की हार्दिक इच्छा थी कि इनका प्राण-त्याग काशी में ही हो और ऐसा ही हुआ भी । अपने अन्तिम समय में ये काशी के अस्सी घाट पर रहते थे । इनकी मृत्यु के विषय में निम्नलिखित दोहा अधिक प्रसिद्ध है-

संवत् सोरह सौ असी, असी गंग के तीर ।
श्रावण श्यामा तीज शनि, तुलसी तज्यो शरीर ।।

कुछ लोग सावन शुक्ला सप्तमी भी मानते हैं । मृत्यु का कारण काशी में फैली प्लेग की भयंकर बीमारी थी । अपने अन्तिम समय में अपने शारीरिक दुःख और बीमारी से अत्यन्त दुःखी थे। अपने अन्तिम समय में उन्होंने क्षेमकरी पक्षी को देखा था । संसार से जाने के समय उन्होंने यह दोहा कहा था-

''राम नाम जस बरनि कै, भयो चहत अब मौन ।
तुलसी के मुख दीजिये, अबहीं तुलसी सोन ।।

जन्म स्थान : गोस्वामी तुलसीदास के जन्म स्थान के विषय में विद्वानों में भारी मतभेद है। अभी तक यह विषय विवादास्पद है। क्षेत्र के मोह में अपने–अपने क्षेत्र के प्रति खींचातानी रही है। सभी ने अपने कथन की पुष्टि में जो तर्क प्रस्तुत किये हैं, वे तर्क बड़े ही सटीक हैं । मुख्य रूप से चार स्थान अधिक विवादास्पद हैं–

१. राजापुर (बाँदा), २. अयोध्या, ३. काशी और ४. सूकरखेत (सोरों) जनपद– एटा । इनके अतिरिक्त तारी, हाजीपुर (चित्रकूट) और हस्तिनापुर को भी कुछ विद्वानों ने गोस्वामी तुलसीदास का जन्म स्थान माना है ।

१. राजापुर जनपद बाँदा में स्थित है । इस स्थान के प्रमाण का खण्डन डा० रामदत्त भारद्वाज ने सटीक प्रमाण प्रस्तुत करके किया है । अन्य विद्वानों ने भी अपने–अपने मत प्रस्तुत किये हैं । रामनरेश त्रिपाठी तो इसकी वास्तविकता जानने की खोज में अक्टूबर सन् 1935 ई० में स्वयं निकल पड़े और भिन्न–भिन्न स्थानों पर होते हुए 20 अक्टूबर, 1935 ई० को सोरों जनपद एटा पहुँचे । पृ० 69

गोस्वामी तुलसीदास के जन्म स्थान की खींचातानी तो खूब हुई है किन्तु उसका कोई ठोस आधार नहीं है । वास्तविकता तो यह है गोस्वामी का जन्म स्थान जो भी रहा हो परन्तु इतना अवश्य है कि उन्होंने अपने जीवन काल में भ्रमण खूब किया और कहीं–कहीं इसकी चर्चा अपने काव्य में उन्होंने स्वयं भी की है । लेकिन उन्होंने अपने जन्म स्थान का स्पष्ट उल्लेख नहीं किया है ।

गुरु नरसिंह या नरहरिदास, गंगातट, ससुराल पास में बदरिका और सनाढ्य (शुक्ल) ब्राह्मण तथा जहाँ 'कुटिल कीट' अर्थात् 'कुटीला' नामक कीड़ा मिलता हो जो केकड़े की जाति का है । इसकी विशेषता यह है कि जन्म लेते समय यह कीड़ा अपनी माता का पेट फाड़कर निकलता है और तभी उसकी माता तुरन्त मर जाती है । इस 'कुटीला' कीट की उपमा गोस्वामी जी ने स्वयं अपने जन्म के विषय में दी है–

"तनु जन्यो कुटिल कीट ज्यों तज्यो मातु पिताहू ।"

इन लक्षण या प्रमाणों के अतिरिक्त वहाँ की भाषा, बोली, रीति–रिवाज आदि का भी बड़ा महत्व होता है । कितना ही कोई पढ़–लिखकर विद्वान हो जाय, सत्संगति पाकर सुधर जाय किन्तु कभी न कभी समयानुसार बचपन की बोली के शब्द मुख से निकल ही जाते हैं । इन तथ्यों के आधार पर यही निष्कर्ष निकलता है कि तुलसीदास की जन्म स्थली सोरों, जिला– एटा है । इसकी पुष्टि में गोस्वामी जी की धर्मपत्नी रत्नावली के उद्‌गार बड़े सशक्त हैं । उसके पिता दीनबन्धु पाठक सोरों के निकट बदरिया ग्राम के रहने वाले थे । उन दिनों सोरों और बदरिका या बदरिया

Scanned by CamScanner

के बीच गंगा की धारा प्रवाहित थी जो वर्तमान में वहाँ से मुड़ गई है । गंगा के दोनों किनारे जो अवशेष चिन्ह हैं वे इसके प्रमाण हैं । फिर विद्वानों के तर्क की अपेक्षा सरकारी लेख ही मान्य होंगे। मौलाना आजाद लाइब्रेरी, अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी से प्राप्त अभिलेखों के आधार पर गोस्वामी तुलसीदास का जन्म स्थान सोरों, जनपद–एटा ही मानना उचित रहेगा ।

"Tradition has it that in Akbar's reign, a holyman, Tulsi Das, a resident of Soron, in Parganah Aliganj of the Etah District, came to the jungle on the banks of the Jamuna, where Rajapur now stands, erected a temple, and devoted himself to prayer and meditation. His sanctity soon attracted followers, who settled around him, and as their numbers increased they began to devote themselves (and with wonderful success) to commerce as well as to religion."

दूसरा प्रमाण प्रस्तुत है–

"Rajapur was founded in the reign of Akbar by Tulsi Das, a devotee from Soron, who erected a temple and attracted many followers."

अर्थात् अकबर के शासन काल में सोरों से आये एक भक्त तुलसीदास ने राजापुर बसाया। उसने एक मंदिर का निर्माण कराया तथा बहुत से अनुयायियों को आकर्षित किया ।

उपर्युक्त ये दोनों अभिलेख राजापुर (बाँदा) के तर्क को निरस्त करते हैं और साथ ही साथ सूकर खेत अर्थात् सोरों, जनपद– एटा को तुलसीदास की जन्मस्थली प्रमाणित करते हैं । तुलसीदास के काव्य में ब्रजभाषा के शब्द ऐसे हैं जो सोरों जनपद में प्रचलित हैं । 'श्रीकृष्ण गीतावली' तो ब्रजभाषा में ही लिखी है । 'रामलल्ला नहछू', 'कवितावली', जानकी मंगल' आदि ग्रन्थों में जो रीति–रिवाज प्रस्तुत किये हैं वे सबके सब इस क्षेत्र से सम्बद्ध हैं । इनकी धर्मपत्नी रत्नावली ने जिस भाव और भाषा में अपने उद्‌गार प्रस्तुत किये हैं वे भी सोरों की संस्कृत से मेल खाते हैं। इन्हीं तथ्यों के आधार पर हमारे विचार में गोस्वामी तुलसीदास का जन्म स्थान सूकर खेत अर्थात् सोरों (एटा) ही है ।

'एक शूकर क्षेत्र गोंडा जिले में सरयू और घाघरा के संगम पर है, कुछ चरित लेखक उसी को तुलसी के गुरु का स्थान मानते हैं, पर प्राचीन शूकर क्षेत्र सोरों ही है, क्योंकि वही गंगा–तट पर है ।' पृ० 71

तुलसीदास के गुरु नरसिंह जी वैष्णव थे और सोरों के ही निवासी थे । दूसरे, तुलसीदास

Scanned by CamScanner

शिक्षक दिवस एवं वन महोत्सव कार्यक्रम

शिक्षक दिवस पर मंचासीन नगर विधायक श्री विवेक बसंल

विधायक श्री विवेक बसंल का माल्यार्पण करते सम्पादक डा. वाई. के. गुप्ता

महाविद्यालय के प्राचार्य डा. एल. सी. गौड द्वारा वृक्षारोपण

एस. वी. कालेज के पूर्व प्राचार्य डा. डी. के. गुप्ता एवं श्री मनोज यादव द्वारा वृक्षारोपण

वन महोत्सव के अवसर पर विभिन्न शिक्षकगणों द्वारा वृक्षारोपण

Scanned by CamScanner

का घर भी सोरों में था और परिवार भी । वह कसाइयों के बीच में था । इसलिए उनको यह बताना पड़ा कि—

''तुलसी तेरी झोंपड़ी, गंलकटियों के पास ।
जौ न करै सोई भरै, तू कत होत उदास ।।''

तीसरे, इनकी ससुराल सोरों के पास गंगा के दूसरे किनारे पर बदरिया गाँव थी । यह गाँव आज भी है । सावन के महीने में अपनी पत्नी से मिलने सोरों से बदरिया गंगा पार तैरकर गये थे। तुलसीदास की धर्मपत्नी रत्नावली भी पति की जन्मभूमि सोरों ही प्रमाणित करती है ।

''तीरथ आदि वराह जे, तीरथ सुरसरि-धार ।
याही तीरथ आय पिय, भजहु जगत-करतार ।।'' पृ० 99

वास्तविकता यह है कि गोस्वामी जी के समय में आज की तरह आवागमन के न तो साधन ही थे और न सड़कें ही थीं । अतः रिश्तेदारियाँ भी निकट ही होती थीं और वे सम्बन्ध भी प्रायः परिचितों में ही होते थे । अतः भौगोलिक दृष्टि से भी सोरों और बदरिया और ससुराल सब सही बैठता है । निष्कर्ष यह है भौगोलिक दृष्टि से, रीति रिवाज, भाषा, मकान की स्थिति, गुरु का सानिध्य और सनाढ्य (शुक्ल) ब्राह्मणों निवास आदि सभी दृष्टियों से गोस्वामी तुलसीदास का जन्म स्थान सोरों, जिला— एटा ही सही जान पड़ता है ।

वंश एवं परिवार : 'रामचरित मानस' के रचयिता गोस्वामी तुलसीदास को कुछ लोग सरयूपारीण ब्राह्मण बताते हैं । कुछ विद्वान् सशक्त प्रमाण देकर इन्हें सोरों (एटा) का गोत्र भारद्वाज तथा शासन 'शुक्ल' मानते हैं और कहते हैं वे सनाढ्य ब्राह्मण थे । ब्रजभाषा के श्री कृष्णोसक कवि तथा उनके पुत्र कृष्णदास क्रमशः तुलसीदास के चचेरे भाई और भतीजे थे ।

गोस्वामी तुलसीदास की वंशावली (6) पृ० 35

- नारायण शुक्ल
  - श्रीधर
  - शेषधर
  - सनक
  - सनातन
    - परमानंद
      - सच्चिदानन्द
        - आत्माराम
          - तुलसीदास
            - तारापति (मृत्यु)
        - जीवाराम
          - नन्ददास
            - कृष्णदास
          - चन्द्रहास
            - ब्रजचंद्र

तुलसीदास के पिता का नाम आत्माराम और माता का नाम हुलसी था । हुलसी के नाम की सार्थकता का प्रमाण यह भी है–

तुलसीदास की मित्रता अकबर बादशाह के प्रसिद्ध वजीर अब्दुर्रहीम खानखाना से थी । एक गरीब ब्राह्मण की कन्या के विवाह के लिए कुछ सहायता करने के लिए एक बार, तुलसी ने रहीम के पास यह आधा दोहा लिखकर, उसी ब्राह्मण के हाथ भेजा :–

''सुर तिय नरतिय नागतिय, अस चाहत सब कोय ।''

यह पढ़कर रहीम ने उस ब्राह्मण को कुछ धन दिया और उपर्युक्त दोहे की दूसरी कड़ी को पूरा करके उसे दोहे की दूसरी कड़ी यह थी :–

''गोद लिये हुलसी फिरे, तुलसी सो सुतहोय ।''

इनकी माता हुलसी की मृत्यु इनके जन्म के पाँचवें दिन हो गई थी । इनकी पत्नी का नाम 'रत्नावली' था जो बदरिया गाँव के निवासी दीनबन्धु पाठक पुत्री थी । गोस्वामी तुलसीदास के एक पुत्र भी उत्पन्न हुआ जो थोड़े दिन बाद संसार से चल बसा । उस पुत्र का नाम तारापति था । कहीं–कहीं तारापति के स्थान पर तारक भी कहा है । नन्ददास और चन्द्रहास गोस्वामी जी के चचेरे भाई थे ।

बचपन : गोस्वामी तुलसीदास की माता का स्वर्गवास तो जन्म के पाँचवे दिन हो ही गया था । लेकिन कुछ वर्ष बाद इनके पिता का भी देहान्त हो गया । अतः इनका बचपन अत्यन्त कष्टमय व्यतीत हुआ । इनका पालन–पोषण मुनिया नाम की दासी ने किया । मुनिया के पश्चात् उसकी सास चुनिया ने किया । जब वह भी न रही तो उदरपूर्ति के लिये दीन हीन एवं असहाय स्थिति में एक–एक रोटी के टूक के लिए घर–घर चक्कर लगाते फिरे । ऐसी दुर्दशा में इन्होंने किसी को सुजाति–कुजाति का विचार नहीं किया :–

टूकनिको घर-घर डोलत कँगाल बोलि,
बाल ज्यों कृपाल नतपाल पालि पोसो है ।

हनु० बाहुक (पद 29)

''जाति के सुजाति के कुजाति के पेटागि बस खाये टूक सबके विदित बात दूनी सो ।''

और भी देखिए–

''मातु पिता जग जाइ तज्यो विधि हूँ न लिखी कुछ भाल भलाई ।
नीच, निरादर भाजन, कादर, कूकर-टूकन लागि ललाई ।।''

इससे भी अधिक अपनी मार्मिक दशा का वर्णन तुलसी ने विनय पत्रिका में इन शब्दों में

Scanned by CamScanner

किया है –

असन-बसन बिनु बावरो जहँ-तहँ उठि धायो ।
महिमा-मान प्रिय प्रानते तजि खोलि खलनि आगे, खिनु-खिनु पेट खलायो ।।३।।

साँच कहौं, नाच कौन सो, जो न मोहि लोभ लघु हौं–

निरलज्ज नचायो ।।४।।

इतना ही नहीं, न जाने कितनी बार अनेक स्थलों पर तुलसीदास ने अपने बचपन की मनोव्यथा व्यक्त की है । इस समाज के दुर्व्यवहार से दुखी होकर उन्हें यहाँ तक विवश होना पड़ा–

''बारेतें ललात-बिललात द्वार-द्वार दीन,
जानत हो चारि फल चारि ही चनन को ।।'' (उ०/73)

गृहस्थ जीवन : बचपन के अपार कष्टों को झेलते हुए गुरु नरसिंह के सानिध्य में आने पर तुलसीदास ने शिक्षा प्राप्त की । युवावस्था प्राप्त होने पर निकट ही गंगा के उस पार स्थित बदरी (बदरिका) निवासी दीनबन्धु पाठक की पुत्री रत्नावली से इनका विवाह संवत् 1589 में हुआ । विवाह के समय रत्नावली की आयु केवल 12 वर्ष की थी और गोने के समय 16 वर्ष की थी । रत्नावली की माता का नाम दयावती था । इसके तीन भाई भी थे– १. शंकर, २. शिव और ३. शम्भू। कुछ दिन पश्चात् तुलसीदास के पुत्र उत्पन्न हुआ । उसका नाम तारापति (तारक) था, जो थोड़े दिन बाद ही इस संसार से चल बसा ।

''तारापति नामक सुपूत, भयो तासु बुधि बल अकूत ।
गयो दैव गति स्वर्ग धाम, विलपति रत्नावली वाम ।।'' पृ० 71, 85-87

गृहस्थ जीवन यापन हेतु तुलसीदास ने खेती, व्यापार, उद्योग आदि धन्धे किये और साथ ही रामकथा का प्रवचन कार्य भी करते रहे । खेतिहर और व्यापारी होने की–सी झलक उनकी कविता में मिलती है ।

''मध्य वयस धन हेतु गँवाई कृषी बनिज नाना उपाय ।'' पृ० 22

गृह-त्याग : सावन के महीने में गोस्वामी तुलसीदास रामकथा का प्रवचन करने हेतु कहीं बाहर गये हुए थे । इस अन्तराल में उनकी पत्नी अपने भाई के साथ अपने नैहर (माता के घर) बदरिया गाँव चली गई । बदरिया गाँव सोरों से कुछ फलाँग दूर गंगा के उस पार था रामकथा करके तुलसीदास जब अपने घर लौटकर आये तो वहाँ पत्नी को न पाकर तिलमिला उठे । वे तत्काल ससुराल चल दिये । उस समय आधी रात थी और वर्षा के जल के कारण गंगा का उफान पूरे यौवन पर था । ऐसी स्थिति में भी उन्होंने गंगा तैर कर पार की और ससुराल पहुँच गये ।

Scanned by CamScanner

आधी रात में साहस करके गंगा पार तैरकर जाना आश्चर्य की बात थी । अतः रत्नावली ने व्यंग्यात्मक शब्दों में पति से यह कहा–

''लाज न आवत आपको, दौरे आएहु साथ ।
धिक-धिक ऐसे प्रेम को, कहा कहौं मैं नाथ ।।
अस्थि चर्ममय देह मम, तामें जैसी प्रीति ।
तैसी जो श्रीराम मँह, होति न तौ भवभीति ।।''

पत्नी रत्नावली के उपदेशात्मक इस व्यंग्य बाण ने उनके हृदय को आहत कर दिया । इससे उनका सुसुप्त विवेक जागृत हो उठा । अतः रत्नावली को सोती हुई छोड़कर तत्क्षण संवत 1604 में गृहत्याग कर दिया ।

''बैस बारहीं कर गह्यो, सोरह गौन कराय,
सत्ताइस लागत करी, नाथ रतन असहाय ।।'' (6) पृ० 155
तुलसीदास का बचपन का नाम 'रामबोला' था ।
''राम को गुलाम नाम, रामबोला राख्यो नाम ।'' (वि०प०- पद 76)
''रामबोला नाम हौं गुलाम राम साहि को ।''

आधुनिक युग का सामान्य व्यक्ति होता तो उसी गंगा में डूब जाता और उससे कहकर जाता अथवा सल्फास जैसी विषैली टैबलेट खाकर आत्महत्या कर लेता या दूसरी स्त्री के साथ विवाह रचा लेता । किन्तु तुलसीदास ने ऐसा नहीं किया । उन्होंने पत्नी के इन वाक्यों को उपदेश के अर्थ में गृहण किया ।

''कटै एक रघुनाथ संग, बांधि जटा सिर केस ।
हम तो चाखा प्रेम रस, पतिनी के उपदेश ।।''

फलतः रत्नावली को सोती हुई छोड़कर बिना कुछ कहे– सुने तुलसीदास तत्क्षण रात में गृहत्याग कर चले गये ।

उपर्युक्त दोहा रत्नावली के निम्नलिखित दोहे का उत्तर है जो एक बार उसने तुलसीदास के पास लिखकर भेजा था–

''कटि की खीनी कनक सी, रहत सखिन सँग सोय ।
मोहिं फटे की डर नहीं, अनत कटे डर होय ।।

भ्रमण : अपने गुरु नरसिंह या नरहरिदास नरहर्यानंद के सानिध्य में रहकर ज्ञान में परिपक्वता प्राप्त की । उच्च शिक्षा के लिए शेष सनातन जी को सोंप दिया (6) पृ० 22 । इसके

Scanned by CamScanner

पश्चात् पत्नी रत्नावली का परित्याग करके तुलसीदास ने विभिन्न स्थानों पर भ्रमण किया। तुलसीदास ने संस्कृत साहित्य का गहन अध्ययन किया था। वे वेद, पुराण, उपनिषद्, दर्शन, ज्योतिष और अंकगणित के निपुण ज्ञाता थे। इसके साथ काव्य शास्त्र का पूर्ण ज्ञान था। हिन्दी–संस्कृत ही नहीं उन्हें अरबी और फ़ारसी के शब्दों का भी ज्ञान था। उनकी अद्‌भुत कवित्वं शक्ति उनकी विद्वत्ता प्रदर्शित करती है। उन्होंने अपने ज्ञानार्जन के विषय में स्वयं लिखा है–

''नाना पुराण निगमागम सम्मतं यद,
रामायणे निगदितं क्वचिद् न्यतोऽपि
स्वान्तः सुखाय तुलसी रघुनाथ गाथा,
भाषा निबन्धमति मंजुल मातनोति ।।'' रा०मा० (बा०/श्लोक 7)

इससे ज्ञात होता है कि उनमें चहुँमुखी प्रतिभा थी। जहाँ भी गये वहीं उनकी प्रतिभा का लोहा लोगों ने माना। गोस्वामी तुलसीदास ने अनेक स्थानों का भ्रमण किया। किन्तु काशी, अयोध्या, प्रयाग और चित्रकूट में अधिक समय व्यतीत किया। इनमें से उन्हें चित्रकूट अधिक प्रिय था। काशी में भी उनकी रुचि थी, और अन्तिम समय में काशी में ही प्राणों का त्याग किया। काशी में भी मुख्य रूप से चार स्थान थे। १. अस्सी घाट, २. गोपाल मंदिर, ३. संकट मोचन, ४. प्रह्लाद घाट। प्रह्लाद घाट पर तुलसीदास पं० गंगाराम जोशी के घर पर ठहरा करते थे। परन्तु खेद है कि काशी के पंडितों को गोस्वामी जी की उठती प्रतिभा रास नहीं आई। इसलिए उन्होंने उनको (तुलसीदास को) अकारण, अनेक बार यातनायें दीं। इन यातनाओं का उल्लेख गोस्वामी जी ने अपने ग्रन्थों में किया है। यदि गोस्वामी जी की जन्मस्थली काशी ही होती तो प्रारम्भ से वहाँ के विद्वान् उनकी प्रतिभा को उठने ही नहीं देते। द्वेष भावना तो तब जागृत हुई जब तुलसीदास काशी पहुँचे। उभरती हुई प्रतिभा के कारण ही दिल्ली के बादशाह ने उन्हें सम्मान के साथ दिल्ली बुलाया था।

अपने भ्रमण काल में गोस्वामी तुलसीदास तीर्थराज प्रयाग भी गये। इसके अतिरिक्त बाल्मीकि आश्रम पर भी गये थे। यही स्थान है जहाँ सीताजी का निर्वासन तथा लव–कुश का जन्म हुआ था। यह स्थान बारिपुर और दिगपुर नाम से विख्यात है।

जहाँ बालमीकि भए ब्याधतें मुनिंद साधु,
'मरा मरा' जपें सिख सुनि रिषि सात की।
सीय को निवास, लव-कुश को जनम थल,
तुलसी छुअत छाँह ताप गरै गातकी ।।

वारिपुर दिगपुर बीच बिलसति भूमि,
अंकित जो जानकी-चरन-जल जातकी ।।
कवितावली (उ०/138)

इन स्थानों के अतिरिक्त अनेक स्थानों पर भी तुलसीदास ने भ्रमण किया । उनमें प्रमुख मथुरा जिले में वृन्दावन है । जब वे गोपाल–मंदिर में पहुँचे, तब श्रीकृष्ण की मूर्ति के सामने खड़े होकर भक्ति भाव से यह दोहा पढ़ा :–

''कहा कहौं छवि आज की, भले बने हो नाथ ।
तुलसी मस्तक तब नवै, धनुष-बान लो हाथ ।।'' पृ० 105

इसे सुनकर श्रीकृष्ण की मूर्ति ने श्रीराम का रूप धारण कर लिया और तब तुलसीदास ने उनको नमन किया । यह दृश्य वहाँ उपस्थित लोगों ने देखा कि तुलसीदास के दोहा पढ़ते ही भगवान् श्रीकृष्ण की मूर्ति का स्वरूप धनुष–बाण के साथ श्रीराम जैसा रूप हो गया था ।

रामनरेश त्रिपाठी के अनुसार आमेर के महाराजा मानसिंह और उनके भाई जगत सिंह तुलसीदास के प्रति श्रद्धा रखते थे, और वे प्रायः उनके पास आया करते थे । जनकपुर, नैमिषारण्य लखनऊ, संडीला, मलीहाबाद, मड़ियाहू (जौनपुर) और बिछूर में भी तुलसीदास गये थे ।

तुलसीदास की रचनाएँ : तुलसीदास द्वारा रचित ग्रन्थों में सर्वमान्य एवं प्रामाणिक ग्रन्थ ये हैं– १. रामचरित मानस, २. विनय पत्रिका, ३. गीतावली, ४. कविता वली, ५. दोहावली, ६. श्रीकृष्ण गीतावली, ७. पार्वती मंगल, ८. जानकी मंगल, ६. रामलला नहछू, १०. वैराग्य–संदीपिनी, ११. रामाज्ञा प्रश्न, १२. बरवै रामायण, कुछ विद्वान सतसई को भी इस श्रेणी में सम्मिलित करते हैं, जो सार्थक भी है । गणित और भक्ति की यह अनुपम रचना है ।

इन ग्रन्थों के अतिरिक्त हनुमान बाहुक, झूलना रामायण, कुण्डलिया रामायण, छप्पै रामायण, रोला रामायण, छन्दावली रामायण आदि ग्रन्थ भी गोस्वामी तुलसीदास के ही माने जाते हैं । फिर इनकी प्रामाणिकता के विषय में ऊहापोह की स्थिति बनी हुई है ।

रामचरित मानस और पार्वती मंगल– इन दो कृतियों को छोड़कर अन्य सभी के रचनाकाल के निर्धारण में भिन्न–भिन्न मत एवं तर्क प्रस्तुत किये गये हैं । रामचरित मानस की रचना तिथि स्वयं तुलसीदास ने ही प्रारम्भ में दी है ।

''संवत् सोरह सै एक तीसा । करउँ कथा हरिपद धरिसीसा ।
नौमी भौम बार मधुमासा । अवधपुरी यह चरित प्रकासा ।।''
रा०मा० (बा०/34/2-3)

Scanned by CamScanner

इससे स्पष्ट है कि संवत् 1631 में, चैत्र की नवमी को मंगलवार के दिन अयोध्या में 'रामचरित मानस' का प्रकाश हुआ । इसी प्रकार 'पार्वती–मंगल' के प्रारम्भ में इसकी रचना तिथि यह दी है–

''जय संबत फागुन सुदि पाँचे गुरु छिनु ।
अस्विनि बिरचेउँ मंगल सुनि सुख छिनु छिनु ।। पार्वती मंगल (5)

जय संवत् गणना के अनुसार संवत् 1643 माना जाता है । सं० 1643 में ही 'जानकी मंगल' और 'रामलला नहछू' की रचना का विद्वान् अनुमान करते हैं ।

उपर्युक्त सभी ग्रन्थों के ज्ञान की प्रखर प्रतिभा लक्षित होती है । तुलसी तुलसी की तरह ही गुणकारी हैं, जो सांसारिक दुखों का निवारण करते हैं । तुलसीदास जैसा महान् भक्त एवं कवि अमर रहेगा– ऐसा मेरा विश्वास है ।

श्री तुलसीदासाय नमः ।

सन्दर्भ ग्रन्थ :

1. रामनरेश त्रिपाठी : तुलसीदास और उनका काव्य । राजपाल एण्ड सन्ज़, दिल्ली, 1951
2. रामदत्त भारद्वाज : गोस्वामी तुलसीदास : व्यक्तित्व दर्शन, साहित्य ।
3. अयोध्यानाथ शर्मा तथा रामबहोरी शुक्ल, संपा० : पार्वती मंगल तथा जानकी मंगल । गौतम ब्रादर्स एंड कम्पनी ।
4. विनय पत्रिका । गीता प्रेस, गोरखपुर, सं० 2038
5. कविता वली । गीता प्रेस, गोरखपुर, सं० 2038
6. रामदत्त भारद्वाज : गोस्वामी तुलसीदास की धर्मपत्नी रत्नावली । गंगा–ग्रंथागार, 36 लाटूश रोड, लखनऊ, सं० 2003 वि०, दुलारेलाल, कवि कुटीर, लखनऊ ।

अन्य :

7. इम्पीरियल गज़टियर ऑफ इण्डिया, भा० 11, 1886 पृष्ठ 385-386
8. स्टेटिस्टीकल डिस्क्रिपशन एण्ड हिस्टोरीकल एकाउन्ट ऑफ द नौर्थ–वैस्टर्न प्रौविन्सेज ऑफ इण्डिया, 1874, भ० 1, पृष्ठ 572-573

★ ★ ★ ★

Scanned by CamScanner

मन की शक्ति

लता वार्ष्णेय, बी०एड०

मनुष्य जो भी कार्य करता है, सोचता है, विचारता है । वे सब कार्य 'मन' में उत्पन्न होते हैं । अतः मानव मूलतः 'मन' प्रधान है ।

'मन' ही मनुष्य के बन्धन और मुक्ति का मूल कारण है । मनुष्य का 'मन' बहुत ही चंचल होता है । वह किसी एक बात पर दृढ़ नहीं रहता । वह कल्पना में विचरण करता रहता है, बिना किसी कारण के निरर्थक प्रयास और हरकतें करता रहता है । न वह किसी एक स्थिति में रहता है और न किसी एक जगह ठहरता है । 'मन' हिरन की तरह चौकड़ी भरता रहता है । जिस प्रकार हिरन कभी एक जगह स्थिर नहीं रहता इधर–उधर भटकता रहता है । वह कभी एक जगह स्थिर नहीं रहता ।

मन क्या है ? जो हमें दूसरों द्वारा प्राप्त होता है जिसका मिलना ही मन है या जो भी हम सोचते विचारते हैं वह मन है ।

जिसका मन वश में है वही सच्चा स्वतन्त्र और आत्म ज्ञानी है, इसके विपरीत जो व्यक्ति मन के वश में होकर उस पर नियन्त्रण नहीं कर पाता वह बन्धन मुक्त दुःखी है । मन मनुष्य जीवन की धुरी है । मन की सत्ता के सामने घर मानने पर व्यक्ति स्वयं से हार जाता है, और मन की जीत पर ही व्यक्ति आत्मा पर भी विजय प्राप्त कर लेता है ।

भगवान श्री कृष्ण ने अर्जुन को गीता में समझाया कि– "हे अर्जुन इस शरीर रूप रथ का सारथी यह 'मन' है और आत्मा रूपी रथी इसमें सवार है । अतः जीवन की यात्रा में मन का दुरुस्त होना आवश्यक है ।" व्यक्ति जैसा सोचता है । जिस प्रकार शरीर के वाहर की सफाई महत्त्वपूर्ण है उसी प्रकार शरीर के अन्दर मन की पवित्रता भी महत्त्वपूर्ण है । 'मन' को हमेशा अच्छे–अच्छे विचारों एवं सद्भावनाओं से भरा रखने का प्रयास करना चाहिए ।

शिष्टता, सौम्यता, मृदुता, दया, मैत्री, करुणा आदि सद्विचारों से पूरित सदैव सन्मार्ग पर ही चलना चाहिए । कुमार्ग पर भूल कर भी कदम न रखना चाहिए । आज के विद्यार्थी को अध्ययनशील होने के साथ–साथ मननशील होने के लिए मन की शक्ति को पहचानकर उसका पूरा–पूरा लाभ उठाना चाहिए । यदि कक्षा में बैठा विद्यार्थी यदि शरीर से कक्षा में बैठा है और उसका मन कहीं अन्यत्र विचरण करता है । तो शरीर का कक्षा में रहते हुए भी कोई लाभ नहीं मिल सकता । मन

Scanned by CamScanner

को निरन्तर अस्थिर, चंचल, अरक्ष्य एवं दुर्निवार बताया है कि इसे बिना अभ्यास और वैराग्य के वश में करना कठिन है । इस चंचल चित्त (मन) को केवल बुद्धिमान ही वश में कर सकता है । जैसा कि 'भगवान बुद्ध' ने कहा है–

दुन्निग्गहस्स लहुनो यत्थका निपातिनो ।
चित्तस्स दमथो साधु चित्तं दन्तं सुखवहं ।।

(पालिभाषा)

अर्थात्– जो मन दुर्निग्रह है, कठिनता से नियन्त्रित होता है । पतनशील है तथा स्वेच्छाचारी है । उस चित्त का दमन करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि दमित चित्त सुखकारी होता है ।

यह 'मन' बड़ा चंचल है एवं कठिनाई से वश में होता है इसको गहन अभ्यास तथा वैराग्य भावना से ही वश में किया जा सकता है । कबीर जैसा मस्त, मनमौजी, फकीर भी मन की प्रचण्ड शक्ति के आगे विवश होकर कह उठता है–

मन तोहे केहि विधि समझाऊँ । घोड़ा होय तो लगाम लगाऊँ ।।
ऊपर जीन कसाऊँ । होय सबार तेरे पर बैठूँ चाबुक देके चलाऊँ ।।

परीक्षा के दिनों यदि मन गहन अध्ययन बार–बार पढ़ने से ऊब जाता है और वहीं जाकर खेलने या मनोरंजन की ओर भागता है तो हम उस पर नियन्त्रण नहीं कर पाते इसी कारण परीक्षा में कम दिमाग लगता है तो उसे रोकना उस पर अंकुश लगना बहुत जरूरी है । 'मन' अनेक विचारों और आकांक्षाओं के कारण इधर–उधर भटकता रहता है क्योंकि व्यक्ति सदैव विचारमग्न रहता है। उसकी आकांक्षाओं की पूर्ति नहीं होती वह प्रत्येक चीज को पकड़ना चाहता है । 'मन' कभी एक जगह स्थिर नहीं रहता उसे स्थिर रखने के लिए विचारशील होना आवश्यक है । मन में हमेशा अच्छे–अच्छे विचारों को जन्म देना चाहिए और दुर्गुण एवं दुर्विचारों से दूर ही रहना चाहिए जैसे विचार 'मन' में आते हैं वैसी ही सोच बन जाती है और व्यक्ति उस कार्य को पूरा करने के लिये उस ओर प्रवृत्त हो जाता है । 'मन' को खुली छूट न देकर वश में करना चाहिए ।

गौतमबुद्ध जी के विचारनुसार : "जिस प्रकार शिल्पी व्यक्ति किसी भी कार्य को स्वेच्छा से कर लेता है और पानी ले जाने वाला पानी को स्वेच्छा से ले जाता है और बाण निर्माता बाण को स्वेच्छा से मोड़ देता है, बढ़ई लकड़ी को स्वेच्छा से झुका देता है, उसी प्रकार विद्वान व्यक्ति अपने :मन' को वश में कर लेते हैं ।"

★ ★ ★ ★

Scanned by CamScanner

आत्म चिन्तन

चन्द्रमोहन, बी०एस०सी० द्वितीय वर्ष

व्यर्थ खो रहे हो होश, किसको दे रहे हो दोष,
पहले आप स्वयं से मंत्रण तो कीजिए ।
सिद्ध होगा हर कर्म, कर्म ही महान धर्म,
पहले महान कर्म की कल्पना तो कीजिये ।
झाँकिये सागर व्योम में आपको मिलेगा सोम,
पहले धरा को अलंकृत तो कीजिये ।
ईस्ट होगा पास जब सामने प्रकाश तब,
पहले भक्ति भाव से प्रार्थना तो कीजिये ।
देह यह व्यर्थ नहीं, मत कहो समय नहीं,
देह को काव्य में विलीन तो कीजिये ।
बाद में निहारिये कली के होठ लाला,
पहले दर्द कष्ट को चूमना तो सीखिये ।
धूल हाँ भले हैं ! धूल-धूल में खिलेंगे फूल,
पहले एक बार आत्म शक्ति तो कीजिये ।
लक्ष्य मेरा ही महान, कर्म देता हो महान,
पानी है सफलता मुझे मन में तो ठान लीजिये।
उजालो की तरह भविष्य हो उज्जवल तुम्हारा,
तुझको पलको पर बैठाये यह संसार सारा।
बुलंदियों की ऊँचाइयों को छू लो तुम एक दिन,
तुझको देखता रह जाय हर दुश्मन तुम्हारा।
व्यर्थ खो रहे हो होष किसको दे रहे हो दोष,
पहले आप स्वयं से मंत्रणा तो कीजिये ।
मेहनत वह चाबी है जो स्वयं किस्मत का दरवाजा खोल देती है ।

बेरोजगार

चौ० नरेन्द्र सिंह, बी०कॉम० द्वितीय वर्ष

एक दिन शर्मा जी ने मुझे चाय पर बुलाया,
अपने चार बेटों से मेरा परिचय कराया ।
यह जो खाट पर लेटा है, मेरा बडा बेटा है।
लन्दन से आया है, इन्जीनियर की डिग्री लाया है।
दूसरा जो नल पर पानी भर रहा है,
एम०ए० कर चुका है, पी०एच०डी० कर रहा है ।
तीसरा एम०बी०बी०एस० पास है,
नाम उसका हर्ष है, पर रहता उदास है ।
चौथे का दिमाग जरूरत से ज्यादा हाई है,
पढ़ लिख नहीं पाया है, इसलिए नाई है ।
अपना हेयर कटिंग सेलून चलाता है,
अच्छे-अच्छों की हजामत बनाता है ।
मैंने कहा शर्माजी घर का रेपुटेशन सम्भालिए,
बाकी सब ठीक है, पर इस नाई को घर से निकालिए।
शर्मा जी बोले भाई निकाल तो दूँ,
पर आज कल यह बड़े काम आ रहा है ।
बाकी सब बेरोजगार है,
घर का खर्च यही तो चला रहा है ।

नववर्ष मंगल कामनाएँ

चौ० नरेन्द्र सिंह, बी०कॉम० द्वितीय वर्ष

सभी दिलों की इक धड़कन को,
मैं हम बात कहना चाहता हूँ ।
पंछियों की सुरीली चहचहाट से,
मैं एक गीत पिरोना चाहता हूँ ।
फूलों की महकती गलियों से,
मैं एक शर्मिली कली देना चाहता हूँ ।
चाँद और आफताब की किरणों से,
मैं इक रश्मि गूँथ देना चाहता हूँ ।
जीवन में आने वाले हर नये पल को,
मैं एक नव जीवन देना चाहता हूँ ।

Scanned by CamScanner

आज की महंगाई के ऊपर कविता

इन्द्र प्रताप सिंह, बी०एड०

1. ऐसी महंगाई में मेहमान चले आते हैं,
गेहूँ तो मिलता नहीं मक्का बड़ी तेज है,
बाजरे को वो खाते नहीं फिर भी चले आते हैं ।
2. ऐसी महंगाई में मेहमान चले आते हैं,
सब्जी तो मिलती नहीं दालें बड़ी तेज हैं,
चटनी से वे खाते नहीं फिर भी चले आते हैं ।
3. ऐसी महंगाई में मेहमान चले आते हैं,
दारू तो मिलती नहीं बीयर बड़ी तेज है,
थर्रा को वो पीते नहीं फिर भी चले आते हैं ।
4. ऐसी महंगाई में मेहमान चले आते हैं,
चारपाई तो मिलती नहीं बैड बड़े तेज हैं,
जमीन पर वो सोते नहीं फिर भी चले आते हैं ।
5. ऐसी महंगाई में मेहमान चले आते हैं,
खुद भी चले आते हैं औरों को साथ ले आते हैं।
6. ऐसी महंगाई में मेहमान चले आते हैं,
कम्बल तो मिलता नहीं रजाई बड़ी तेज है,
चद्दर को वो ओढ़ते नहीं फिर भी चले आते हैं।
7. ऐसी महंगाई में मेहमान चले आते हैं,
तेल तो मिलता नहीं घी बड़ा तेज है,
डालडा को वो खाते नहीं फिर भी चले आते हैं।
8. ऐसी महंगाई में मेहमान चले आते हैं,
चूल्हा तो मिलता नहीं लकड़ियाँ बड़ी तेज हैं,
गैस का पका वो खाते नहीं फिर भी चले आते हैं।
9. ऐसी महंगाई में मेहमान चले आते हैं,
दूध तो मिलता नहीं ठन्डा बड़ा तेज है,
चाय वो पीते नहीं फिर भी चले आते हैं ।
ऐसी महंगाई में मेहमान चले आते हैं ।।

शिक्षा Education

E - Etiquate शिष्टाचार – नम्रता, मधुरता का आचरण बनायें ।

D - Discipline अनुशासन – जीवन की सर्वोपरि आवश्यकता ।

U - Universal Brotherhood विश्व बन्धुत्व संसार के सभी प्राणी बन्धु हैं ।

C - Creatiwity सृजनात्मकता– निरन्तर सृजन क्रिया करते रहें ।

A - Awareness जागृति– जीवन इसी का नाम है ।

T - Transfermation रूपान्तर–संस्कारित बनें ।

I - Integity एकात्मकता– सबमें एकता हो ।

O - Optimist आशावादी– जीवन का आधार आशा पर टिका है ।

N - Nobility सज्जनता– जीवन में भारी मूल्य होता है ।

शिक्षा का अर्थ समझकर जीवन को सफल बनायें ।

- डॉ० अमित भार्गव, प्रवक्ता वाणिज्य विभाग

Scanned by CamScanner

विद्यालय एवं कक्षा का वातावरण

डा० रेखा शर्मा, प्रवक्ता बी०एड० विभाग

सीखने की प्रक्रिया सामाजिक संबंधों के ताने–बाने में लगातार चलती रहती है जब शिक्षक एवं विद्यार्थी औपचारिक एवं अनौपचारिक रूप से अन्तःक्रिया करते हैं । विद्यालय शिक्षार्थियों के समुदाय के लिए, जिसमें शिक्षक और विद्यार्थी दोनों आते हैं संस्थागत स्थान होते हैं अपने मित्रों के साथ विद्यालय के मैदान में खेलना, खाली समय में बैंच पर बैठकर बातें करना, सुबह की प्रार्थना, उत्सवों एवं विशेष अवसरों पर उपस्थित रहना आदि गतिविधियाँ इस समुदाय को जोड़ते हुए उसे एक शैक्षिक समुदाय की पहचान देती है ।

विद्यालय एवं कक्षा के वातावरण को किस प्रकार व्यवस्थित किया जाए कि इस तरह की अन्तःक्रियाएं सीखने सिखाने को समर्थन एवं बढ़ावा दे । कालेज का एक ऐसे संदर्भ की तरह पोषण कैसे किया जाए जिसमें बच्चे स्वयं को सुरक्षित, खुश एवं स्वीकृत महसूस करें और जिसे अध्यापक सार्थक एवं व्यावसायिक रूप से संतोषजनक पाएं ।

भौतिक वातावरण : चेतन और अचेतन रूप से वच्चे संरचित या असंरचित समय में अपने विद्यालय के भौतिक वातावरण से निरंतर अन्तःक्रिया करते रहते हैं । इसलिए कक्षा कक्षों में पर्याप्त प्राकृतिक रोशनी हो उन्हें बच्चों के काम को कक्षा की दीवारों और कालेज में विभिन्न स्थानों पर लगाकर कक्षा कक्षों को और अधिक जीवंत व प्रफुल्लित बनाया जा सकता है, कालेज के अध्यापकों, प्रशासकों एवं वास्तुकारों के संगठित प्रयासों और आसान नवाचारों से बदला जा सकता है ।

विद्यालय का भवन उसकी सबसे मँहगी भौतिक संपत्ति होता है उससे सर्वाधिक शैक्षिक मूल्य निकालना चाहिए । भवन के नवीनीकरण या निर्माण के समय सृजनात्मक एवं व्यावहारिक समाधानों का प्रयोग करके भवन के शैक्षिक मूल्यों को अधिकतम तक बढ़ाया जा सके ।

सक्षम बनाने वाले वातावरण का पोषण : सार्वजनिक स्थल के रूप में कालेज में समानता, सामाजिक विविधता और बहुलता के प्रति सम्मान का भाव होना चाहिए, साथ ही बच्चों के अधिकारों और उनकी गरिमा के प्रति सजगता का भाव होना चाहिए ।

औसतन शिक्षक और विद्यार्थी प्रतिदिन छः घंटे और एक वर्ष में 1000 घंटे विद्यालय में बिताते हैं । अतः जिस भौतिक संदर्भ में वे काम करते हैं वह समान, आरामदेह एवं सुखद होना चाहिए ।

शिक्षक, प्राचार्य तथा शिक्षा समितियों को राज्य के भौतिक ढांचागत सुविधाओं को सरकारी मानकों से अवगत होना चाहिए ।

सभी बच्चों की भागीदारी :

- समावेशी शिक्षा का मतलब सबको समाविष्ट करने से है ।
- विकलांगता एक सामाजिक जिम्मेदारी है इसे स्वीकार करना है ।
- बच्चे फेल नहीं होते हैं, वे केवल स्कूल की असफलता दर्शाते हैं ।
- प्रावधान करें बाधाएँ न गढ़ें, बच्चों की जरूरतों के साथ सामंजस्य बिठाएं ।
- सहभागिता हमारी शक्ति है– जैसे स्कूल समुदाय की, स्कूल शिक्षक की, शिक्षक–शिक्षक की, शिक्षक बच्चों की, बच्चों–बच्चों की, शिक्षक अभिभावक की, स्कूली तंत्र एवं अन्य तंत्रों की सहभागिता ।

समावेशन की नीति : समावेशन की नीति को हर पहली स्कूल और सारी शिक्षा व्यवस्था में व्यापक रूप से लागू किए जाने की जरूरत है अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करने के मौके और सहपाठियों के साथ बाँटने के मौके देना बच्चों में प्रोत्साहन और जुड़ाव को पोषण देने के शक्तिशाली तरीके हैं ।

प्रतियोगिता पर अत्यधिक बल और व्यक्तिगत सफलताएँ कई स्कूलों की पहचान बनती जा रही है ।

'समाज विद्यालय' का आदर्श, जिसकी वकालत चार दशक पहले कोठारी आयोग ने की थी आज भी वैध है । स्कूल प्रशासकों और शिक्षकों को यह समझना चाहिए कि जब भिन्न सामाजिक–आर्थिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि और भिन्न क्षमता स्तर वाले लड़के लड़कियाँ एक साथ पढ़ते हैं तो कक्षा का वातावरण और भी समृद्ध और प्रेरक ही जाता है ।

अनुशासन और सहभागी प्रबंधन : शिक्षकों और विद्यार्थियों में परस्पर निर्भरता होती है, खासकर आज के दौर में सब सीखने का काम सूचना की उपलब्धि पर निर्भर करता है और ज्ञान का सृजन उन संसाधनों की नींव पर आधारित होता है जिनके केन्द्र में शिक्षक होता है ।

वर्तमान में स्कूल के नियम और मानक (परंपराएँ) विद्यार्थियों के 'अच्छे' और 'उपयुक्त' व्यवहार को परिभाषित करते हैं अनुशासन बनाए रखना ज्यादातर शिक्षकों एवं वयस्क अधिकारियों का विशेषाधिकार होता है ।

अभिभावकों और समुदाय के लिए स्थान : स्कूल निर्देशित शिक्षा का स्थान होता है लेकिन ज्ञान सृजन में तो निरंतरता होती है । अतः वह स्कूल के बाहर भी होता रहता है और स्कूल के बाहर की दुनिया को सीखने का स्रोत मानने में शुरूवाती प्रोत्साहन मिलेगा । स्थानीय शासन एवं स्कूल की मदद से बच्चों को सूचना की खोज, नियोजन मूल्यांकन एवं प्रबोधन के मौके दिए जाएँ जिससे उन्हें लोकतांत्रिक प्रक्रिया में भाग लेने के अवसर मिलें । व्यावसायिक प्रशिक्षण के मानक तय करने में भागीदार बनें ।

Scanned by CamScanner

पाठ्यचर्या के स्थल और अधिगम के संसाधनः

(क) पाठ और पुस्तकें : सुधरी हुई पाठ्य पुस्तकें जो सावधानी पूर्वक लिखी और नियोजित की गई हों, व्यावसायिक रूप से संपादित और जाँची गई हों और जो बच्चों को केवल तथ्यात्मक जानकारी न देकर अन्तःक्रिया के मौके दें, महत्वपूर्ण होती है । विषय का शब्द कोश तैयार कर किताबों को परिभाषाओं और विभिन्न प्रकार की सूचनाओं के बोझ से बचाया जा सकता है जिससे शिक्षक को यह मौका मिलेगा कि वह अवधारणाओं की समझ पर बल दे पाए ।

(ख) पुस्तकालय : स्कूल पुस्तकालय काफी समय से नीतिगत सुझावों का हिस्सा रहे हैं । शिक्षकों और विद्यार्थियों दोनों को ही इस बात के लिए प्रोत्साहित और प्रशिक्षित करने की जरूरत है कि वह पुस्तकालय को अधिगम, आनंद एवं तन्मयता के साधन के रूप में इस्तेमाल करें।

(ग) शैक्षिक तकनीकी : अगर शिक्षण तकनीक का उपयोग पाठ्यचर्या के सुधार के लिए होना है तो शिक्षकों और बच्चों को केवल उपभोक्ता की तरह नहीं बल्कि सक्रिय उत्पादकों के रूप में ही देखना होगा । शिक्षण तकनीक के लिए बनाए गए कार्यक्रमों को निष्क्रिय रूप से देखने और सुनने के बदले अगर उपयुक्त तरीके से शैक्षिक तकनीकी में उत्पादन के अनुभव हों तो देश के तकनीकी संसाधनों का कहीं बेहतर उपयोग किया जा सकता है ।

(घ) उपकरण और प्रयोगशालाएँ : उपकरण और प्रयोगशालाएँ कालेज को एक सृजनात्मक स्थान बनाने के लक्ष्यों को पूरा करने में तभी मदद कर सकते हैं जब हम संसाधनों के लिए सतर्क योजना बनाएँ ।

(ड) बहुलता और वैकल्पिक सामग्रियों की आवश्यकता : भारतीय समाज की बाहुल्यवादी और विविध प्रकृति निश्चित रूप से यह मांग करती है कि न केवल विविध प्रकार की पाठ्य पुस्तकें छापी जाएँ, बल्कि अन्य सामग्री भी तैयार की जाएँ ताकि बच्चों की रचनात्मकता, सहभागिता और रूचियों का इस तरह विकास हो सके कि उनके अधिगम में बढ़ोतरी हो ।

समय : 1988 की पाठ्यचर्या की रूप रेखा में समय सीमा 200 दिनों की निर्धारित है, हम इसके भीतर से राह निकाल सकते हैं ताकि बच्चों का स्कूल में व्यतीत हुआ कुल समय बच्चों के शिक्षण के लिहाज से उपयोगी हो ।

कालेज के वार्षिक कलैंडर को कुछ अधिक विकेंद्रीकृत किया जाए ताकि वह स्थानीय मौसम और त्यौहारों के मुताबिक हो सके । कालेज की दैनिक, साप्ताहिक, मासिक, सात्विक और वार्षिक योजना में विविधताओं और बंधे हुए कामों का मिश्रण होना चाहिए जिसमें नित्यचर्या और विविधता का उचित अनुपात रहे 'कार्य का समय' की अवधारणा हिसाब लगाने का एक तरीका है जिसके द्वारा यह पता लगाया जा सकता है कि बच्चे कितना समय अधिगम के लिए सक्रियता से देते हैं इसके अंतर्गत सुनने, पढ़ने लिखने, गतिविधि करने, विचार विमर्श

Scanned by CamScanner

करने में लगा समय आता है । विद्यार्थियों के लिए विशेषकर जब वह उच्च कक्षाओं में जाते हैं तब पाठ्यचर्या तथा अध्ययन की योजना बनाते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि उनसे जो कुल अध्ययन समय की अपेक्षा है उसमें स्व–अध्ययन या गृहकार्य एवं आमने सामने के अध्ययन का समय शामिल हो ।

शिक्षक की स्वायत्तता और व्यावसायिक स्वतंत्रता : शैक्षिक माहौल बनाने के लिए शिक्षकों की स्वायत्तता आवश्यक है ताकि वे बच्चों की विविध जरूरतों का ध्यान रख सकें । जितनी आजादी, इज्जत और लचीलापन शिक्षार्थी को चाहिए उतना ही शिक्षक को भी । फिलहाल तो प्रशासनिक ऊँच–नीच एवं नियत्रण, परीक्षाएँ, पाठ्यचर्या सुधार का केन्द्रीकृत नियोजन ये सभी शिक्षक और मुख्य शिक्षक की स्वायत्तता पर तमाम प्रतिबंध लगाते हैं । अगर कहीं पाठ्यचर्या में खुलेपन का अवसर मिलता भी है तब भी शिक्षक इतने आत्मविश्वासी नहीं हो पाते कि वे अपनी स्वायत्तता का ऐसे उपयोग कर लें कि प्रशासन भी अलग तरह से काम करने के कारण खफा न हो । इसीलिए यह जरूरी है उनको विकल्प चुनने में और स्वायत्तता को महसूस करने में समर्थन दिया जाए । शिक्षकों और प्रधानाध्यापकों के रिश्ते समानता और पारस्परिक सम्मान पर आधारित होने चाहिए और निर्णय बातचीत एवं चर्चा करने के लिए जाने चाहिए ।

गतिविधियों के वार्षिक, मासिक और साप्ताहिक कैलेंडर में समीक्षा और योजना के लिए शिक्षकों के पारस्परिक संपर्क के लिए जगह होनी चाहिए । एक ऐसे वातावरण के विकास की जरूरत है जिसमें शिक्षकों में मिलजुल कर काम करने की भावना का विकास हो ।

चिंतन और नियोजन के लिएं समय :

- प्रतिदिन कम से कम 45 मि० का समय दिन भर के कामकाज की समीक्षा के लिए होना चाहिए ।
- साप्ताहिक आधार पर अधिगम का जायजा लेने प्रस्तावित परियोजनाओं और गतिविधियों के विस्तार की योजना बनाने और अगले हफ्ते इकाई योजना बनाने के लिए ।
- मासिक आधार पर अपने काम की समीक्षा करने और अपने समूह के लिए नियोजित शैक्षिक गतिविधियों की रूपरेखा का आंकलन करने के लिए ।
- वर्ष के आरंभ और अंत में स्कूल की वार्षिक योजना तैयार की जानी चाहिए जिसमें ऐसी गतिविधियाँ हों कि सभी विद्यार्थी भाग ले सकें, जैसे कि दी जाने वाली स्थानीय छुट्टियों, वार्षिक कार्यक्रम (राष्ट्रीय कार्यक्रम, खेलकूद कार्यक्रम, सांस्कृतिक कार्यक्रम) ।
- वर्तमान में जो समय सेवा काल के दौरान दिए जा रहे प्रशिक्षण के लिए है उसमें से कुछ समय इस तरह की समीक्षा, चिंतन और इस तरह के नियोजन के लिए दिया जा सकता है ।
- संकुल स्तर पर एक विषय या एक स्तर के शिक्षकों की मासिक बैठकों का आयोजन किया जाए वे आगामी माह के शिक्षण की साथ–२ तैयारी कर लें और आपस में एक दूसरे के विचार सुन पाएँ ।

Scanned by CamScanner

ग्लोबल वार्मिंग

डा० अन्तिमा कुलश्रेष्ठ, प्रवक्ता वनस्पति विज्ञान

कुछ समय से गर्मियों के मौसम की अवधि और औसत तापमान कुछ बढ़ा सा रहता है । अब सर्दियों का मौसम भी उतना ठण्डा नहीं रहता है जितना कि कुछ सालों पहले हुआ करता था, मौसम वैज्ञानिक इस परिवर्तन को "ग्लोबल वार्मिंग" की संज्ञा दे रहे हैं । आसान शब्दों में कहें तो ग्लोबल वार्मिंग का अर्थ है पृथ्वी के तापमान में वृद्धि और इसके कारण मौसम में होने वाला परिवर्तन । धीरे-धीरे हमारी पृथ्वी का तापमान बढ़ रहा है और यह समस्या किसी एक देश की नहीं, पूरी दुनिया की है ।

ग्लोबल वार्मिंग का कारक : जब वैज्ञानिक ग्लोबल वार्मिंग और इस पर लगाम कसने की बात कहते हैं तो उनका आशय यह होता है कि मानवीय गतिविधियों के कारण पृथ्वी के तापमान में बढ़त पर अंकुश लगाया जाये । यह बात सोचनीय है कि इंसान इतनी बड़ी पृथ्वी का तापमान कैसे घटा बढ़ा सकता है लेकिन यह 100 फीसदी सच है । ग्लोबल वार्मिंग का सबसे बड़ा कारण "ग्रीन हाऊस' गैसों की बढती मात्रा है जिसके लिये मनुष्य के क्रिया कलाप ही जिम्मेदार है ।

ग्रीन हाऊस प्रभाव : ग्रीन हाऊस शब्द कांच के बने ऐसे विशाल हाल के लिये इस्तेमाल किया जाता है जिसमें किसान कम तापमान पर सब्जियों की अच्छी पैदावार ले सकते हैं । जिस तरह से ग्रीन हाऊस कांच के पैनलों से ढका होता है उसी तरह से पृथ्वी के वायुमण्डल में मौजूद कुछ गैसें सूरज की गर्मी को रोककर पृथ्वी पर जीवन लायक तापमान बनाये रखती है इनके अभाव में इस ग्रह का तापमान जीवन लायक नहीं हो सकता था । आज वायुमण्डल में ग्रीन हाऊस गैसें कार्बन डाई ऑक्साइड, नाइट्रस ऑक्साइड, मीथेन जलवाष्प एवं ऐरोसोल्स की मात्रा इतनी अधिक हो गई है कि गुनगुनाहट तपिश में तब्दील हो रही हैं ।

पहले के जमाने में लोग दिन की रोशनी में काम करते थे और रात में प्राकृतिक हवा का आनन्द लेते हुये सोते थे, आवागमन का साधन या तो पैदल चलना था या पशुओं द्वारा खींचे जाने वाले वाहन थे । यही वजह थी कि प्रदूषण का स्तर नगण्य था और हवा ठण्डी और साफ सुथरी हुआ करती थी । औद्योगिक क्रान्ति के बाद न केवल कारों, बल्कि ए०सी० रेफ्रिजरेटर, तमाम किस्म के रासायनिक उत्पादों और धुआँ उगलती फैक्ट्रियों ने वायुमण्डल को गर्म करना शुरू कर दिया । डीफोरेस्ट्रेशन (पेड़ों की कटाई)

कालेज की वार्षिक पत्रिका "ज्ञान पुष्प" का प्रथम प्रसून अंक का अनावरण

वार्षिक पत्रिका प्रथम प्रसून का अनावरण करते हुये पूर्व उच्च शिक्षा मंत्री श्री श्याम सुन्दर शर्मा तथा प्रधान सम्पादक डा. वाई. के. गुप्ता

डा. कुसुमलता द्वारा प्रमुख सचिव महाराष्ट्र शासन श्री चाँद गोयल को पत्रिका भेंट करते हुये।

पत्रिका का अवलोकन करते हुये
श्री चन्द्रशेखर शर्मा (वरिष्ठ पत्रकार एवं समाज सेवी मथुरा)
एवं का० सदस्य श्री अनिल खण्डेलवाल

Scanned by CamScanner

से CO_2 की मात्रा दिन प्रतिदिन वातावरण में बढ़ती जा रही है जिसके कारण O_2 व CO_2 का सन्तुलन पर्यावरण में असन्तुलित होता जा रहा है । जिसके फलस्वरूप पृथ्वी का तापमान बढ़ रहा है । कार्बन डाई ऑक्साइड, कार्बन मोनो ऑक्साइड मीथेन व एरोसोल्स आदि ओजोन परत का क्षय कर रही है ओजोन परत सूर्य से आने वाली पराबैंगनी किरणें को पृथ्वी पर आने से रोकती हैं, जो कि Skin cancer का मुख्य कारण हैं ।

पृथ्वी के तापमान में हो रही वृद्धि के परिणाम बारिश के तरीकों में बदलाव, ग्लेशिपरों के पिघलने, समुद्र के जलस्तर में वृद्धि और वनस्पति तथा जन्तु जगत पर प्रभावों के रूप में सामने आ रहे हैं । मौसम वैज्ञानिक तो यह भविष्यवाणी कर रहे हैं कि अगर ग्लोवल वार्मिग की रफ्तार नहीं पायीं तो समुद्र किनारे बसे महानगर तक डूब जायेंगे ।

आप ग्लोवल वार्मिग के दुष्परिणामों से अन्दाजा लगा सकते हैं जिसके लिये मनुष्य स्वयं ही उत्तरदायी है । आने वाले समय में इसकी विभीषिका का प्रतिफल मानव को स्वयं ही नहीं झेलना पड़ेगा वल्कि आने वाली पीढ़ियों को भी इसके दुष्परिणामों से रूबरू होना पड़ेगा ।

देश की बेटियाँ

रश्मि शर्मा, वी०एड०

देश में बेटियाँ अगर बे--आवरू नाशाद हैं,
दिल पर रख कर हाथ कहिए
देश क्या आजाद है ?
बेटा हो पैदा तो घर में, खूब खुशियाँ मनें ।
कोसी जायें माँयें वो, जो गलती से बेटी जनें ।
अपनी माँ ही बेटियों को, कम–कम परोसा करें।
अपने ही आँगन में वो, इन्साफ को तरसा करें ।
चूल्हा–चौका चार–दीवारी बचपन में सौंपे गये ।
ढेर जिम्मेदारियों के जबरन ही शोपे गये ।
क्या है बचपन, क्या है शैतानी, और नदानी क्या है?
वेटियाँ न जान पायीं भौज के माने है क्या ?
बेटी वो पौधा है, जिसको रोशनी न जल मिले
ऐसा है वो फूल जो खिल सकता है, पर खिलना सके
आधी शिक्षा, आधी सेहत, मजदूरी आधी मिले
देश हुआ आजाद मगर, उसे न आजादी मिले
चेहरा फीका, नजरें नीची, कैसे ये बुझ सी गई।
ये न हो रोशन तो, होगा कोई घर रोशन नहीं,
कम उम्र में शादी की गाँड़ी में ये जाती गई
बच्चियाँ बन–बन कर माँये जिन्दगी खोती गई
बदनीयत से ये डरें, और हर नजर से ये डरें
फरियाद ये किससे करें, अगर हाथ अपनों के बढ़े
चुप हैं लेकिन यह न समझो, हम सदा के लिए हारे हैं,
राख के नीचे अभी भी जल रहे अँगारे हैं ।
एक दो होते अगर वो, शायद चुप हो बैठते
देश में आधे मर्द तो, आधी हम हैं औरतें
देश में बेटियाँ अगर बेआबरू नाशाद है
दिल पर रखकर हाथ कहिये
देश क्या आजाद है ।

आविष्कारों के जनक महान वैज्ञानिक जे०सी० बोस

चितरंजन वार्ष्णेय, बी०एड०

दस मई, सन् 1901 की बात है । रॉयल सोसायटी, लंदन का हाल विख्यात वैज्ञानिकों से ठसाठस भरा हुआ था । वे सब जगदीशचन्द्र बोस का यह प्रयोग देखने आए थे कि पेड़–पौधों और धातुओं में भी संवेदना होती है । उन्होंने जितने प्रयोग परीक्षण किए थे, उसमें से एक यह भी था । एक अत्यंत संवेदनशील उपकरण (बोस का एक अपना आविष्कार) जो पौधों के स्पंदन मापन के लिए था, एक पौधे से जोड़ दिया गया । फिर पौधे के तने को जड़ समेत, एक ऐसे बर्तन में डुबो दिया गया, जिसमें ब्रोमाइड विष भरा था । पौधे की जड़ भी ब्रोमाइड जहर में डूबी हुई थी ।

बोस आशा के अनुरूप स्क्रीन पर हल्के धब्बों को देख रहे थे, जो पौधे के स्पंदन का संकेत करते थे । सभी लोगों की दृष्टि भी वहीं टिकी हुई थी । पौधे की नब्ज की धड़कन, जिसे वह बिंदु पहले घड़ी के पेन्डुलम की तरह नियमतता आगे पीछे अंकित कर रहा था, धीरे–धीरे अनियमित और असंतुलित होने लगा । जल्दी ही वह धब्बा जोर–जोर से हिलने लगा और एकाएक उसकी क्रियाएं अचानक रूक गई । ऐसा लग रहा था, मानो जहर खाया चूहा लंबी–लंबी सांसें ले रहा हो । मृत्यु के विरूद्ध जोर आजमाइश कर रहा हो पर अंततः पौधा जहर के कारण मर गया था। इस प्रयोग के अंत में हर्ष ध्वनि हुई । मगर कुछ शरीर क्रिया विज्ञानी जो जीवित शरीर क्रियाओं का अध्ययन करते हैं इस बात से प्रसन्न नहीं थे ? सिर्फ इसलिए नहीं कि भौतिक विज्ञानी बोस उनके क्षेत्र में घुसपैठ कर रहे थे बल्कि अपने प्रयोगों द्वारा उन्होंने वहाँ बैठे कुछ शरीर विज्ञानियों के कई विख्यात सिद्धांतों को ही अस्त–व्यस्त कर दिया था । उन्होंने बोस के निष्कर्ष धातु और पौधों में जीवन होता है, की बहुत आलोचना की । उन्होंने रॉयल सोसायटी से कहा कि यदि वह अपने भाषण में कुछ तब्दीलियाँ नहीं करते तो उसे बिल्कुल प्रकाशित नहीं करना चाहिए । बोस ने अपने भाषण में किसी तरह का परिवर्तन करने से इंकार कर दिया । इसलिए कुछ समय तक उनके प्रयोगों पर किसी का ध्यान नहीं गया । लेकिन वह जल्दी हार मानने वाले व्यक्ति नहीं थे । उन्होंने बचपन से ही मुसीबतों के विरूद्ध लड़ना सीखा था ।

बचपन का संघर्ष : बोस का जन्म 30 नवम्बर, 1858 को मेमन सिंह जिले में हुआ था । यह जिला अब बांग्लादेश में है । वह बचपन से ही रामायण और महाभारत पढ़ते थे । महाभारत में कर्ण के चरित ने, जिसने सफलता के लिए जीवन भर संघर्ष किया, उन्हें बहुत प्रभावित किया था और इसी ने उन्हें प्रेरणा दी। वह यह विश्वास करने लगे कि, सच्ची विजय

Scanned by CamScanner

का जन्म पराजय में से होता है । जब उन्होंने सेंट जेवियर स्कूल कलकत्ता में प्रवेश लिया, तो उन्हें अंग्रेज और एंग्लो–इंडियन लड़कों की संगति मिली । उन छात्रों में से एक मुक्केबाज था, जो अक्सर जगदीश से कुछ छेड़छाड़ करता रहता। एक दिन जगदीश इस छेड़छाड़ को सह न सके और उस लड़के का सामना करने लगे । इस लड़ाई में किसी तरह विजय जगदीश की हुई । इससे उनकी कक्षा के छात्र उन्हें सम्मान की दृष्टि से देखने लगे । अब कोई उन्हें तंग नहीं करता था ।

विश्व विख्यात हुए बोस : जब रॉयल सोसायटी के शरीर क्रिया विज्ञानियों ने उनकी आलोचना की तो उन्होंने इस चुनौती को भी स्वीकार किया और पहले की तरह जीत उन्हीं की हुई । दो वर्ष के अथक परिश्रम के पश्चात् उन्होंने एक मोनोग्राफ प्रकाशित किया, नाम था– 'रिस्पॉन्स इन द लिविंग एंड नॉन लिविंग', जिसने रॉयल सोसायटी को आश्वस्त कर दिया कि वह ठीक थे । उनका वह भाषण, जिसे पहले प्रकाशित नहीं किया गया था, अब प्रकाशित करके सारे संसार में भेजा गया । बोस विश्व विख्यात हो गये । पौधों के क्रिया–विज्ञान से कई देशों में शोध कार्य आरंभ हुआ और कई सम्मानों के अतिरिक्त 1920 में उन्हें रॉयल सोसायटी का सदस्य बना लिया गया । अपने 36वें जन्मदिन पर बोस ने निश्चय किया कि अब वह केवल शुद्ध शोध कार्य करेंगे । हैनरिच हट्र्ज और उनके उत्तराधिकारियों पर ओलिवर लॉज के लेख ने बोस को बहुत प्रभावित किया । आजकल जिन्हें 'रेडियो वेव्स' कहते हैं । उन्होंने उस पर शोध कार्य शुरू किया । यद्यपि शोध के लिए उन्हें कॉलेज से कोई सहायता या धन नहीं मिला, फिर भी उन्होंने स्वयं तीन महीने में उपकरण तैयार करके शोध कार्य आरंभ कर दिया । अपनी किशोर अवस्था में बढ़ईगिरी एवं धातु के काम का जो प्रशिक्षण उन्हें मिला था, इस समय काम आया । इस प्रशिक्षण की वजह से ही उन्होंने अपने प्रयोगों के लिए कई संवेदनशील उपकरण बनाए । यद्यपि बोस जीव विज्ञानी के रूप में अधिक प्रसिद्ध हैं, लेकिन वह महान भौतिक शास्त्री भी थे । सही अर्थों में 'बेतार के तार' के आविष्कारक वही थे । सन् 1895 में गुगलिलमो मारकोनी द्वारा अपने आविष्कार को पेटेण्ट कराने से भी एक वर्ष पहले ही वह इस उपकरण का सार्वजनिक प्रदर्शन कर चुके थे । उन्होंने सबसे पहले ऐसा यंत्र बनाया, जिससे माइक्रोवेव्स (ऐसी रेडियो तरंगे, जो बहुत सूक्ष्म होती हैं) उत्पन्न हो सकती थी । वह प्रथम व्यक्ति थे, जिन्होंने पदार्थों की संरचना समझने के लिए माइक्रोवेव्स का उपयोग किया। उनके द्वारा बनाए गए एक यंत्र को अब 'वेव गाइड' के नाम से पुकारा जाता है और वह अब परिष्कृत इलेक्ट्रॉनिक और आणविक उपकरणों का आवश्यक भाग है ।

धातुओं की संवेदनशीलता पर प्रयोगः बोस ने बहुत संवेदनशील कोहियरर उपकरण बनाया, जो 'रेडियो वेव्स' का पता लगाता है ।

Scanned by CamScanner

इसके विस्तृत अध्ययन के दौरान वह भौतिक शास्त्र से धातुओं और फिर पौधों के अध्ययन पर आ गए । उन्होंने पाया कि कोहियरर की संवेदनशीलता लंबे समय तक नियमित रूप से उपयोग में लाने से कम हो जाती है । दूसरे शब्दों में वह थक जाता है । और लगता है वास्तव में वही बात थी, क्योंकि यंत्र को कुछ समय आराम देने के बाद जब फिर से इस्तेमाल किया गया, तो उसकी संवेदनशीलता वापस आ जाती थी । इससे यह स्पष्ट हुआ था कि धातुओं में भी स्मृति और महसूस करने की क्षमता होती है । बोस ने कई संवेदनशाल उपकरणों का आविष्कार किया । इनमें सबसे आश्चर्यजनक था क्रस्कोग्राफ ऐसा उपकरण जो पौधों की वृद्धि दर का पता लगाता है । इसकी संवेदनशीलता का इसी से पता चलता है कि वह पौधे की ऐसी वृद्धि नाप सकता है, जो घोंघे की गति से भी 20,000 गुना कम होती है ।

प्रोफेशनल लाइफ : सन् 1885 में वह विदेश से बी०एस०सी० और प्रकृति विज्ञान में ट्रिपास की डिग्री लेकर देश लौटे । उन्हें प्रेसिडेन्सी कॉलेज, कलकत्ता में प्राध्यापक पद देने की बात हुई, लेकिन उनका वेतन उनके अंग्रेज साथियों से आधा रखा गया । उन्होंने पद तो स्वीकार कर लिया, मगर विरोध के तौर पर वेतन लेने से इंकार कर दिया । तीन वर्ष बाद जब कॉलेज के अंग्रेज मुख्य अध्यापक ने यह देखा कि वह बड़े प्रतिभाशाली हैं, तो उसने उनकी मांग मान ली ।

सत्य बोलना पाप हो गया

रश्मि शर्मा, बी०एड०

बर्बरता क्रूरता दमन से
मानवता का अर्थ खो गया
अखबारों पर पाबन्दी भी
सत्य बोलना पाप हो गया
राजनीति गर्हित है कितनी
राम नाम अपराध बन गया
परिक्रमा वर्जना हो गई
चन्दन में भी रक्त न गया
फिर से बनी अयोध्या, योद्धा
मन्दिर–मस्जिद पर बैठे पहरे
फिर से तीर्थ हुआ अपमानित
संगीनों के साये गहरे
औरंगजेबी युग आ पहुँचा
अधर्म धर्म के ऊपर छाया
जलियाँवाला बाग हुआ था
कहर निहत्थों पर था ढाया
नहीं था आदेश किसी का
फिर भी चलाती रहीं गोलियाँ
छाती पर संकल्प अन्त तक
उठा मनोबल साहस जीता
रामशक्ति को पूजा तत्पर
मुक्त हो गई मानो सीता

बर्बरता क्रूरता दमन से, मानवता का अर्थ खो गया ।
अखबारों पर पाबन्दी भी, सत्य बोलना पाप हो गया ।।

गुरू–शिष्य और शिष्टाचार

श्री खजान सिंह, प्रवक्ता, बी०एड० विभाग

शिक्षा वह एक मास्टर चाबी है जो सभी प्रकार के अज्ञान रूपी तालों को खोलती है । शिक्षा व्यक्ति को पशुवत् व्यवहार से ऊँचा उठाकर उसे सामाजिक प्राणी बनाती है । शिक्षा के द्वारा ही व्यक्ति शिष्टाचारी बनता है और समाज का एक योग्य व्यक्ति कहलाता है अर्थात् शिष्टाचार व्यक्ति को आदर्श व्यक्ति बनाता है ।

यदि हम शिष्टाचार रहित व्यक्ति की कल्पना करें, तो हम मानवता की भावना को कहीं भी नहीं पायेंगे तथा छोटे–बड़ों का सम्मान नहीं करेंगे तथा भाईचारे की भावना का पतन हो जायेगा । शिष्टाचार एक ऐसा गुण है जो व्यक्ति में ऐसी भावना जाग्रत करता है कि व्यक्ति अनेक असम्भव कार्यो को सम्भव बना लेता है । इतिहास इस तथ्य का प्रमाण है कि भारत जैसे देश में प्राचीन समय से ही शिष्टाचार को सर्वोच्च स्थान प्रदान किया जाता रहा है । जिसे प्रमाणित करने के लिए हमारे वेद, पुराण, रामायण, महाभारत एवं उपनिषद आदि का प्रत्येक पृष्ठ हमें शिष्टाचार का ज्ञान करता है । शिष्टाचार के अनेक जीवन्त उदाहरण हमारा इतिहास प्रस्तुत करता है । जिस प्रकार भरत ने अपने ज्येष्ठ भ्राता पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र जी के लिए राज सिंहासन का भी त्याग कर दिया, उसी प्रकार लक्ष्मण जी ने अपने भ्राता के साथ 14 वर्ष का वनवास काटकर उनकी सेवा की थी । एकलव्य जैसे शिष्य ने गुरु द्रोणाचार्य के लिए गुरुदक्षिणा के रूप में अपना दाँये हाथ का अँगूठा ही अर्पित कर दिया तथा शिवि ने केवल एक कबूतर की जान बचाने के लिए अपने शरीर से मांस तक दे दिया था । द्वारकाधीश भगवान श्रीकृष्ण अपने दरिद्र मित्र सुदामा का स्वागत् करने के लिए नंगे पाँव ही दौड़ पड़े । ऐसे अनेक उदाहरण आज भी गवाह हैं । वर्तमान युग में भी महर्षि दयानन्द सरस्वती ने पाँच वर्षीय नग्न बालिका को देखकर अपना सिर झुका लिया यह उनके शिष्टाचार का ही रूप है । वर्तमान समय में शिष्टाचार का धीरे–धीरे लोप होता चला जा रहा है । चारों ओर शिष्टाचार के स्थान पर भ्रष्टाचार पनप रहा है । लोग अपने पूर्वजों के आदर्शो को भूलते चले जा रहे हैं तथा अपने मूल्यों से हटकर भौतिकता की ओर बढ़े चले जा रहे हैं । आज के समय में पुत्र अपने माता–पिता को सम्मान देने में अपना अपमान महसूस करता है । तथा बड़ों को प्रणाम करने तथा आदर करने में शर्म का अनुभव करता है । विशेष रूप से आज का छात्र वर्ग अपने को शिष्टाचार से दूर करता जा रहा है, वह शिष्टाचार का अर्थ ही भूल गया है । इस चंकाचौंध की दुनियाँ में विद्यार्थी अपने गुरुजनों

Scanned by CamScanner

का सम्मान करने में अपना अपमान समझने लगा है । छात्र गुरुजनों की नकल निकालने में, उनकी हँसी उड़ाने में, उनके साथ अभद्रता का व्यवहार करने से नहीं चूक रहा है ।

यदि हम प्राचीन काल के गुरु–शिष्य सम्बन्धों पर दृष्टिपात् करें तो हम शिष्टाचार की अनुभूति होती है । उस समय में शिष्य अपने गुरु को सर्वोच्च मानते थे और गुरु को भगवान से भी बढ़कर मानते थे, जिसके उदाहरण आज भी हमें वैदिक कालीन शिक्षा, बौद्धकालीन शिक्षा में देखने को मिलते हैं ।

प्रसिद्ध कवि कबीरदास जी ने गुरु की महिमा के विषय में कहा है–

"गुरु गोविन्द दोऊ खड़े, काके लागूँ पाँय ।
बलिहारी गुरु आपने जिन गोविन्द दियो बताय।"

कबीर की उपर्युक्त पंक्तियों में गुरु का स्थान ईश्वर से भी ऊँचा माना गया है । आज भी समाज का सर्वोच्च पद है तो केवल गुरु, गुरु के बिना हर कोई अधूरा है । क्योंकि शिक्षक को राष्ट्र का निर्माता माना गया है । अतः हमें गुरुजनों के प्रति आदर, सम्मान तथा शिष्टाचार का व्यवहार करना चाहिए । आज भी हमारे देश की संस्कृति, सभ्यता एवं मूल्य परक शिक्षा से सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के मनुष्य सीख ही लेते रहते हैं। लेकिन इस विकास की गति एवं पाश्चात संस्कृति हमारे नवयुवकों को विचलित करने से बाज नहीं आ रहे हैं । हमें पुनः अपनी मूल्य परक शिक्षा पर विचार करना ही होगा ।

अतः छात्र वर्ग को विशेष रूप से यह दृढ संकल्प लेना ही होगा कि वे अनुशासित होकर शिष्टाचार का पालन करें एवं राष्ट्र की प्रगति एवं विकास को निरन्तर विकास की ओर ले जायें तथा आज भी विदेशों से छात्र हमारी भारतीय संस्कृति एवं वैदिक शिक्षा का अनुसरण करें । जिससे हमारे भारतवर्ष की सभ्यता एवं संस्कृति पुनः शिखर पर पहुँच जाये ।

"छात्रों को सदैव जितेन्द्रिय, शान्त, अपने शिक्षकों एवं सहपाठियों के प्रति प्रेम पूर्ण, विचारशील एवं अध्ययनशील होना चाहिए ।"

-स्वामी दयानन्द सरस्ती

* * *
* *
*

Scanned by CamScanner

गुरू की महिमा

गरिमा शर्मा, एम०ए०, बी०एड०

सबसे प्यारा सबसे सच्चा,
गुरू चरणों का नाता है ।
जिसने गुरू चरणों में झुककर,
अपना शीश नवाया है ।
आँधी और तूफान चले पर,
संग गुरू का साया है ।
सबसे प्यारा सबसे सच्चा,
गुरू चरणों का नाता है ।
जितने चाहो जतन करो पर,
गुरू बिन ज्ञान न पाया है ।
सबसे प्यारा सबसे सच्चा,
गुरू चरणों का नाता है ।

गुरू में बृहमा, गुरू में विष्णु,
गुरू में सब संसार है ।
सबसे यारा सबसे सच्चा,
गुरू चरणों का सार है ।
गुरू हमारा पथ प्रदर्शक,
गुरू ही सिरजन हार है ।
सबसे प्यारा सबसे सच्चा,
गुरू चरणों का सार है ।
गुरू की वाणी अमृत वाणी,
गुरू की डांट में प्यार है ।
सबसे प्यारा सबसे सच्चा,
गुरू चरणों का सार है ।

मुस्कराते रहो

गरिमा शर्मा, एम०ए०, बी०एड०

प्यार बन के सदां मुस्कराते रहो,
साँस की तार पर गुनगुनाते रहो ।
तय करो इस तरह, जिन्दगी का सफर,
हँसते गाते चलो, हर डगर हर नगर ।
दीप बन के दिलों में जगमगाते रहो,
साँस के तार पर गुनगुनाते रहो ।
इस जमाने में कल की किसे है खबर,
तुम मिलाते रहो मन्जिलों से नजर ।
नाव हिम्मत की खुद ही चलाते रहो,
साँस के तार पर गुनगुनाते रहो ।
कोई भी हो देखो रोना नहीं,
अपने आँसू किसी तौर खोना नहीं ।
गम अगर मिल भी जाय भुलाते रहो,
साँस के तार पर गुनगुनाते रहो ।
मौत आना जरूरी है ऐ दोस्तो,
दूर जाना जरूरी है ऐ दोस्तो ।
आसियाना आसमा पर बनाते रहो,
साँस के तार पर गुनगुनाते रहो ।

Scanned by CamScanner

जीवन क्या है ?

अली अहमद खाँ, बी०एस०सी० तृतीय वर्ष

१. जीवन एक हवा का झोंका है जो आता है और चला जाता है ।

२. जीवन एक खिलौना है जो कभी भी टूट सकता है ।

३. जीवन एक आवाज है जो कभी भी खामोश हो सकती है ।

४. जीवन एक वृक्ष है जो कभी भी सूख सकता है ।

५. जीवन एक तिनका है जो कभी भी टूट सकता है ।

६. जीवन एक जलता दीपक है जो कभी भी बुझ सकता है ।

७. जीवन एक कली है जो सुबह को खिलती है और शाम को मुरझा जाती है ।

८. जीवन एक सरिता है जिसकी लहर कभी भी उठती है और कभी भी लुप्त हो जाती है ।

६. जीवन एक कश्ती है जो भंवर में कुछ देर दिखायी देती है फिर लुप्त हो जाती है ।

१०. फिर भी जीवन एक गीत है जिसे प्रसन्न होकर गाना चाहिए ।

कुछ जानने योग्य बातें

कार्य सिद्धि के लिए-

निरंतर प्रयास करो, धैर्य से काम लो,
शक्ति का उपयोग करो, बड़ों की सलाह लो,
धर्म की राह लो ।

जीतो -

शांति से क्रोध को, सरलता से माया को,
संतोष से लाभ को, सत्य से झूठ को ।

विद्या आती है -

खूब परिश्रम करने से, आलस्य को छोड़ने से,
कम भोजन करने से, चिंतन मनन करने से ।

गुरुजनों के समक्ष -

व्यर्थ की गपशप मत करो,
किसी की निंदा मत करो, छल कपट की बात मत करो,
सरल हृदय बनाकर रहो ।

सुखी बनने के लिए -

अहंकार को छोड़िये, परोपकार कीजिए,
मिल जुल कर रहिए, जो बोले सो तोलिये,
सबको आदर दीजिए, सदा शुद्ध भाव रखिए ।

अंतर का भेद खोल दो -

गुरु के सामने, माता के सामने,
राजा के सामने, वैद्य के सामने,
पिता के सामने ।

Scanned by CamScanner

एक विवाह हजारों बाराती

अंकित पाण्डेय, बी०कॉम० द्वितीय वर्ष

अमंगलम् गुटखा खाद्रपाम्,
अमंगलम् धूम्रपानम् ।
अमंगलम् मधपानम् अमंगलम् सर्वव्यसनम् ।
करागे बासते बीड़ी कर मध्य चुरूटम ।
कर मूले स्थितो गुटखा प्रभात काले दर्शनम् ।
दुर्भाग्यवती बीड़ी कुमारी उर्फ सिगरेट देवी ।
कुपुत्री श्री तम्बाकू लाल जी एवं श्रीमती
कनक देवी ।
निवासी स्थान– 555, यमलोक हाउस, दुखनगर
संग
मृतात्मा कैंसर कुमार उर्फ लाईलाज कुमार
कुपुत्र श्री गुटखालाल जी एवं श्रीमती भांगदेवी जी
निवास– स्थान व्यसनपुरी

का अशुभ विवाह तय हुआ है । अतः इस भयानक प्रसंग पर चाचा गांजा सिंह, चाची अफीम देवी, दादा हुक्का राम, दादी शराब देवी, मामा चरस, मामी काकी, नाना हैरोइन, नानी चाय, ताऊ चूना, फूफा जर्दा राम जैसे बुजुर्गों के द्वारा अभिशाप प्राप्त करने हेतु आप सादर आमन्त्रित हैं ।

पता– चिन्ता भवन, कष्ट मौहल्ला, दुख नगर (जिला परलोक) ।

विवाह स्थल– श्मशान घाट

बारात आगमन– अनिश्चित ।

नोट : 1. बारात ऐम्बुलेन्स के द्वारा कैंसर अस्पताल होते हुए काल घड़ी में श्मशान पहुँचेगी।
2. बारातियों का स्वागत श्मशान घाट पर रूदन से होगा और यमराज महोदय का आशीर्वाद मुफ्त मिलेगा ।

बाल आग्रह : छादी में जलूल–जलूल आना जी – सुपारी ।

दर्शनाभिलाषी :	***विनीत :***
सेठ दमादास	बलगम कुमार
श्रीमती टी०बी० बाई	कब्जी देवी
श्रीमती खाँसी बाई एवं समस्त	
नशीली दवाई एवं पिच्च थू	
परिवार	

संकल्प

प्रदीप कुमार शर्मा, बी०एस०सी० तृतीय वर्ष

We build our future thought by thought
For good or bad and know it not.
Thought is another name for fate;
Choose, then thy destiny, and wait.
Mind is the master of its sphere;
Be calm, be steadfast and sincere;
Fear is the only foe to fear.
Let the God in thee rise and say
To adverse circumstances-'obey',
And thy dear wish shall have its way.

निरन्तर संकल्पों से हम अपना भविष्य गढ़ते हैं ।
बुरा या भला और यह जानते तक नहीं हैं,
कि प्रारब्ध ही का दूसरा नाम संकल्प है ।
तो फिर अपना नसीब चुन लो और उसकी राह देखो ।
मन उसके क्षेत्र का स्वामी है,
अतएव शान्त, तत्पर और सच्चे रहो;
भय ही एक मात्र भयंकर शत्रु है ।
तुममें जो ईश्वर है उसे उदय होने और कहने दीजिए ।
ओ विपरीत अवस्था ! मेरी आज्ञा मान ।
और तब तेरी प्यारी इच्छा पूरी हो जायेगी ।

Scanned by CamScanner

व्यक्तित्व विकास में शिक्षक का योगदान

डा० योगेश कुमार गुप्ता, प्रवक्ता वाणिज्य विभाग

किसी देश या समाज की वास्तविक सम्पन्नता एवं शक्ति का अनुमान वहाँ के गगनचुम्बी विशाल भवनों, कल कारखानों तथा उद्योगों से नहीं बल्कि वहाँ के नागरिकों के चारित्रिक बल तथा कार्य क्षमता से लगाया जाता है । इस सम्बन्ध में लाला लाजपतराय का कथन सत्य है– "किसी राष्ट्र की सम्पत्ति उसकी धनराशि नहीं होती बल्कि उस देश के निवासी, युवकों का शरीर, उनकी शक्तिपूर्ण रक्त धमनियाँ, उनका विशाल हृदय और सच्चरित्र ही उस देश की वास्तविक सम्पत्ति है ।"

किसी भी राष्ट्र या देश के युवकों के चरित्र निर्माण तथा उनके व्यक्तित्व के विकास का दायित्व अध्यापकों पर होता है । जबसे इस धरती पर सभ्यता का आरम्भ हुआ तभी से अपने गौरवपूर्ण कार्यों, त्याग एवं तपस्या के कारण अध्यापक पूज्य रहा है । उसके प्रभाव को देश और काल की सीमाओं में बाँधा नहीं जा सकता। अध्यापक एक मनुष्य का ही मार्गदर्शन नहीं करता वरन् सम्पूर्ण राष्ट्र का निर्माण भी करता है । उसमें समाज को अन्धकार से प्रकाश की ओर ले जाने की क्षमता होती है ।

अध्यापक एक गुरू के साथ–साथ एक अभिभावक का भी दायित्व निभाता है । गुरु और अभिभावक का दायित्व वहन करने वाला अध्यापक ही सफलतापूर्वक अपने छात्रों को लाभ हानि तथा उचित–अनुचित बातों से परिचित कराकर उन्हें सन्मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करता है ।

छात्रों का अधिकांश समय विद्यालय में व्यतीत होता है । माँ–बाप के पश्चात् छात्र अपने अध्यापकों के गुणों को ही आदर्श मानता है । वह अपने अध्यापकों का अनुसरण करता है । अतः यह बहुत ही आवश्यक है कि अध्यापक का अपना व्यक्तित्व, आचरण तथा व्यवहार उच्चकोटि का हो ।

छात्रों के व्यक्तित्व विकास का दायित्व भी शिक्षकों पर होता है । इस दायित्व का निर्वाह करने के लिए वह सदैव प्रयत्नशील रहता है । इस संदर्भ में यह उदाहरण बड़ा ही प्रासंगिक होगा – शेख सादी को किसी ने थोड़ी सी मिट्टी दी जो कि बड़ी खुशबूदार थी । उन्होंने मिट्टी से पूछा तुझमें कस्तूरी जैसी सुगन्ध कैसे आ गयी ? मिट्टी ने उत्तर दिया– इसमें सन्देह नहीं है कि मैं तुच्छ और बिना कीमत की मिट्टी हूँ, लेकिन कुछ समय फूलों के साथ रहने से उनकी खुशबू का मुझ पर असर हो गया है । उन्होंने मुझे अपने जैसा खुशबूदार बना दिया है । वस्तुतः छात्र इस मिट्टी जैसे हैं जबकि शिक्षक ज्ञान तथा गुणों की खुशबू से भरे फूलों जैसे हैं । गुरु–शिष्य के सम्बन्धों की सच्ची

Scanned by CamScanner

सार्थकता इसी में है कि छात्रों के लिए शिक्षक अनुकरणीय रहें और वे उनके सद्‌गुणों के प्रभाव से सुयोग्य नागरिक बन सकें ।

छात्र अध्यापक से केवल औपचारिक शिक्षा ही ग्रहण नहीं करते बल्कि अनौपचारिक रूप से भी बहुत सी बातें सीखते रहते हैं । छात्रों में नकल तथा अनुसरण करने की तीव्र प्रवृत्ति होती है । घर में माता–पिता, भाई–बहिन तथा विद्यालय में अध्यापक ही उसके आदर्श होते हैं। अतः यह आवश्यक है कि अध्यापक का आचरण उच्च कोटि का हो तथा उसका व्यवहार छात्रों के प्रति स्नेह पूर्ण हो । अध्यापक में समयानुपालन, क्रोध न करना, झूठ न बोलना, अपने कार्य में रुचि लेना तथा उसे समय से पूरा करना, छात्रों की कठिनाई को ध्यान से सुनकर उसे सुलझाना आदि गुणों का होना आवश्यक है । जो शिक्षक अपने कर्तव्यों का पालन पूर्ण निष्ठा, ईमानदारी और सर्तकता से करते हैं छात्र उनका सम्मान करते हैं । छात्र ही वास्तव में अध्यापक के सबसे बड़े आलोचक भी होते हैं । शिक्षक कितना भी सख्त क्यों न हो यदि उसमें उपर्युक्त गुणों का समावेश है तो निश्चित ही छात्र उसका सम्मान करेंगे ।

अध्यापक प्रायः छात्रों को ठीक से नहीं पढ़ाते हैं और उन्हें घर पर ट्यूशनों के लिए प्रेरित करते हैं । कभी–कभी जो छात्र ट्यूशन के लिए तैयार नहीं होते तो वे उन्हें फेल कर देते हैं या उनके साथ अच्छा व्यवहार नहीं करते और उन छात्रों को कक्षा से बाहर निकाल देते हैं किन्तु ऐसी बातें राष्ट्र निर्माता कहे जाने वाले शिक्षक को शोभा नहीं देती हैं । कक्षा में ठीक से पढ़ाते हुए कोर्स को समय से पूरा कराने वाला शिक्षक यदि आवश्यक हो तो एक या दो ट्यूशन कर सकता है । किन्तु कई–कई समूहों में छात्रों को पढ़ाना एक कक्षा का ही रूप हो जाता है जिससे शिक्षक को धन भले ही प्राप्त हो जाय किन्तु यह छात्रों के हित में नहीं है, और शिक्षक कार्य के प्रति धोखा है । ऐसे शिक्षकों को छात्र अध्यापन काल में भले ही ऊपरी मन से सम्मान देते रहें परन्तु समय निकल जाने पर निश्चय ही वे उन्हें सम्मान नहीं देंगे ।

कुछ अध्यापक धनार्जन हेतु आजकल छात्रों को नकल करने में सहयोग देते हुए पाये जाते हैं । वे नकल केवल उन्हीं छात्रों को कराते हैं या करने देते हैं जो उनसे ट्यूशन पढ़ते हैं या कुछ धन उनसे ले लिया हो या अन्य किसी रूप में उस छात्र के अभिभावक से किसी लाभ की आशा हो । ऐसा निम्न कार्य करते हुए वे अध्यापक यह भूल जाते हैं कि ऐसा कार्य करने से उनके सम्मान में कमी आयेगी । नकल करने वाले छात्र समय बीत जाने पर कहने से नहीं चूकते कि अमुक अध्यापक तो नकल कराता है । ऐसी बातें सुनने में बहुत ही खराब लगती हैं और अध्यापक का सम्मान छात्रों, अभिभावकों तथा समाज के लोगों की दृष्टि में कम हो जाता है । इस नकल जैसे अशोभनीय कार्य से कुछ अध्यापक पूरे अध्यापक वर्ग को लाँछित करते हैं । जैसे– एक मछली पूरे तालाब को गन्दा कर देती है ।

उपरोक्त विवेचन से यह स्पष्ट है कि छात्र के व्यक्तित्व विकास में शिक्षक की महत्वपूर्ण भूमिका होती है । अतः उसे अपने दायित्व का निर्वाह करते हुए राष्ट्र निर्माण में अपनी भूमिका अदा करनी चाहिए ।

Scanned by CamScanner

निरोगी काया

महेश कुमार सिंह 'जादौन', बी०एड०

पहला सुख निरोगी काया, दूसरा सुख घर में माया ।
तीसरा सुख सुपात्र हो नारी, चौथा सुख पुत्र हो आज्ञाकारी ।।

यह सत्य है कि कोई भी व्यक्ति बीमार रहना नहीं चाहता । काया कष्ट सबसे बड़ा दुख है काया कष्ट के दुख को केवल वही व्यक्ति अनुभव करता है जिसे शारीरिक कष्ट है इसके साथ जिस व्यक्ति को कोई भी मानसिक कष्ट है उसे भी निरोगी व्यक्ति नहीं कहा जा सकता ।

यदि मनुष्य को निरोग रहना है उसे स्वास्थ्य के नियमों का पालन करना चाहिए । अधिक भूख लगने पर भोजन करना चाहिए । पौष्टिक और सात्विक भोजन करना दीर्घ आयु की प्रथम सीढ़ी है । शुद्ध वायु, व्यायाम, प्रातःकाल उठना, घूमना, स्नान, पूरी नींद सोना, कम खाना आदि बातें शरीर को स्वस्थ बनाने में सहायता करती है इसलिए मनुष्य को आहार की मात्रा सन्तुलित और नियमानुसार होनी चाहिए हफ्ते में अगर एक बार उपवास भी रख लिया जाय तो शरीर के लिए सबसे उत्तम है । अधिक सोचना भी बीमारियों को न्योता देता है ठीक ही कहा है चिंता चिता के समान होती है आज के समय में खेद का विषय है कि व्यक्ति गर्भाधारण के समय से ही दवाओं पर चल रहा है । इसी कारण उसकी शारीरिक प्रतिरोध क्षमता कम होने लगती है जिसे वह अनेक रोगों के चक्रवात में फँस जाता है और इसी स्थिति में उसे अपना सम्पूर्ण जीवन व्यतीत करना पड़ता है और निरोगी काया नहीं बना पाता । इसके बाद दूसरा सुख माया (धन) होती है जो आज के युग में बहुत ही आवश्यक है क्योंकि बिना धन के मनुष्य सब कुछ जानते हुए समाज में पिछड़ा व्यक्ति कहलाता है । आजकल तो आध्यात्मिक जगत में भी पैसे वाले को बोलबाला है आज के प्रसिद्ध 'सुबाधू' इन्हीं धनवान लोगों से मिलना पसन्द करते हैं जो इन्हें धन दे सके।

आज के साधू को महात्मा कहने में शर्म आती है क्योंकि यह केवल सांसारिक जगत का स्वाद देखते हैं । इन्हें केवल अपने भौतिक सुख दिखाई देते हैं ।

इसी कारण इन्हें सुबाधू कहना ही उचित है साधू कहकर उन महान आत्माओं का अपमान नहीं किया जा सकता है । जैसे कुछ साधु भौतिक जगत को छोड़कर परमात्मा में अपना ध्यान केन्द्रित करते हैं ।

इसी प्रकार तीसरा सुख सुपात्र नारी है जिस व्यक्ति की नारी अपने पति, परिवार के सदस्यों, समाज के लोगों का सम्मान व उनके साथ उचित व्यवहार करती है तो उसे एक सुपात्र नारी कहा जा सकता है जिससे उसका सम्पूर्ण परिवार सुखी होगा और आपसी सहयोग की भावना जागृत होगी । चौथा सुख पुत्र आज्ञा मानने वाला होना चाहिए इसमें राम, श्रवण आदि का उदाहरण दिया जा सकता है जिन्होंने पिता की आज्ञा का पालन सभी सीमाओं में रहकर किया था जिससे वे आज भी अमर हैं । लेकिन आजकल इसका ह्रास होता जा रहा है पुत्र अपनी इच्छा के अनुसार सभी कार्य करते हैं चाहे वह कार्य उचित हो या अनुचित । जिससे समाज में द्वेष भाव उत्पन्न हो रहे हैं ।

Scanned by CamScanner

चुटकुले

मनोज कुमार, बी०एस०सी० द्वितीय वर्ष

(मेरी सरकार बन जाने दो)

जो बुड्ढे और खूबसूरत नेता हैं, उनको खड्ढे में जाने दो,
बस एक बार, बस एक बार मेरी सरकार बन जाने दो..........
मेरे भाषण सुनकर भागेगा भूत गरीबी का,
मरियल जनता को मीठे वादों का जूस पिलाने दो,
बस एक बार मेरी सरकार बन जाने दो..............
जो काम धर्म के करेगा मैं उनको बरी करा दूँगा,
हर घिसी पिटी हीरोइन की प्लास्टिक सर्जरी करा दूँगा,
लड़का–लड़की और लैक्चरर सब फिल्मी गाने गायेंगे,
अंग्रेज़ी और बीजगणित, जैसे विषयों पर वैन लगवा दूँगा,
मंदिर–मस्जिद का झगड़ा क्या ऐसे ही होने दूँगा,
सोना तुरन्त गिरेगा चाँदी भी मंदी करवा दूँगा,
मैं पल भर में सुलझा दूँगा परिवार नियोजन का झगड़ा,
कि मैं शादी से पहले हर दूल्हे की नसबन्दी करवा दूँगा ।

(बालों का फैशन)

एक दिन एक लड़के को मास्टर जी ने किया खड़ा,
और उसके गाल पर जोरदार प्रश्न जड़ा ।
क्यों वे इन बेहूदे बालों से क्लास में आयेगा,
तो सुनले इसी प्रकार पीटा जायेगा,
लड़का बोला ऐसी आदत से मजबूर तो सारा जहाँ है ।
पढ़ाई में व्यस्त हूँ इसलिए कटिंग की फुर्सत कहाँ है,
और फिर मेरे जैसे तो देश में तमाम हैं,

Scanned by CamScanner

सबसे पहला उदाहरण देश के राष्ट्रपति A.P.J. अब्दुल कलाम हैं ।

(बुढ़ापे में पढ़ेंगे)

ऐ मेरे आदरणीय बाप,

मुझे पढ़ने के लिए बाध्य न करें आप, हम तो लड़ेंगे, भिड़ेंगे सड़कों पर रहेंगे,

पंखा, टोकरियाँ बेचकर गुजारा करेंगे, प्रौढ़ शिक्षा जिन्दाबाद,

हम तो बुढ़ापे में पढ़ेंगे, बुढ़ापे में पढ़ेंगे ।

(नेता का जहर)

नेताजी घर से निकले तो कुत्ते ने कान फड़फड़ाये तो नेताजी बुदबुदाये,

नेताजी को गुस्सा आया और कुत्ते को पूछ में काट खाया,

कुत्ते ने नेताजी का जहर चढ़ गया, कुछ देर तड़पने के बाद कुत्ता मर गया,

इतने में वहाँ कुत्ते की मेडम आयी और नेता को खोटी खरी सुनाई,

नेता को फिर गुस्सा आया और उसको भी कान में काट खाया,

कुत्ते की मेडम में नेता के जहर की गर्मी चढ़ गयी कुछ देर तड़पी और

वो भी मर गयी ।

नेता जी दोनों को दफनाने की कर रहे थे तैयारी,

इतने में वहाँ आकर इकट्ठे हो गये दो–चार जीवधारी (पिल्ले),

वे बोले हमारे मोम डैड को किसने मारा है,

वे हमारे सामने आये इनका कौन हत्यारा है,

नेता बोला ये बेचारे मर गये तो तुम भी क्या कर पाओगे,

चले जाओ वरना तुम भी मेरे काटने से मर जाओगे, मैं नेता हूँ ।

★ ★ ★ ★ ★

★ ★ ★

Scanned by CamScanner

मुस्लिम समुदाय की समस्या समाधान हेतु सुझाव

हरिओम, बी०एड०

मुस्लिम बहुत क्षेत्र में साक्षरता लिंग भिन्नता 15 प्रतिशत से अधिक पायी गयी है उन क्षेत्रों में स्त्री तथा पुरुष साक्षरता में बहुत अधिक अन्तर है जो इस बात का द्योतक है कि वहाँ सामाजिक दृष्टि से पिछड़ापन अधिक है क्योंकि सामाजिक दृष्टि से पिछड़े स्थानों पर ही साक्षरता लिंग भिन्नता अधिक पायी जाती है । इसके लिये विशेष रूप से माता–पिता का असाक्षर होना, पारिवारिक व्यवसाय का अच्छा ना होना अथवा व्यवसाय दृष्टि से पिछड़ापन, महिलाओं को समाज में खुलेआम घूमने पर प्रतिबन्धित करना, परिवार की प्रमुख आवश्यकता जीवकोपार्जन जुटाना, महिलाओं को उपेक्षित दृष्टि से देखा जाना, लड़कियों की पढ़ाई पर अपेक्षित ध्यान न देना इत्यादि कारण मुस्लिम समाज के निम्न जीवन स्तर के लिये उत्तरदायी हैं ।

निष्कर्ष के रूप में यह कहा जा सकता है कि रोजगार सबसे प्रमुख और महत्वपूर्ण कार्य है । आर्थिक प्रणाली का नियोजन इस प्रकार से करना होगा जिससे कि उत्पादन और उपभोग में उचित सन्तुलन स्थापित हो जायें । लघु एवं मध्यम नगरों में इस समय सर्वांगीण विकास की आवश्यकता है । मानव समस्या को हल करने के लिये एक दीर्घकालीन नीति को अपनाने की आवश्यकता है । जिससे एक ओर तो रोजगार के साधनों में वृद्धि की जाये तथा दूसरी ओर जनसंख्या की वृद्धि को प्रभावपूर्ण तरीके से रोका जाये । हमारी उद्योग नीति को पूँजी प्रधान होने के बजाय श्रम प्रधान बनाने की आवश्यकता है । हमारी सम्मति में इस समस्या का समाधान केवल नारे लगाने, झूठे आश्वासन देने, समय के अनुकूल भाषण देने व कागजों पर लम्बी योजनाओं को बनाये जाने से होने वाला नहीं है । आज आवश्यकता है सही दिशा में कदम उठाने की । अनेक कारण हैं, इसलिये उसकी कोई एक रामबाण औषधि नहीं हो सकती, फिर भी बेरोजगारी की समस्या के समाधान हेतु निम्न सुझाव दिये जा सकते हैं ।

मुस्लिम समाज के निम्न जीवन स्तर के लिये अनेक कारण उत्तरदायी हैं । जिनके समाधान हेतु निम्न सुझाव दिये जा सकते हैं ।

निम्न जीवन स्तर को ऊँचा उठाने के लिये जनसंख्या वृद्धि पर उचित नियन्त्रण लगाया जाना चाहिये । इसके लिये अनेक परोक्ष उपाय हैं । जो पति–पत्नी अपने को केवल एक बच्चे तक सीमित रखते हैं उन्हें सरकार द्वारा प्रोत्साहन

Scanned by CamScanner

तथा भविष्य में वृद्धावस्था के समय उनकी सुरक्षा प्रदान करना नितांत आवश्यक है । उनके एक मात्र बच्चे को निःशुल्क शिक्षा की सुविधा, उसकी नौकरी की गारंटी सरकार को देनी चाहिये । और यदि एक मात्र संतान की मृत्यु हो जाती है तो सरकार का यह पूरा दायित्व एवं कर्तव्य होना चाहिये कि उसके माता–पिता को शेष जीवन में आर्थिक सहायता, आवास की सुविधायें तथा उनके लिये चिकित्सा की सुविधायें होती रहें । जिस प्रकार स्वतंत्रता सेनानी को सुविधायें उपलब्ध हो रही हैं उसी प्रकार एक बच्चे वाले माता–पिताओं के लिये भी ऐसे लाभदायक कार्यक्रम कार्यान्वित कर उन्हें प्रेरित करना चाहिये । इस प्रकार के प्रोत्साहन कार्यक्रम चलाने में पूरी ईमानदारी बरतनी चाहिये । आज जनसंख्या एक राष्ट्रीय समस्या बन गई है । आवश्यकता इस बात की है कि सभी राजनैतिक दल, समाज सेवी संस्थायें, सांसद एवं विधायक एवं शिक्षित समाज इस समस्या को कम करने में अपना सक्रिय योगदान दें । इस कार्यक्रम के लिये समर्पण की भावना की आवश्यकता है । जब तक इस समस्या को स्वयं की समस्या नहीं समझा जायेगा तथा जब तक मनसा वाचा कर्मणा से सक्रिय प्रयास नहीं किये जायेंगे तब तक हम स्वयं को ही धोखा देते रहेंगे । विगत नियोजन काल में जनसंख्या नियन्त्रण नीति एवं कार्यक्रमों की जो असन्तोषजनक एवं निराशाजनक धीमी उपलब्धि रही है । आगे की योजनाओं में उसकी पुनरावृत्ति नहीं होनी चाहिये ।

वर्तमान शिक्षा पद्धति में तुरन्त सुधार की आवश्यकता है । आज शिक्षा पद्धति मात्र विद्यार्थियों की स्मरण भक्ति तक सीमित रह गयी है । इस पद्धति को सुधारना होगा । ऐसे पाठ्यक्रमों को शुरू किया जाये जिससे कि विद्यार्थियों के ज्ञान में वृद्धि हो उसमें अधिक ज्ञान प्राप्त करने की जिज्ञासा उत्पन्न हो तथा वह स्वयं निर्णय लेने के योग्य बन सके । आज टेक्नीकल व्यक्तियों का अभाव है । इसलिये बच्चों को सिद्धान्त की अपेक्षा यांत्रिक तथा व्यावसायिक शिक्षा पर विशेष बल दिया जाना चाहिये । प्रत्येक व्यक्ति को लिपिक का कार्य नहीं दिया जा सकता । शिक्षा इस प्रकार की हो जिसकी पढ़ने के बाद हमारे नवयुवक स्वयं रोजगार की व्यवस्था कर सकें । ग्रामीण क्षेत्रों में स्थिति स्कूलों में कृषि एवं घरेलू उद्योगों की शिक्षा अनिवार्य कर देनी चाहिये । उच्च शिक्षा उन विद्यार्थियों को दी जाये जो उसके योग्य हों ।

मुस्लिम समाज के निम्न जीवन स्तर में रह रहे परिवारों को मुफ्त शिक्षा की व्यवस्था होनी चाहिये ताकि माता पिता ही नहीं बल्कि बच्चे भी पढ़ने को प्रोत्साहित हो सकें ।

★ ★ ★ ★

Scanned by CamScanner

संस्थापक दिवस कार्यक्रम की एक झलक

प्राचार्य डा. एल.सी. गौड़ द्वारा प्रो. आलोक मित्तल, डीन नेता जी सुभाष चन्द्र इन्स्टीट्यूट ऑफ टैक्नोलोजी, नई दिल्ली स्मृति चिन्ह भेंट करते हुये।

कालेज अध्यक्ष श्रीमती आशा देवी द्वारा पूर्व उच्च शिक्षा मंत्री श्री श्याम सुन्दर शर्मा को स्मृति चिन्ह भेंट करते हुये

कालेज सचिव श्री दीपक गोयल द्वारा विधायक प्रमोद गौड़ को स्मृति चिन्ह भेंट करते हुये

संस्थापक दिवस समारोह की एक झलक

Scanned by CamScanner

संघर्ष ही जीवन है

मुकेश दत्त, बी०कॉम० द्वितीय वर्ष,

जीवन की शुरूआत संघर्ष के साथ । जीवन में प्रगति संघर्ष के साथ । संसार में प्राणी के आते ही करना पड़ता है एक संघर्ष । कबूल करना पड़ता है चुनौतियों को । अरे यहाँ तक कि नवजात शिशु को भी दाँत न होने पर भी दूध पीने के लिए संघर्ष ही तो करना पड़ता है।

संघर्ष तो प्रत्येक प्राणी को करना पड़ता है । चाहे जानवर हो या मानव । जानवर को भी अपना और अपने बच्चों के पालन–पोषण के लिए भी भोजन की तलाश में करना पड़ता है संघर्ष । जो जीव अपने लिए संघर्ष नहीं कर पाते हैं वो प्राकृतिक चयन में विलुप्त हो जाते हैं । जैसे कि गिद्ध, डायनोसॉर आदि जानवर अपने जीवन के लिए संघर्ष नहीं कर पाये । संघर्ष जीवन के लिए उतना ही आवश्यक है जितना कि भोजन और पानी ।

जो कभी शिक्षा के क्षेत्र में अब्राहम लिंकन और APJ अब्दुल कलाम जी जैसे अथक संघर्ष कर लेते हैं तो वे उनके जैसे एकाग्रता प्रसन्नता कर्त्तव्य निष्ठता एवं ज्ञान की मूर्ति बन जाते हैं और जो कभी व्यवसाय के क्षेत्र में कड़ा संघर्ष कर लेते हैं तो वह बिलग्रेट मुकेश अम्बानी, अनिल अम्बानी, लक्ष्मी मित्तल, जे०डी०आर० टाटा जैसे धनी प्रसिद्ध व्यक्ति बन जाते हैं । अरे संघर्ष तो सभी महापुरुषों ने किया चाहे वो बुद्ध और ईसामसीह के धार्मिक सुधार के लिए संघर्ष किया । और राम और कृष्ण ने मानवता और सत्य के लिए संघर्ष किया । दयानन्द एवं विवेकानन्द जी के सामाजिक सुधार के लिए संघर्ष । क्योंकि वे जानते थे कि मानव जाति का अस्तित्व संघर्ष से ही है एवं संघर्षहीन व्यक्ति देश धर्म जाति और घर के लिए भी अनुपयोगी है । वह तो अजगर की तरह पड़ा रहता है ! किसी ने कहा है–

जिनको अपने पंखों पर विश्वास होता है,
उनके चरणों में पूरा आकाश होता है ।
चाह से नहीं चलने से बनता है मार्ग,
चुनौती झेलकर ही जीवन का विकास होता है।

क्या हमें स्वतन्त्रता बिना संघर्ष के मिली है ? नहीं उसके लिए भी गाँधीजी, सुभाषचन्द्र बोस, चन्द्रशेखर आजाद, भगतसिंह और अनेक भारतवासियों ने क्रान्तिकारी व अहिंसात्मक संघर्ष किया था । जिससे भारत माता के कदमों को एक नयी सफलता ने चूमा ।

वास्तव में हाथी शरीर बल आदि से शेर की अपेक्षा अधिक सुदृढ़ होता है । परन्तु जंगल का राजा होता है शेर क्यों ? क्योंकि शेर में संघर्ष करने का गुण पाया जाता है । जबकि हाथी संघर्ष करना ही नहीं जानता । मुख्यतः सच्चा संघर्ष करने वाले कभी हताश नहीं होते। राष्ट्र कवि मैथलीशरण जी ने भी कहा है–

नर हो न निराश करो मन को,
कुछ काम करो कुछ काम करो ।
जग में रहकर कुछ नाम करो ।।

वास्तव में संघर्षशील व्यक्ति राजा ब्रूस की तरह लक्ष्य को प्राप्त करता है । जिसने अपनी हार के बाद जब मकड़ी को लक्ष्य की प्राप्ति के लिए बार–बार गिरते चढ़ते और अन्त

Scanned by CamScanner

में सफलता पाते हुए देखा था जिसके कारण उसमें पुनः पूर्ण परिश्रम से सफलता पायी ।

वास्तव में असफलता केवल यह सिद्ध करती है कि सफलता का प्रयत्न पूरे मन से नहीं किया गया । जापान और जर्मनी देश जो पूर्णतः तबाह हो चुके थे आज वो ही विकसित राष्ट्र की श्रेणी में आते हैं । कारण एक ही है देश की दुर्बलताओं एवं कमजोरियों से संघर्ष जिसके कारण उन्होंने अपने गले में पहनी प्रगति की माला ।

वास्तम में जिन लोगों की अपेक्षा अधिक आत्मविश्वास से भरे हैं । कभी–कभी हम स्वयं नाराज होने लगते हैं तो कभी हौसला टूटने लगता है । परन्तु ये ध्यान रखना चाहिए कि विजेता कभी मायूस नहीं होते । हमें सफलता के लिए लगन, कड़ी मेहनत और आत्म विश्वास को कभी नहीं भूलना चाहिए । रूकावटों से निकलने का हल है संघर्ष । महामहिम राष्ट्रपति जी देश की विकास और व्यक्तित्व विकास के लिए चंद पंक्तियाँ कहते हैं–

हे भारतीय युवक, ज्ञान विज्ञानी, मानवता के प्रेमी संकीर्ण तुच्छ लक्ष्य की लालसा भी पाप है । मेरे सपने बड़े, मैं मेहनत करूँगा, संघर्ष करूँगा, मेरा देश गुणवान हो, धनवान हो । यह प्रेरणा का भाव अमूल्य हो ।

सोचो ! जब जहाज गहरे समुद्र में जाता है तो उसे तूफान का डर रहता है और अगर वह तूफान के डर से सिर्फ बन्दरगाह पर ही खड़ा रहे तो भी जंग लग जायेगी । इसी प्रकार मानव अगर संघर्ष करने के उद्देश्य से जीवन पाता है तो अनेक मुसीबतों का भी सामना करना पड़ सकता है । तो क्या वह इस भय से आगे बढ़ने का प्रयास छोड़ देगा । नहीं ना लेकिन कायर लोग आत्मविश्वास से रहित कायर भीरू होते हैं । जीतने वाले लक्ष्य को और हारने वाले रूकावटों को देखते हैं । किसी विचारक ने भी कहा है–

"जो कायर थे वे हार गये । और नर नाहर बाजी मार गये ।" "गिरते हैं सिंह सवार ही मैदाने जंग में, अरे यह क्या गिरेंगे जो घुटनों के बल चले ।"

संघर्ष शब्द पर विचार करने से पता चलता है कि संघर्ष किस अस्त्र शस्त्र की लड़ाई, स्वार्थपरता उद्देश्य पूर्ति के लिए नहीं बल्कि यह तो जीवन में स्वाभिमान, सुख शान्ति से जीने का माध्यम है । आज हमें सृष्टि को नहीं दृष्टि को बदलना चाहिए हमें अपनी सोच सकारात्मक बनानी चाहिए– एक विचारक ने भी कहा है–

वृक्ष को बदलो, वृष्टि बदल जाती है ।
पक्ष को बदलो, तो दृष्टि बदल जाती है ।
स्थान को बदलने से कुछ हासिल नहीं होता ।
सोच को बदलो, सारी सृष्टि बदल जाती है ।

आज हमें संघर्ष तो करना पड़ेगा, उस प्रकाश पुंज के सामने आने के लिए जो खोज में है संघर्षशील नवयुवकों की, जिसे आवश्यकता है देश के नवनिर्माण करने की, आशा है उसे भारत के स्वप्न कोषाकार करने की बस आवश्यकता है अपने कौशल, ज्ञान की शक्ति को विश्व के सामने रखने की । अगर ऐसा न करें तो हमारी योग्यता एक परिसीमा में सीमित हो जायेगी । तो अब क्या करना है ? अब उठो, बढ़ो संघर्ष करो और लक्ष्य पाओ । यही मेरी कामना है ।

Scanned by CamScanner

कर्म से ही जीवन है

संदीप वार्ष्णेय, बी०एड०

प्रत्येक मनुष्य की कर्म करने की प्रवृत्ति भिन्न–भिन्न होती है । परन्तु अच्छे कर्म से ही जीवन को सफल बनाया जा सकता है, क्योंकि कोई भी प्राणी किसी समय किसी भी क्षण बिना कर्म किये हुए नहीं रह सकता ।

महात्मा तुलसी का यह कथन है कि–

''कर्म प्रधान विश्व, करि राखा ।
जो जस करिय, तो तस फल चाखा ।''

अर्थात् मनुष्य जैसे कर्म करता है वैसे ही फल पाता है यह सर्वविदित है ।

गीता में भी कहा है कि–

कल्याणकृत कश्चित दुर्गति तात् गच्छति।।

अर्थात् दूसरों के सुख के लिए जीने वाला व्यक्ति कभी दुःखी नहीं होता है ।

कर्म प्रत्येक प्राणी में नहीं बल्कि पृथ्वी के कण–कण में निहित है– हम देखें तो सृष्टि का कण–कण एवं सम्पूर्ण जीव जन्तु प्रत्येक क्षेत्र क्रियाशील ही दिखाई देते हैं । यहाँ तक कि सूर्य, चन्द्रमा, पृथ्वी, तारागण एवं वायु रात–दिन सतत् क्रियाशील ही रहते हैं । एक क्षण के लिये नहीं रूकते । फिर मानव तो सृष्टि का बुद्धि सम्पन्न एक सर्वोत्तम प्राणी है । ईश्वर ने उसकी रचना भी इसी उद्देश्य की है, कि वह अपने उत्तम कर्मों के द्वारा अपनी श्रेष्ठता प्रदर्शित करे । गीता के तीसरे अध्याय में भगवान श्री कृष्ण ने अर्जुन को समझाते हुए कहा है कि– मानव कर्म प्रधान है । कर्त्तव्य करने से ही मानव बुद्धि में समत्व की भावना आती है । अतः विवेक पूर्ण ढंग से निष्काम भाव से मनुष्य को तत् कार्य करते रहना चाहिए, यही उसका कर्म है । अपने कर्त्तव्य का सच्चाई से पालन करते हुए अपना जीवन समाप्त करना ही उसके लिये श्रेयस्कर है । गीता में भगवान ने 'ज्ञानयोग' और 'कर्मयोग' दोनों में ही सन्तुलन बनाकर 'कर्म' करते रहने का कहा है, जो निरन्तर कर्मशील है, और अपने परम ब्रह्मा परमात्मा में मन लगाकर अपने कर्त्तव्य को पूरा कर रहा है, फिर इस स्थिति में उसके पतन की सम्भावना भी नहीं रहती ।

'भगवत गीता' के चतुर्थ अध्याय के 17वें श्लोक में भगवान कर्ण के कर्म की व्याख्या करते हुए बताया है–

कर्मणो ह्यपि बोद्धव्यं बोद्धव्यं च विकर्मणः ।
अकर्मण बौद्धत्यं गहना कर्मणोगीतः ।।

अर्थात् कर्म की बारीकियों को समझना अत्यन्त कठिन है । अतः मानव को चाहिये कि वह यह ठीक से जाने कि कर्म क्या है ? विकर्म क्या है ? और अकर्म क्या है ? मनुष्य के अन्दर

Scanned by CamScanner

तीन तरह की वृत्तियाँ हैं– सात्विक, राजसिक एवं तामसिक जो तीन गुण– सत, रज एवं तम के अन्तर्गत कार्य करती है ।

प्रत्येक मनुष्य इन्हीं तीन वृत्तियों के अन्तर्गत उनसे प्रभावित होकर कार्य करता है–

(१) जब मनुष्य का मन शान्त, सरल रहे अपने लक्ष्य की ओर ध्यान रहे, जीवन नियमित, अनुशासित रहे और सदैव मंगल तथा परोपकार के कार्यों में अपनी ऊर्जा लगाता है । तो उस व्यक्ति को सात्विक वृत्ति को समझना चाहिए ।

(२) जब मनुष्य के अन्दर काम, क्रोध की उत्पत्ति हो जाये तथा वह अपनी काम-वासनाओं की पूर्ति हेतु प्रयत्नरत हो जाये तो समझो उस पर राजसिक वृत्ति का प्रभाव हो गया है ।

अतः राजसिक वृत्ति से बचने और सावधान रहने की अति आवश्यता है ।

(३) तामसिक वृत्ति वाला मनुष्य सदा पतनकारी कार्यों में ही लगा रहता है । निन्द्रा तन्द्रा में खोया व्यक्ति झगड़ालू स्वभाव का हो जाता है । अनावश्यक क्रोध कर झगड़े मोल लेता है । ऐसे व्यक्ति का मन हमेशा द्वन्द्व ग्रस्त रहता है, अतः उसकी उन्नति का मार्ग प्रायः अवरूद्ध ही समझो ।

'कर्म' को उच्च बनाने के लिये प्रतिज्ञा, संघर्ष, त्याग और पूजा की भावना अति आवश्यक है, क्योंकि संघर्षशील व्यक्तियों का ऐसा वर्ग भी है । जो संघर्ष को अपना भगवान तथा कर्म मानकर सदा संघर्षशील रहते ऐसे व्यक्ति कुछ अलग ही व्यक्तित्व के मालिक होते हैं । वे बाधाओं से संघर्ष करते हैं मुसीबतों से टक्कर लेते और यही उसका ध्येय वाक्य है–

''उलटता जो सफीनों को,
उसे तूफान कहते हैं ।
और जो तूफान से टक्कर ले,
उसे इन्सान कहते हैं ।

मंजिल उन्हीं व्यक्तियों को मिलती है, जो परेशानियों का सामना करते हुए आगे बढ़ते हैं, किसी ने कितना अच्छा लिखा है–

कदम चूम लेती है खुद आके मंजिल ।
अगर चलने वाला खुद हिम्मत न हारे ।।

प्रतिज्ञा तो मर्यादा ''पुरुषोत्तम राम'' ने की थी–

''चाहे रोशनी चन्द्रमा से अलग हो जाये, हिमालय हिम का परित्याग कर दे और समुद्र अपनी सीमाओं को लांघ जाये, परन्तु मैं अपने पिता की प्रतिज्ञा को भंग नहीं होने दूँगा ।''

ऐसी प्रतिज्ञा तो कोई 'कर्मशील' और जितेन्द्रिय ही ले सकता है, हर व्यक्ति को अच्छे कर्म करने का व्रत लेना चाहिये ।

एक अच्छाई दूसरी को, दूसरी तीसरी को और तीसरी अच्छाई, चौथी अच्छाई को खींच लाती है । मेरे अनुसार नहीं, वेद मन्त्र के अनुसार । वेद मंत्र तो वेदवाणी है और वेदवाणी ईश्वर की वाणी है अर्थात् ईश्वर की वाणी के अनुसार–

Scanned by CamScanner

''व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम्।
दक्षिणा श्रद्धा माप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते।।''

जब कोई व्यक्ति किसी कर्म को करने का व्रत लेता है तो उसे उस कार्य करने का ज्ञान प्राप्त होता है ज्ञान प्राप्त होने पर उसका यश चारों तरफ फैलता है, यह यश ही दक्षिणा है जब यश रूपी दक्षिणा प्राप्त हो जाती है तो उस कार्य में और अधिक श्रद्धा पैदा होती है ।

कर्म से जीवन को उच्च बनाने के लिये ध्यान देने योग्य बातें-

* **कार्य का आरम्भ सफलता की कुंजी है ।**
* **महान कार्य करने के लिये पहली वस्तु आत्म विश्वास है ।**
* **उत्साही मनुष्य के लिये कोई भी लक्ष्य अप्राप्त नहीं है ।**
* **कोई काम विचार करने से नहीं अपितु परिश्रम करने से होता है ।**
* **बीती बात का शोक नहीं करना चाहिए और भविष्य में क्या होगा इसकी भी चिन्ता नहीं करनी चाहिए । बुद्धिमान लोग वर्तमान काल के अनुसार कर्म करने में जुट जाते हैं ।**

"कुशाग्र बुद्धि वाले व्यक्ति न मिलने वाली वस्तु पाने की इच्छा नहीं करते, नष्ट हुई का शोक नहीं करते और विपत्ति के समय घबराते नहीं ।"

गीतायां कर्मयोगस्योपदेशः-

**''तस्मादसक्तः सततं कार्य कर्म समाचार ।
आसक्तो ह्याचारन्कर्म परमाप्नोति पुरुषः।।''**

इसलिए (हे अर्जुनः तू) निरन्तर अनासक्त होता हुआ कर्त्तव्य कर्म कर, क्योंकि अनासक्त भाव से कर्म करता हुआ मनुष्य परमात्मा को प्राप्त करता है ।

चार मुक्तक

विपिन कुमार शर्मा, बी०एस-सी० द्वितीय वर्ष

हर स्वप्न साकार तो होता नहीं है ।
हर सुमन गुलजार तो होता नहीं है ।
डूब जोय नाव यदि तो कर न गम तू ।
हर मुसाफिर पार तो होता नहीं है ।

आँख वह कैसी कि जो नम नहीं,
रात वह कैसी जिसमें मिलन नहीं ।
कर रहा हूँ सत्य तुम मानो न मानो,
जिन्दगी वह व्यर्थ है जिसमें गम नहीं ।

पंक में पंकज सदा खिलता रहा है,
नीर से नीरज सदा बनता रहा है ।
क्या बनेगा जिन्दगी में वह कभी,
जो सदा ही मौत से डरता रहा है ।

प्यार की मृदुल छवि किसको भाती नहीं है,
रूप पर किसकी नजर जाती नहीं है ।
पर नहीं है रूप जिसको लख निरन्तर,
आत्मा की प्यास बुझ पाती नहीं है ।

Scanned by CamScanner

स्वर्ग की सरकार

इन्द्र प्रताप सिंह, बी०एड०

1. प्रधानमंत्री	–	महादेव जी
2. अध्यक्ष	–	गणेश जी
3. शिक्षा मंत्री	–	सरस्वती जी
4. वित्त मंत्री	–	लक्ष्मी जी
5. निर्माण मंत्री	–	ब्रह्म जी
6. स्वास्थ्य मंत्री	–	विष्णु जी
7. खाद्य मंत्री	–	अन्नपूर्णा जी
8. विद्युत मंत्री	–	सूर्य देव जी
9. जल आपूर्ति विभाग	–	मेघराज इन्द्र
10. रक्षा मंत्री	–	हनुमान जी
11. हवाई दल	–	पवन देव
12. सिंचाई मंत्री	–	अश्विनी देव
13. क्रीड़ा मंत्री	–	श्रीकृष्ण
14. डाक विभाग	–	नारद जी
15. कृषि विभाग	–	धरती माता
16. शान्ति सलामती विभाग	–	रामचन्द्र जी
17. कानून व्यवस्था विभाग	–	धर्मराज
18. समाज कल्याण विभाग	–	बुद्ध भगवान
19. संहार विभाग	–	यमराज

दोहे विज्ञान के

ब्रजेश मोहन, बी०एस०सी० प्रथम वर्ष

मटर उगाकर खेत में, दिया नाम विज्ञान
अनुंवशिकी के पिता, मेडंल हुए महान्
दूर देश के दो मित्रों की, बात कराता कौन,
ग्राहम वैल का शुक्रिया, दे गए टेलीफोन ।

नीले लिटमस पत्र को कर देते हैं वह लाल,
कहते हैं अम्ल उसे अंग न लेना डाल,
किसी जीव का किस जगह होता है स्थान,
ऐसा लिनियस ने दिया वर्गीकरण विज्ञान ।

इस वसुधा पर हर कही है । ये विराजमान,
धन्य ल्यूवेन हॉक जी ने दिया जीवाणु ज्ञान,
पेड़ लगाये हम कहीं पर, है मेरा प्रस्ताव,
वरना हो जाए न कही, ओषजन अभाव ।

जिसको चाहो भेज दो, अब तुम टेलीग्राम,
मारकोनी का शुक्रिया, उसको करो सलाम,
फिल्म देखने का जिसे, सचमुच में हो शौक,
एडीसन ने पेश किया, हमको टेलीस्कोप ।

Scanned by CamScanner

गणितज्ञ का प्रेम पत्र

मुकेश दत्त, बी०कॉम० द्वितीय वर्ष
90° (डिग्री) 19 (मिनट) 10" (सैकेण्ड) सिग्मा स्ट्रीट, अल्फा कॉलोनी, कैलकुलेशन सिटी, स्टैटिक स्टेट

प्रिय शून्य,

जब से तुमसे दूर हुआ हूँ। मेरा दिल ऐसे टूट गया है जैसे कोई व्यंजक टूट जाता है। गुणनखण्ड करने पर भी मेरा प्रेम ऐसे ही बढ़ रहा है, जैसे चक्रवृद्धि ब्याज से मिश्रधन।

मुझे याद है वह समय जब हमारे प्रेम की चाल एवं दूरी दोनों अधिक थी। उस समय हमारे Love का ग्राफ उच्चिष्ठ (Maximum) स्थिति में था। हमारे मिलन की बारम्बारता उच्च थी। हमारे प्रेम का परिमाप इतना अधिक था कि उससे तुम्हारे परिवार का सम्पूर्ण पृष्ठ बिगड़ गया एवं हमारे तुम्हारे बीच के उन्नयन कोण के बढ़ने पर हमारे प्रेम की प्रतिशतता भी बढ़ गयी। हमारा प्रेम calculation से परे अनन्त (∞) को भी पार कर गया था। "वितरण नियम" के पालन न करने की कसमें साथ–साथ खायीं थीं हमने। पर देखते ही देखते हमारे प्रेम समीकरण बिगड़ गये। हालात के अवकलन–समाकलन का परिणाम यह निकला कि हम कभी न मिलने वाली दो समान्तर रेखाओं जैसे हो गये। फिर भी हमारे प्रेम की कोई Limit नही है। एक बार को तुम मुझे भूल भी जाओ पर मेरा प्यार कभी भी शून्य (Tends to zero) नहीं हो सकता

Lim शून्य
Love------->∞

हमारे प्रेम का शत्रु तुम्हारे परिवार का वह समुच्चय है जिसके तीनों पदों इकाई, दहाई एवं सैकड़ा (माता, पिता एवं भाई) को कभी हमारा विजातीय प्रेम स्वीकार्य नहीं होगा। अतः काफी Calculation के बाद मैंने यह निष्कर्ष निकाला है कि अब तुम्हें उस समुच्चय और मुझमें से केवल एक से जुड़ना होगा निर्णय तुम्हारे उत्तर में है।

परमाणु की संरचना

एक अध्यापक ने एक छात्र से पूछा– परमाणु की संरचना बताइये।
सर, आप परमाणु की संरचना छोड़िए, परमाणु की रचना पूछिए।।
परमाणु की रचना बड़ी शानदार है, इसकी बेटी प्रोटॉन बहुत जानदार है।
इसीलिए उसने उसको कमरे रूपी, नाभिक में बन्द कर रखा है।।
और हम आशिक इलेक्ट्रॉनों ने चक्कर काट–काटकर, परमाणु की नाक में दम कर रखा है,
तभी तो परमाणु ने उसकी सुरक्षा में, न्यूट्रान बिठा रखा है।
बस यही तो है परमाणु में, शेष उसकी संरचना में क्या रखा है।

Scanned by CamScanner

शांति चाहते हो तो तृष्णा को जीतो

सत्यपाल सिंह, बी०एड०

आज यदि विश्व में देखा जाय तो चारों तरफ अशान्ति और दुख ही दुख हैं । यह बात देखकर आचर्श्य होता है कि भौतिक उन्नति चरम सीमा पर होते हुये भी मानव अपने को सुखी अनुभव नहीं करता है । शान्ति सब चाहते हैं किन्तु शान्ति जिस उपाय से मिलती है उस ओर कोई ध्यान नहीं देता । भौतिक साधनों को एकत्रित करने की होड़ लगी हुई है । फिर शांति कैसे सम्भव है ।

जिस प्रकार सागर किरणों को कितनी उदारता से जल दे रहा है । किरणें उसे बादलों को दे रही है । बादल उसे पृथ्वी को दे रहे हैं। पृथ्वी नदियों को दे रही है । नदियाँ समुद्र को दे रही हैं । यह चक्र ही विश्व प्रेम विश्व जीवन का आधार है ।

हम अपने पूर्ण पुरुषार्थ संज्ञान बल, धन को अर्जित करें किन्तु इन सबका अस्वामी अपने को न मानकर परमात्मा को माने तथा त्याग पूर्वक उपभोग करे ।

आज देखा जाय तो संसार की स्थिति ऐसी हो गयी है कि आग से शोले उठे ज्यों ज्यों हवा की मनुष्य की समस्यायें दूर न होकर और अधिक बढ़ रही है । यह मर्ज बढ़ती ही जा रही है ।

इस का कारण है कि मनुष्य केवल प्राकृतिक भौतिक उन्नति की ओर अग्रसर है । आत्मिक उन्नति विल्कुल अपेक्षित है । धन की उन्नति से कोई मनुष्य या कोई राष्ट्र कभी भी तृप्त नहीं हुआ । प्रत्येक देश में पारस्परिक प्रतिद्वन्दता के कारण जीवन उसका नरकीय बना हुआ है ।

जितनी अधिक भौतिक सम्पन्नता बढ़ती है उतनी ही अधिक दरिद्रता । इस संसार में सबसे बड़ा दरिड़ी कौन है । इसके लिए एक उदाहरण :–

एक बार एक साधु को कहीं से कुछ धन मिल गया उसने सोचा यह धन किसे दिया जाय तब एक व्यक्ति ने बताया कि यह धन किसे दिया जाये तब एक व्यक्ति ने बताया कि यह धन उसे दिया जाय जिसे सबसे अधिक आवश्यकता हो ।

इस तरह साधु पूरे संसार में घूमा कि कौन ज्यादा जरूरतमंद है कौन सबसे अधिक असन्तुष्ट है ।

इसी बीच साधु की एक विशाल सेना जाती हुई दिखायी दी उसे पूछने पर मालूम

Scanned by CamScanner

हुआ कि एक राजा जिसके पास सात राज्य हैं आठवें राज्य को जीतने के लिये जा रहा है। साधु ने सोचा इससे बड़ा असन्तुष्ट कोई हो नहीं सकता। जिसका पेट सात राज्यों से नहीं भरा। इस तरह वह धन साधु ने उसकी पालकी में फेंक दिया राजा क्रोधित हो गया उसने साधु से कहा मूर्ख तूने ये क्या किया।

साधु ने धैर्य से उत्तर दिया मुझे धन मिला था मैंने सोचा यह धन किसे दूँ। अंत में निर्णय किया कि अधिक असंतुष्ट को यह धन दूँ। इस तरह तुमसे ज्यादा असंतुष्ट इस संसार में मिला नहीं यह सुनकर राजा ने क्रोध से कहा तुम मुझे दरिड़ी कहते हो साधु ने कहा अब तुम ही बताओ दरिड़ी कौन होता है। दरिड़ी वह है जो आवश्यकताओं को पूरा करने में असमर्थ है। वही दरिड़ी है अब तुम ही बताओ तुम से बड़ा दरिड़ी कौन है तुम अपनी खुशी के लिये लाखों का दुख पहुँचाओगे। इस तरह राजा शान्त हो गया।

लेकिन वास्तविकता है आज मनुष्य समस्याओं का हल पैसा समझ रहा है। सबकी दृष्टि पैसा पर लगी हुई है। संसार में हर व्यक्ति बड़ा कहलाना चाहता है। आज बड़ा आदमी वही है जिसके पास पैसा है।

पैसे की तृष्णा बढ़ती जा रही है। करोड़पति भी अपने को कंगाल समझता है क्योंकि वह अरबपति नहीं है। यदि सारे संसार की सम्पत्ति एक व्यक्ति को दे दी जाय तब भी उसका पेट नहीं भरता।

इसलिये पूंजीवाद, समाजवाद, साम्यवाद कोई भी वाद इसका हल नहीं कर सकता।

आज देश में कंगाली, गरीबी को दूर करने की बात कही जाना। गरीबी मिटाने को अनेक योजनायें बन रही हैं। किन्तु गरीबी मिटती नहीं क्योंकि योजनायें लंगड़ी हैं।

यदि देश की कंगाली और अनैतिकता को दूर भगाना है और सुख शान्ति स्थापित करनी है तो मनुष्य को तृष्णा पर विजय पानी होगी। जो मनुष्य उपरो से बचे उसे मानव समाज की सेवा में लगाओ अन्यथा सारी योजनायें लंगड़ी ही रहेंगी और चरित्रवान मानव समाज का निर्माण करो इसका एक ही साधन तृष्णा पर काबू पाना। यदि संसार में सुख शान्ति चाहते हो तो तृष्णा पर विजय प्राप्त करनी होगी। तभी मानव समाज सुखी हो सकता है।

* * *
* *
*

Scanned by CamScanner

शैक्षिक क्षेत्रीय भ्रमण का सामान्य परिचय

हरिओम, बी०एड०

1. शैक्षिक क्षेत्रीय भ्रमण की पृष्ठभूमि :

केवल शिक्षा ही भूख तथा गरीबी, गन्दगी तथा निरक्षरता, अन्धविश्वास तथा मृत प्रथाओं की समस्याओं को हल कर सकता है । भविष्य शिक्षा शिक्षा का है ।

आधुनिक समय में भ्रमण शिक्षा शिक्षण हेतु यह आवश्यक हो गया है कि छात्र स्वयं करके सीखें अथवा कार्यों को सम्पादित करते हुए सीखे । भ्रमण शिक्षा वास्तव में इसी प्रकार की एक उत्तम विधि है, जिससे छात्र को स्वयं अवलोकन करने का, निरीक्षण करने का, घूमने का, स्पर्श करने का, श्रवण करने का तथा उन्हें परखने का सुअवसर प्राप्त होता है । इस दृष्टि कोण से भ्रमण शिक्षा शिक्षण की एक क्रियात्मक पद्धति/सहायक सामिग्री के रूप में महत्वपूर्ण स्थान रखता है । इस प्रकार अधिक व्यापक, स्थायी, उपयोगी ज्ञान का भण्डार पर्यटन को माना गया है तथा यह ज्ञान छात्र के मन मस्तिष्क में दीर्घकाल तक सुरक्षित रहता है तथा उसे अनेक समानान्तर परिस्थितियों में भी स्थानान्तरित किया जा सकता है । अतः यदि हमारा उद्देश्य भ्रमण शिक्षा को व्यावहारिक रूप में छात्रों को पहुँचाना है तो इस सहायक विधि की अवहेलना नहीं की जा सकती है । शिक्षा शिक्षण में भ्रमण का मौलिक अर्थ उन स्थानों पर घूमने की योजनाओं से है जो शैक्षणिक तथ्यों, सिद्धान्तों, घटनाओं प्रक्रियाओं के निरीक्षण, परीक्षण में आवश्यक सहयोग प्रदान करते हैं । इस प्रकार के स्थानों में जंगल, पहाड़, वन, औद्योगिक केन्द्र, नर्सरी, राष्ट्रीय, बहुराष्ट्रीय, प्रतिष्ठानों को सम्मिलित किया जा सकता है ।

2. शैक्षिक क्षेत्रीय भ्रमण के उद्‌देश्य :

भ्रमण शिक्षा के उद्‌देश्य छात्रों के स्तर के अनुरूप भिन्न-भिन्न हो सकते हैं । छोटे बच्चों के लिये ये निम्नलिखत हो सकते हैं :-

1. छात्रों की प्रकृति में रुचि विकसित करना है ।
2. छात्रों की अस्पष्ट धारणाओं को स्पष्ट करना।
3. विभिन्न प्रकार की नदियों, पहाड़ियों, घाटियों, मिट्टी के कटाव आदि की स्थिति ज्ञात करना ।
4. छात्रों को विभिन्न प्रकार के संग्रह करने हेतु अभिप्रेरित करना ।

माध्यमिक छात्रों हेतु भ्रमण शिक्षा के उद्‌देश्यः

1. छात्रों को विभिन्न प्रकार की नदियों, पहाड़ियों, घाटियों, मिट्टी, भूमि के सन्दर्भ में वैज्ञानिक अध्ययन का अवसर प्रदान करना ।
2. छात्रों को स्वतन्त्र प्रकृति में सीखने के आनन्द का वैज्ञानिक अनुभव प्रदान करना ।

3. छात्रों में वैज्ञानिक अभिवृत्तियों को विकसित करना ।
4. छात्रों की वैज्ञानिक अभिरुचियों को परिष्कृत करना ।
5. प्राकृतिक केन्द्रों पर ले जाकर छात्रों को ज्ञान का व्यावहारिक पक्ष दर्शाना ।
6. छात्रों को खनिजों, फूल–पत्तियों तथा अन्य ऐसी ही प्राकृतिक वस्तुओं के संकलन हेतु प्रोत्साहित करना ।

उच्च शिक्षारत छात्रों हेतु शैक्षिक भ्रमण के उद्देश्य :

1. मानवीय जीवन के विकास का अध्ययन ।
2. सामाजिकता का विकास करना ।
3. सुनागरिकता व राष्ट्रीयता का विकास करना।
4. समन्वित ज्ञान प्रदान करना ।
5. परस्पर निर्भरता की भावना का विकास करना।
6. अच्छी आदतों एवं उचित कौशल का विकास करना ।
7. सर्वतोन्मुखी व्यक्तित्व का विकास करना ।
8. अवकाश का सदुपयोग करना आदि ।

भ्रमण अध्ययन शिक्षण के उद्देश्यों के महत्व को स्पष्ट करते हुए वी०डी० भाटिया कहते हैं ।

"उद्देश्यों के ज्ञान के अभाव में शिक्षक उस नाविक के समान है जो अपने साध्य या मंजिल को नहीं जानता है और बालक उस पतवार विहित नौका के समान है जो लहरों के थपेड़े खाकर किसी भी तट पर जा लगेगी ।"

3. शैक्षिक क्षेत्रीय भ्रमण शिक्षा के आयोजन के सोपान :

शिक्षक द्वारा भ्रमण का आयोजन वहन करने पर भी इसमें पर्याप्त गुणवत्ता का आविर्भाव हो सकता है । बड़ी कक्षाओं में छात्र भी सहयोग प्रदान कर देते हैं, किन्तु उद्देश्यों, स्थान, समय सारिणी, बिन्दुओं का निर्धारण करना शिक्षक के नेतृत्व का ही परिणाम होते हैं । इसके लिए शिक्षक में पर्याप्त योग्यतायें एवं प्रशिक्षण की पूर्णता होनी चाहिए ।

एक सफल शैक्षिक भ्रमण हेतु निम्नलिखित सोपानों की व्यवस्था की गयी है ।

1. शैक्षिक भ्रमण की तैयारी करना ।
2. शैक्षिक भ्रमण का क्रियान्वयन जैसे उद्यान, नदी का किनारा, पहाड़ी स्थान, समुद्री स्थान, रेगिस्तान तथा अन्य सम्बन्धित स्थान भी हो सकते हैं ।

शैक्षिक भ्रमण स्थान के सुनिश्चितीकरण के उपरान्त सारी योजना लगभग सुनिश्चित हो जाती है उप परिस्थितियों में जब भ्रमण का स्थान औद्योगिक केन्द्र है तो सुविधाओं और अनुमति के लिए किसी अधिकारी वर्ग को सूचित करना होता है । निर्धारित समय से पूर्व पत्र व्यवहार द्वारा स्थान देखने की अनुमति अग्रिम रूप से प्राप्त की जाती है और इसी के साथ ठहरने, भोजन के प्रबन्ध की व्यवस्थाओं पर भी पत्र व्यवहार कर लिया जाना चाहिए । छात्रों को किसी प्रकार की सामिग्री अपने साथ ले जानी है तथा भ्रमण का पूर्ण लाभ किस प्रकार

Scanned by CamScanner

से प्राप्त किया जा सकता है, इन सभी तथ्यों की जानकारी भी पूर्व में ही कर लेनी चाहिए । शिक्षक इस स्तर पर भ्रमण के उद्देश्य, भ्रमण के समय काम आने वाली सामिग्री तथा भ्रमण के लाभों का सविस्तार आयोजन करना आवश्यक है ।

1. शैक्षिक भ्रमण व्यवस्था की सुविधा के लिए यह आवश्यक है कि छात्र–समूहों को अलग–अलग निश्चित कार्यों का बोझ दे दिया जाय, जैसे–
2. भोजन समिति
3. व्यवस्था समिति
4. शैक्षिक समिति
5. संकलित सामिग्री समिति आदि ।

शैक्षिक भ्रमण का क्रियान्वयन :

उपर्युक्त सभी पक्षों पर छात्र सम्मिलित रूप से पर्यटन की समस्त तैयारियाँ हो चुकी हैं।

शैक्षिक भ्रमण अध्ययन की नवीन धरणाः

आधुनिक सभ्यता को स्पष्ट करने वाला विषय

शिक्षा का आधुनिक दृष्टिकोण

शिक्षण के लिए नवीन आधार प्रदान करने वाला विषय

क्षेत्रीय विषय के रूप में

सामाजिक प्राणी के रूप में मानव का अध्ययन

शैक्षिक भ्रमण के महत्व की चेतना और उससे मिलने वाले अनेक लाभों का आभास अन्य छात्रों को भी दिया इस प्रकार के प्रदर्शन का प्रयोजन यह भी होता है रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है । शिक्षक इस बात की जाँच अन्तिम रूप से करता है निर्धारित समय एवं स्थान पर सभी छात्र एकत्रित हो जाते हैं तथा उपलब्ध सुविधाओं के अनुसार मोटर अथवा रेल द्वारा प्रस्थान करते हैं कई बार यह भी आवश्यक होता है कि इस सम्पूर्ण कार्य की देख रेख व्यवस्था समिति के सदस्यों द्वारा की जाय ।

निर्धारित पर्यटन स्थान पर पहुँचकर छात्र समूह पृथक–पृथक टोलियों में विभक्त होकर अपने गाइड़ों के साथ तथा अपने साथ लाये लिखित सामिग्री के सन्दर्भ में स्थानों की जाँच पड़ताल करते हैं । वस्तुओं, पेड़–पौधों, जीवों का उचित एवं वैज्ञानिक ढंग से संकलन करते हैं । यह कई दिनों तक लगातार इसी प्रकार से सम्पादित किया जाता है । इससे छात्रों में सूक्ष्म निरीक्षण, वैज्ञानिक अभिवृत्ति, वैज्ञानिक चयन तथा साथ ही साथ अनेकों वैज्ञानिक गुणों के साथ सामाजिक गुणों का भी विकास हो जाता है, जैसे सहयोग, धैर्य, सहभागिता, बँटवारे की भावना तथा पारस्परिक मनोबल की भावनाएँ आदि । सांयकाल व्यवस्था समिति के सदस्य मनोरंजन समिति के सदस्यों के सहयोग से रंगा रंग प्रोग्राम, प्रवचन, व्याख्यान, यात्रा के निष्कर्ष, क्रियाकलाप, पेंटिंग, कविता तथा अन्य स्थलीय आयामों पर नाटक, भाषण, विवेचन तथा ऐसे ही अनेक कार्यक्रमों का आयोजन कर सकते हैं ।

★ ★ ★ ★

Scanned by CamScanner

विकास में परिवर्तन एक आवश्यकता

श्री डी०के० रावत, असि० लाइब्रेरियन

प्रत्येक मानव के अन्दर पूर्ण विकास की सम्भावना स्थिर रहती है। इस दिशा में प्रगति कई बातों पर निर्भर करती है जैसे कि उसकी सोच किस दिशा में है । उसकी कल्पना शक्ति की कहाँ तक उसकी कल्पना है । कल्पना के विषय में दृष्टिकोण की स्पष्टता, लक्ष्य की प्राप्ति का निश्चय, व्यक्ति का अपने में और लक्ष्य में विश्वास तथा इस प्रयास में किये गये कार्य ।

सफलता का अर्थ स्वप्न का साकार होना है, आत्मविश्वास, दृढ़ निश्चय, अबाध शक्ति के साथ कार्य सम्पन्न करना । अर्थात जो भी व्यक्ति जो कुछ भी करना चाहें या चाहता हो उसके लिये उस कार्य का मानचित्र जो भी जैसा भी वह चाहता हो वह उसके सामने एक चलचित्र के रूपी हर समय उसके सामने उपस्थित हो, उसके साथ उसका भावात्मक सम्बन्ध जुड़े और साथ ही उसकी प्राणपन से करने की इच्छा हो ।

जीवन में तीन चीजें ऐसी हैं जिनका यदि समय पर उपयोग न किया जाएं तो वह सदा के लिये हाथ से चली जाती है– १. समय, २. अवसर तथा ३. उच्चरित शब्द । अतएव आवश्यक है कि व्यक्ति सदैव पूरी तरह से जागरूक बना रहे, समय नष्ट न करें, अवसर पर चूके नहीं और कोई बात कहने से पहले अच्छी तरह से विचार कर लें तथा दूसरों की बातों का ध्यानपूर्वक सुनें । ईश्वर हमको नित्य प्रतिदिन इच्छानुसार कार्य करने का अवसर प्रदान करता है । हम इस अवसर को बुद्धिमत्ता पूर्वक उपयोग करें । कुछ लोग यह कहकर अवसर गवाँ देते हैं कि मुझे समय नहीं मिला । उन्हें समझ लेना चाहिए कि समय न मिलने की शिकायत व्यर्थ है ।

पास्टल नामक विचारक ने ठीक ही कहा है कि "जो हमारी आज की उपलब्धि है वह कल के समग्र विचारों का परिणाम है । कल के विचार के अनुसार आज आप हैं और आज के विचारों के अनुसार आप कल बनेंगे ।" वास्तविक महत्व हमारे विचारों का है जो कि हम व्यवहार में लाये जाते हैं । केवल हमारे इरादे ही हमारी कोई सहायता नहीं कर सकते हैं जब तक कि हमारा उसके अनुसार कोई प्राप्ति का व्यवहार न किया जाये ।

यदि हम यह कहें कि हमें कोई फसल

Scanned by CamScanner

जो कि तैयार की स्थिति में है सोचो जरा उस कृषि भूमि से फसल प्राप्त करनें के पहले उसकी तैयारी के लिये अनेक कदम उठाने पड़ते हैं। भूमि पर हल चलाना होता है, बीज बोने होते हैं, सिंचाई करनी होती है और खरपतवार को निकालकर फेंकना होता है। हममें से प्रत्येक अपने जीवन में विकास विभिन्न स्तर पर करता है। कुछ लोग फसल प्राप्त करने की स्थिति में होते हैं, क्योंकि उनका प्रत्येक कार्य योजनाबद्ध तरीके से सम्पन्न हुआ है।

वस्तुतः तैयारी करना विशेष महत्वपूर्ण होता है। उसी के अनुसार खेत में फसल होती है और हमारे जीवन में विकास का स्तर निश्चित होता है। केवल विचार करने से और उन्हें व्यवहार में न लाने से सफलता की आशा व्यर्थ है। यह तो इस प्रकार से जैसे कि बिना पानी में कूदे तैरना सीखना। अर्थात तैयारी का अर्थ है धैर्यपूर्वक कठिन परिश्रम करना और व्यावहारिक रूप से आचरण करना। हम कह सकते हैं कि हमें अपने प्रति पूरी तरह से ईमानदार तथा कर्तव्यनिष्ठ होना बहुत महत्वपूर्ण है। प्रत्येक परिवर्तन के लिये प्रयत्न करना होता है और मनुष्य का स्वभाव प्रत्येक परिवर्तन का विरोध करना है, वह परिवर्तन को यथाशक्ति रोकना चाहता है। हमें परिवर्तन के लिये स्वयं ही प्रयत्न करना होगा, कोई अन्य व्यक्ति आकर हमारे अन्दर परिवर्तन नहीं करेगा।

कुछ व्यक्ति अपनी वर्तमान स्थिति से सन्तुष्ट होते हैं और अपने को बदलने की कोई आवश्यकता नहीं समझते हैं। सामान्य व्यक्ति की सामान्यतः यही प्रकृति होती है। इसके विरूद्ध कुछ लोग ऐसे होते हैं जो पूरी निष्ठा के साथ परिवर्तन के लिये अपना पूरा समय, शक्ति तथा अपनी समस्त वृत्तियों का उपयोग करते हैं। ऐसे व्यक्ति अपने भाग्य के स्वामी होते हैं, समस्त कठिनाइयों और कष्टों पर विजय प्राप्त करते हैं तथा अज्ञान की बेड़ियों से अपने आपको दूर रखते हैं।

क्या हम अपनी आदतों को बदलने के लिये तथा कुछ सुखद बातों को छोड़ने के लिये तैयार हैं, क्योंकि परिवर्तन के लिए यह परम आवश्यक है। परिवर्तन के लिये नियमपूर्वक अभ्यास और दृढ़ निश्चय की आवश्यकता होती है। इस मार्ग पर चलकर प्रत्येक व्यक्ति अपने में इच्छित परिवर्तन कर सकता है। इसमें आवश्यकता केवल दृढ़ इच्छा शक्ति की है। यदि आप परिवर्तन के लिये गम्भीर हैं तो अपनी सम्भावनाओं को लक्ष्य करके दृढ़तापूर्वक कहिए हाँ मैं परिवर्तन चाहता हूँ। परिवर्तन के सन्दर्भ में हमें अपने विचारों पर विशेष ध्यान देना होगा यथा– अपने बाल्यकाल से प्राप्त विचारों पर और इनके द्वारा अपनी छवि पर विचार कीजिए।

Scanned by CamScanner

ध्यान दीजिए कि आपके विचार नकारात्मक तो नहीं है । नकारात्मक विचार अनेक प्रकार के विकार उत्पन्न करते हैं । जैसे– तनाव, क्रोध, ईर्ष्या, भय, चिन्ता इत्यादि । यहाँ तक कि इनके कारण भांति–भांति के रोग उत्पन्न हो जाते हैं । इसके विपरीत सकारात्मक विचार उदातत्व भावनाओं को जन्म देते हैं, जैसे– प्रेम, करूणा, शान्ति, सद्भावना इत्यादि । अतएव अपने शीघ्र विकास के लिए हमें नकारात्मक विचारों से दूर रहना चाहिए और सकारात्मक विचारों को यथाशक्ति अपनाना चाहिए ।

इसके लिए एक उपाय है कि हमें ऐसे व्यक्तियों का साथ नहीं करना चाहिए जो प्रत्येक कार्य के बारे में यह कहें कि यह नहीं हो सकेगा। इसके विपरीत हम उन लोगों का सत्संग करें जो प्रत्येक कार्य के बारे में सकारात्मक विचार रखते हैं ।

हमें यह सोचना है कि हम स्वयं किस प्रकार के व्यक्ति बनना चाहते हैं । इसके लिए हमें अपने व्यक्तित्व में निहित विशेषताओं पर विचार करना होगा । अंग्रेजी के प्रसिद्ध नाटककार ने ठीक ही कहा है कि "किसी अच्छाई को धारण कर लीजिए और यह तुम्हारे व्यक्तित्व का अभिन्न बन जाएगी ।"

"Assume a virtue and it is yours".

हम यथाशक्ति उन व्यक्तियों के साथ रहें जिनके अनुसार हम बनना चाहते हैं । सुखद बात यह है कि हम अतीत के ताले में बन्द नहीं रहते हैं, बल्कि भविष्य के निर्माण के लिए सदैव स्वतंत्र बने रहते हैं और इस प्रकार हमारे सामने वह सम्भावनाएँ प्रकट होती रहती हैं जिनके अनुसार हमारा व्यक्तित्व निर्मित होता है । इसका उपाय यह है कि हम प्रत्येक कार्य की नित्य नये ढंग से करें अर्थात जिस प्रकार कल किया था उसकी अपेक्षा आज अधिक श्रेष्ठ रूप में करें ।

हमारे युवा वर्ग को चाहिए कि वे परिवर्तन के लिए सदैव तैयार रहें, अपने मस्तिष्क को श्रेष्ठ विचारों से मुक्त करें जिससे उनका भविष्य सुखद और सम्पन्न हो सके । हमें अपने जीवन को संतुलित रखते हुए यह प्रयास करना चाहिए कि हम नित्य एक नया जीवन जियें ।

★ ★ ★

★

Scanned by CamScanner

खेलों द्वारा व्यक्तित्व विकास

डा० वाई०के० गुप्ता, क्रीड़ा प्रभारी

खेल एक प्राचीनतम एवं स्वयं में एक परिपक्व शब्द है । इसकी परिभाषा आदिकाल से परिभाषित होती आ रही है । खेलों को प्राचीन काल से ही खेला जाता रहा है भगवान श्रीकृष्ण ने खेल के बहाने ही यमुना नदी पर कालिया नाग को मारकर लोगों को मुक्ति दिलायी ।

आदिकाल में भी ऋषियों ने खेलों की महत्ता का वर्णन बहुत ही सुरुचि ढंग से वर्णन किया है । वर्तमान काल में भी खेलों की अत्यन्त आवश्यकता को देखते हुये खेलों को शिक्षा में एक अनिवार्य विषय से जोड़ा गया है । वैज्ञानिक दृष्टिकोण में भी इसी बात को सार्थक किया गया है कि खेल के द्वारा मानव शरीर के सभी अंगों का पूर्णत विकास होता है । मनुष्य के व्यक्तित्व विकास में खेल का एक महत्वपूर्ण योगदान है । नवीनतम शिक्षा प्रणाली भी अब खेलों पर आधारित ही बनायी जाने लगी है ।

भारत सरकार भी खेलों के विकास के लिए पूरी तरह से तत्पर है तथा खेलों के समुचित प्रयास किये जा रहे हैं । खेलों को बच्चों के लिए एक आधारभूत आवश्यकताओं से जोड़ा गया है । वर्तमान में खेल सभी प्राथमिक शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा तक विकसित किये गये हैं ताकि यह व्यक्तित्व विकास में अपना योगदान पूर्ण कर सकें ।

महाविद्यालय में खेलों पर पूरा ध्यान दिया जाता रहा है तथा प्रबन्धतन्त्र भी समय–समय पर खेलों की प्रतियोगिताओं पर पूरी तरह से अपने वायदों को निभाते रहे हैं तथा इनको आगे बढ़ाने के लिये सतत् प्रयास कर रहे हैं । गत वर्षो में महाविद्यालय की बास्केट बॉल की टीम डा० के०एल० गर्ग मैमोरियल टूर्नामेन्ट में हिस्सा लिया था तथा क्रिकेट की टीम ने हीरो होन्डा कप में हिस्सा लिया था । कॉलेज में भी समय–समय पर बी०कॉम०, बी०एस०सी० तथा बी०एड० विभागों के अन्तर्गत कैरम, बैडमिन्टन, शतरंज, खो–खो तथा कबड्डी प्रतियोगिताओं का एक सफल आयोजन होता रहा है । प्रबन्धतन्त्र भी आगामी वर्षो में कालेज में कई बड़े खेलों के आयोजन पर विचार कर रहा है । इससे साफ जाहिर है कि प्रबन्धतन्त्र भी कॉलेज के खेल में काफी सक्रिय भूमिका निभाता रहा है ।

Scanned by CamScanner

महाविद्यालय के विभिन्न कार्यक्रमों की एक झलक

प्राचार्य डा० पूरनमल द्वारा सम्बोधन

कालेज प्रबन्ध समिति की सदस्य सुश्री पुष्पा शर्मा एवं श्री देवी गोयल
अति०पुलिस महानिर्देशक महाराष्ट्र शासन द्वारा दीप प्रज्जवलन

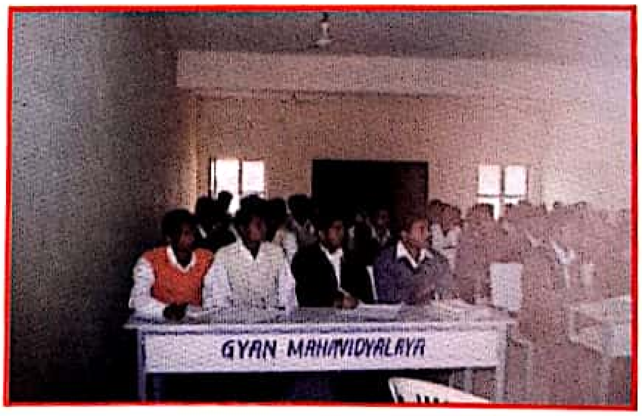

Scanned by CamScanner

स्काउट एवं गाइड शिविर – एक झलक

स्काउट एवं गाइड शिविर के समापन समारोह पर उपस्थित अतिथिगण

स्काउट एवं गाइड शिविर गतवर्ष की पुस्तिका का विमोचन करते हुये मुख्य अतिथि श्री विजेन्द्र मलिक

विभिन्न टोलियों का निरिक्षण करती हुई कालिज अध्यक्षा श्रीमती आशा देवी

विभिन्न छात्रों द्वारा बनायें गये रस्सी पुल का अवलोकन करते हुये कालिज सचिव श्री दीपक गोयल

विभिन्न टोलियों के टोली नायक अपनी टोली का परिचय देते हुये

कालिज सचिव श्री दीपक गोयल द्वारा स्मृति चिन्ह भेंट करते हुये

Scanned by CamScanner

वृक्ष- एक इतिहास

राहुल गुप्ता, बी०कॉम० पूर्व छात्र

वृक्ष पर्यावरण एवं मानव जीवन के महत्त्वपूर्ण अंग हैं– वे मानव के साथी भी हैं। कथाओं एवं इतिहास में उनके उल्लेख कई प्रकार से पाये जाते हैं। वृक्ष हमारे चिरसाथी और जीवन के अनिवार्य अंग रहे हैं। उनकी चर्चा कथा, इतिहास आदि समस्त स्तरों पर होती आई है। वृक्ष हमारे लिये अनेक प्रकार से उपयोगी है– औषधि, भोजन, छाया, प्राणवायु, लकड़ी आदि वे हमें प्रदान करते हैं। एक पौधे को स्थापित करने का अर्थ होता है– समाज के व्यक्तियों के प्रति अनेक प्रकार से उपकार करना।

एक वृक्ष जमीन पर लगाया जाता है और वह ऊपर आकाश की ओर बढ़ता जाता है, वह पृथ्वी से पानी ग्रहण करता है और वह पानी पत्तियों के माध्यम से वाष्प रूप बन जाता है। इस प्रकार प्रत्येक वृक्ष तीन प्रदेशों अथवा क्षेत्रों-- थल, जल एवं आकाश के मध्य एकता का प्रतिनिधित्व एवं प्रतीक विधान करता है।

वृक्ष का एक भाग ऊपर आकाश से बातें करता है और लगभग उतना ही भाग पृथ्वी के नीचे की ओर जाता है, इसका निहितार्थ है कि अदृश्य संसार ही इस भौतिक जगत में पुनरावृत्ति करता है और अपने को व्यक्त करता है।

लम्बे ऊँचे वृक्ष की शाखाएँ पके हुए फलों से युक्त होने पर पृथ्वी की ओर नीचे की ओर झुक जाती है– यह वस्तुतः सम्पन्नता एवं विनम्रता का मनोहारी सामंजस्य है। इसको लक्ष्य करके नीति शास्त्र के पण्डितों ने कहा है– नमन्ति फलनो वृक्षाः, नमन्ति गुणनो जनाः। शुष्क काष्ठिानि मूखश्चि, न नमन्ति कदाचनः।।

फल वाले वृक्ष और गुणवान व्यक्ति नीचे की ओर झुकते हैं– सूखा काठ और मूर्ख व्यक्ति कभी नहीं झुकते हैं, 'देना' वस्तुतः वृक्ष का मूल स्वभाव है– जो उन पर पत्थर मारता है, उसको वे फल देते हैं। वृक्ष प्रकृति वातानुकूलक (Air Conditioner) की तरह कार्य करते हैं। वे अपने चारों ओर गर्मी व धूप को ग्रहण करते हैं और शीतल छाया प्रदान करते हैं– वे शांत पथिक की शीतलता एवं पक्षियों के लिये सुरक्षित आश्रय के प्रदाता हैं।

खजूर का वृक्ष किसी काम का नहीं माना जाता है, क्योंकि वह पथिक को छाया तथा भूखे को फल प्रदान नहीं करता है। उसको उस कृपण की भाँति बताया जाता है जिसकी सम्पत्ति किसी दीन–हीन का भला करने के काम नहीं आती है वृक्ष कार्बन डाइआक्साइड ग्रहण करता है और उसका विश्लेषण करके प्राणदायिनी आक्सीजन के दे देता है। इस प्रकार वह विष को अमृत रूप करके समाज को प्रदान करता है।

प्राचीन लोक कथाओं में भी वृक्षों को इतिहास को कई महत्वपूर्ण तरीके से उल्लेखित किया गया है जिसमें कि वृक्षों के सृजन करना

Scanned by CamScanner

और उसका उपयोग दूसरों के लिये करना यह इस प्रकार से है– एक वृद्ध व्यक्ति अपने बगीचे में आम का पौधा लगा रहा था, उसकी पत्नी ने उससे कहा– इसको लगाने के लिये श्रम करना व्यर्थ है, क्योंकि आप इसमें लगने वाले आमों का स्वाद कदापि न ले सकेंगे । उस वृद्धजन ने उत्तर दिया– "मैं अपने जीवन में आम के फल खा सका हूँ, जिसे अगली पीढ़ी के लोग इसके फल खा सकें ।" वास्तव में बात ऐसी ही है, एक वृक्ष इस बात का सर्वदा स्मारक है कि आपने समाज की सेवा में क्या योगदान किया ?

बुद्धदेव को बुद्धत्व की प्राप्ति पीपल के वृक्ष के नीचे प्राप्त हुई थी । भारतवर्ष में नीम, तुलसी तथा केला के वृक्षों का महत्व चिकित्सकीय एवं आध्यात्मिक दोनों दृष्टियों से है । भारतवासी इनकी पूजा भी करते हैं, क्योंकि वे इन वृक्षों में दैवी शक्तियों का वास मानते हैं और इनकी पत्तियों, छालों तथा फलों का प्रयोग विभिन्न औषधियों के निर्माण हेतु भी करते हैं ।

जब तक वृक्ष स्वस्थ रहता है तब तक वह फल प्रदान करता है– जिन्हें प्रायः समस्त जीवधारी खाते हैं और इनके अतिरिक्त पशुओं के भोजनार्थ पत्तियाँ देता है ।

विच्छंखलित अथवा गिर जाने के उपरान्त वह लकड़ी प्रदान करता है, जो ईधन के रूप में प्रयोग किये जाने के अलावा भवन–निर्माण एवं फर्नीचर तैयार करने के काम आती है, स्पष्ट है कि जन्म से लेकर मरणोपरान्त वृक्ष का प्रत्येक भाग पराये काम आता है ।

एक अन्य तथ्य दृष्टव्य है, छोटे–बड़े समस्त वृक्ष एक साथ एक ही स्थान पर स्वतन्त्रता पूर्वक, स्वायत्ता की रक्षा करते हुए स्थित रहते हैं और साथ ही सम्बन्धित स्थान–घाटी, उद्यान, कामन आदि के सौन्दर्य में वृद्धि करते हैं । मानवों को वृक्षों से सह–जीवन एवं परस्परिक सहयोग की शिक्षा ग्रहण करनी चाहिये । वृक्षों के मध्य छोटे–बड़े, ऊँचे–नीचे, सबल–निर्बल आदि भेदों का प्रश्न ही उत्पन्न नहीं होत है ।

वृक्ष जीवन का रूप होते हैं अर्थात उनमें हमारी तरह जीवन के लक्षण पाये जाते हैं । कोई व्यक्ति जब किसी वृक्ष की पत्ती को तोड़ता है, तो उस स्थान के आसपास की कोशिकाएँ हिंसात्मक अशांति का अनुभव करती है ।

हमें समझ लेना चाहिए कि एक वृक्ष का कटना एक चीते या शेर के वध के समान हमारे लिये चिंता का विषय होना चाहिए । विज्ञान के स्तर पर प्रमाणित हो चुका है कि वृक्षों में हमारी भांति जीवन है । जब हम पेड़ से पत्ती तोड़ते हैं, तो उसके आसपास के अंग को हिंसात्मक कार्यवाही अनुभूति होती है । हमारा कर्तव्य है कि हम प्रत्येक प्रकार से वृक्षों की सुरक्षा करें । उनके द्वारा उपकार के ऋण को चुकाने के लिए वृक्षारोपण करें तथा कम से कम एक वृक्ष को गोद ले लें । वृक्ष हमारे प्रति इतना उपकार करते हैं कि प्रत्येक मानव कम से कम एक वृक्ष को गोद लेकर उनके ऋण को चुकाने का प्रयत्न करे । वे सामाजिक जीवन का आदर्श हमारे सामने प्रस्तुत करते हैं और उसके अनुसरण की प्रेरणा प्रदान करते हैं ।

Scanned by CamScanner

अनुशासन की ओर

डा० बी०डी० उपाध्याय, प्रवक्ता रसायन विज्ञान

अनुशासन प्रत्येक देश और प्रत्येक समाज के जीवन के लिए सबसे अमूल्य निधि है । जिस प्रकार देश और समाज के जीवन में अनुशासन का मूल्य सबसे अधिक है, उसी प्रकार अनुशासन व्यक्ति के जीवन के लिए भी महत्वपूर्ण है । कल्पना ठीक बिना अनुशासन के इस प्रकार से की जायेगी जैसे कि बिना रक्त के शरीर तथा बिना अनुशासन के समाज । विद्यालय में छात्र– छात्राओं दोनों को ही शिक्षा दी जाती है । उनके जीवन को सुदृढ़ एवं सुन्दर बनाया जाता है, अतः उससे विद्यालय एवम् गुरुजन यह आशा करते हैं कि वह विद्यालय में गुरुजनों के द्वारा बनाये गये नियमों का पालन करें और विद्यालय में एक अनुशासित व्यवहार करें । क्योंकि यह वह ऐसा करने में असमर्थता प्रकट करता है तो इस प्रकार विद्यालय का उद्‌देश्य निष्फल हो जाता है ।

अनुशासन वह विधान है जो देश, समाज और विद्यार्थियों के भावी विकास के लिये अत्यंत परमआवश्यक है । देश की भावी उन्नति के लिए विद्यार्थियों का शारीरिक, मानसिक व चारित्रिक विकास करना अत्यंत आवश्यक है । विद्यार्थियों को अनुशासन से लगाव होना चाहिये। क्योंकि अनुशासन के अभाव में न तो वे समाज, देश के सभ्य नागरिक बन सकते हैं न ही वे अपने व्यक्तिगत जीवन में सफल हो सकते हैं। विद्यालय में सुचारू रूप से पठन–पाठन के लिये अनुशासनहीनता से न तो अध्यापक ही पढ़ा सकते हैं और न ही छात्र पढ़ सकते हैं ।

विद्यार्थियों के चहुँमुखी विकास के लिए अनुशासन आवश्यक है परन्तु वर्तमान समय में विद्यार्थियों में अनुशासनहीनता निरन्तर बढ़ती जा रही है । प्रायः विद्यार्थी द्वारा गुरुजनों की आज्ञा का उल्लंघन करते हैं । गुरुजनों का उपहास करना उनके मनोरंजन का साधन बन गया है ।

छात्रों में अनुशासनहीनता का प्रमुख कारण दोष पूर्ण शिक्षा प्रणाली है । परीक्षा प्रणाली भी दोषपूर्ण होने से परीक्षार्थी की योग्यता को भी ठीक प्रकार से नहीं जाँचा परखा जाता है । विद्यार्थी नकल करते हैं तथा परीक्षकों के पास नम्बर बढ़वाने जाते हैं । अध्यापकों का ट्यूशन के प्रति लगाव तथा माता–पिता द्वारा बच्चों को नियन्त्रण में न रखना भी अनुशासनहीनता का एक कारण है ।

अनुशासनहीनता को दूर करने के लिए शिक्षा प्रणाली में ऐसा परिवर्तन किया जाना चाहिए कि विद्यार्थी शिक्षा के प्रति अपने कर्तव्यों को समझें। विद्यार्थियों की पूर्ण अनुशासित किये जाने की ओर माता–पिता, शिक्षक के साथ साथ सरकार का भी एक ऐसा सम्मिलित प्रयास हो कि वह एक अनुशासित व्यक्ति देश, समाज व विद्यालय के लिये एक धरोहर सिद्ध कर सकें। सभी विद्यार्थियों को अनुशासन के प्रति बहुत सजग रहना चाहिए । उन्हें अपने आपको एक अनुशासित विद्यार्थी बनाने की पूरी कोशिश करनी चाहिए । एक विद्यार्थी के लिए यह आवश्यक हे कि वह विद्यालय में जाने से पूर्व खुद को जाँच ले कि वह विद्यालय द्वारा निर्धारित यूनीफार्म में है या नहीं, और विद्यार्थियों द्वारा अपने गुरुजनों का आदर करना यह अनुशासन का एक प्रमुख अंग है । आत्मा सयंम और अनुशासन ही जीवन में सफलता का वह द्वार है जिससे वह सभी अभीष्ट कार्य सिद्ध कर सकता है ।

Scanned by CamScanner

Exam. ka bhoot bhagao

Hemant Kumar, B.Sc. IInd Year

"Essential for ur health during exams" :

Cat right - Good nutrition translate to energy, clear thinking & good health.

* Avoid an empty stomach.
* Eat light.
* Eat a balanced diet.

"Drink plenty of water"

* To harness memory.

"Get plenty of sleep"

* It varies from person to person, usually 7-8 hours of sleep is adequate.

"Exercise regularly"

* Regular excercise release chemicals in our body that counter the effect of stress, depression and anxiety that students suffers from during exams.

"Take time to relax"

* Talk & interact with family members.
* Enjoy time with friends.
* Utilize ur time effectively to dispose ur pressures.

"You must work hard for a good percentage : it will boost up your morals, but let it not depress or deter you, if you get a lower percentage".

"Remember that no one is perfect. You have worked as hard as you could".

My Parents

Pankaj Kumar, B.Sc. III Year

When I need help you are with me
When I need strength, you give me Strength,
When I am disappointed, you console me,
When I am confused, you show me the right path,
When I am successful, you are happy.
When I rise, you walk with pride,
Whatever I am today is because of you.
You are my heart, my soul, my life,
My reason for living.

Scanned by CamScanner

CHALLENGES FACED IN THE IMPLICIT GROWTH OF INDIA

Sri Deepak Goel, Secretary

Introduction :

The Indian Economy grew by overwhelming value of 9.2% in the second quarter of 2007, but yet this figure is misleading. This figure does not portary the actual situation of India's growth. This figure is misleading as there is a divide between one India which is growing at a pace much quicker than 9.2% and there is one section in India which is stagnated and may be even diminishing. It is very important that we include even this section of the Indian population. This process has been termed as 'inclusive growth'. As the president of the Asian Development Bank, Haruhiko Kuroda said, "..no one should be constrained by the lottery of birth by the region, country, family, race, caste, or sex into which one is born. In my view, including all citizens in the process of growth is not just a moral imperative."

The result of exclusive growth makes the economy of the country very fragile and such a growth is never sustainable. It prevents the country from reaching its full potential, which is very important in country like India which is very aspiring to grow to be a developed nation. It further increases the divide between the rich and the poor and thus empowering trade unions and extremists' leaders. Yet one cannot undermine the challenges the government faces in the implication of such a policy.

Steps taken by the government

The current UPA led government realizes this, and have not only emphasized on its importance in the Common Minimum Program, but has always professed themselves as champions of the farmers and industrial workers. Despite this many policies such as the implementation of Socio-Economic Zones have been seen by many as a bridge between the urban and rural disparity, but at the same time is seen by many others as the

Scanned by CamScanner

creation of a gulf between agriculture and industry. Further more the Prime Minister in a speech addressed to the CII as well as Finance Minister, Mr. P. Chidambaram clearly suggested the shift of emphasis from the urban industries to agriculture.

Another policy that faced a lot of flak from the Indian public was that of reservation of seats for backward classes of society. The main criticism of such a policy was that people first believed it was an attempt of the government to appease particular sections of society under the skin of giving equal opportunities to individuals from backward classes to get equal opportunity as other higher classes. Regardless of this it is clear that the government is trying to reduce the gap between the rich and poor, and promote inclusive growth within the country.

Challenges faced by the government in the Implication of Policies

Unemployment

India must create millions of new jobs for unskilled and semi-skilled workers that are currently unemployed or under employed in subsistence agriculture. Although employment in India's knowledge-intensive and capital-intensive industries is soaring, these jobs generally require a higher education or specialized skills. In competing Asian economies, export-oriented labor-intensive manufacturing and final assembly created the first urban jobs for unskilled and semi-skilled workers moving from farms to the cities. A number of policies have contributed to the relatively slow growth of labor-intensive manufacturing and final assembly in India.

Infrastructure

(1) Electricity : Three central GOEs generate most of India's electricity, while state electricity boards (SEBs) distribute electricity. State policymakers require these boards to provide electricity selectively to some farms and lower caste households for free or at subsidized prices. This encourages other households to steal up to 50 percent of the electricity generated through illegal connections to the grid. Subsidizd or stolen electricity costs state governments the equivalent of

Scanned by CamScanner

2.5 percent of India's GDP a year. To offset these losses, state electricity boards overcharge industrial firms. On average, Indian manufacturers pay 60 percent more for electricity than their Southeast Asian competitors and 100 percent more than their U.S. competitors. The central government has recently required SEBs to reduce their subsidies to agricultural and household customers gradually and limit the maximum rate differential among various customers to no more than 20 percent by 2011.

Electricity demand exceeds supply by 7 percent on average and by 12 percent at peak usage. Chronic shortages cause frequent outages. Manufacturers lose power about once every two days, seven times more frequently than in China. Outages reduce the output of Indian manufacturers by 8.4 percent, four times the output loss rate in China.

The Investment Commission of India (ICI) estimated that India must spend $200 billion (equal to 25.7 percent of 2005 GDP) over the next seven years to build 90 gigawatts of generating capacity. India needs foreign direct investment (FDI) to supplement central government plans to increase generating capacity by 67 gigawatts. The inability of cash-strapped SEBs to guarantee payments to private generators and the bitter controversy over FDI by three U.S. firms in a large generation project near Dabhol during the 1990s discouraged large-scale FDI in electricity.

(2) Transportation: India's airports, ports, railways, and roads are grossly inadequate. Inefficient ports slow turnaround time to 3.5 days. 1 Manufacturers pay about 35 percent more to ship an identical cargo to the United States from India than from China. The ICI reported that India must spend $ 19 billion (equal to 2.5 percent of 2005 GDP) over the next nine years on port facilities to increase efficiency.

The ICI estimated that India must spend $15 billion (equal to 2.1 percent of 2005 GDP) over the next five years on civil aviation to alleviate congestion. After years of delay, India has finally begun the expansion of the existing airports in Delhi and Mumbai and the construc- tion of new airports in Hyderabad and Bangalore in 2005.

Scanned by CamScanner

Policymakers require a central GOE, Indian Railways, to charge substantially below market fares for passengers. To recoup these losses, Indian Railways charges firms above market freight rates. Extremely high rail costs have caused manufacturers to shift the bulk of their domestic freight to trucks. Unfortunately, India's road system cannot accommodate this demand.

The ICI estimated that India must spend $60 billion (equal to 8.2 percent of 2005 GDP) over the next five years to improve its roadways. India is currently building two major multi-lane highway projects, the 5,864 km Golden Quadrilateral project and the 7,300 km North-South and East-West corridor project. However, India's expenditures on rail and road transportation compare unfavorably with the peer group.

Workforce Quality : Soaring demand for English speaking managerial, professional and technical workers from India's booming knowledge-intensive and capital-intensive industries is now outstripping its previously plentiful supply. Skilled labor shortages have ignited a bidding war. Some firms are recruiting from the United States, while others are outsourcing or contractors in the United States.

Widespread adult illiteracy prevents many Indian workers from securing jobs in knowledge intensive and capital-intensive industries. India is expanding the access of its children to primary education. As a result, the literacy rate among Indians ages 15 to 24 has increased to 76.7 percent in 2004. Nevertheless, India's primary school enrollment and young adult literacy rates still compare unfavorably with the peer group.

Incomplete Economic Reforms :

(1) Remnant of Licence Raj.: in 2006, the World Bank found that India ranked 134th of 175 economics as an overall place to do business. Among the peer group, only Indonesia fared worse. India's ranking in opening new facilities, paying taxes, trading across borders, enforcing contracts and closing a bank-rupt business were lower than the peer group.

(2) Rigid Labor Market : India's rigid labor laws are a major impedi-

Scanned by CamScanner

ment to labor-intensive manufacturing. These laws slow the transition of the 93.6 percent of Indian workers who are employed in agriculture or the informal urban sector into generally higher productivity jobs in the formal urban sector.

India's labor laws apply to employers with ten or more workers, become more stringent as the number of employees increase, encourage unionization, and generally favor workers over employers. Any seven workers can form a union and bargain collectively with their employer. Governement officials may intervene in collective bargaining on the behalf of "general economic interests." Firms with 100 or more employees need state government permission, which is almost never given, to fire or lay-off permanent employees.

To gain flexibility, firms engage in avoidance and evasion behaviors that are inefficient and reduce the potential size of India's economy. For example, small firms avoid labor regulation by limiting their output and hiring nine or fewer workers. An estimated 57 percent of medium size firms with ten to ninety-nine workers do not register to evade labor laws. Firms invest n costly labor-saving equipment and use temporary workers whenever possible to avoid hiring permanent workers. As a result, the share of temporary workers increased from 12 percent of all manufacturing employment in 1990 to 23 percent in 2002.

(3) Inefficient Government Dominated Financial System : India's central government controlled financial system is highly inefficient in channeling India's saving into productive investment. India has an impressive saving rate of 32.5 percent of GDP, but only one-half of household saving is channeled through banks and other financial institutions. One-third of household saving is invested in housing, and most of the remainder is invested in 44 million low-productivity microenterprises.

Indians bought $10 billion of gold in 2005. Over time, Indians have accumulated over 15,000 tons of gold that are worth $272 billion. Because banks cannot lend gold bars and jewelery, a large portion of Indian savings cannot be

Scanned by CamScanner

intermediated into economically productive investments through banks and other financial institutions. This reduces the potential size of India's economy.

Government-owned banks control more than 74 percent of India's banking assets. India limits foreign direct investment to 74 percent in private banks, 20 percent in government owned banks, and 26 percent in insurers.

India strictly regulates asset allocation. Because of these policies, the central and state governments and their government-owned enterprises absorb 70 percent of all credit from banks and other financial institutions.

Excessive regulations have stunted India's corporate debt and equity markets as external financing sources for large private Indian firms. Consequently, these firms must rely on bank loans to a larger extent than similar firms elsewhere, crowding out small-and medium size firms.

The McKinsey Global Institute reported that reforming India's financial system would increase the current size of India's economy by $47.3 billion and would boost India's potential real GDP growth rate to 9.4 percent a year over the next decade.

(4) International Trade and Investment Liberalization in 2007: India reduced its peak import tariff rate on most non-agricultural goods to 10 percent. Nevertheless, import tariff rates on agricultural goods remain extremely high. India also retains significant non-tariff trade barriers including cumbersome customs procedures and weak enforcement of copyright protection for recordings and software.

India's international trade flows do not compare favorably with competing Asian economies. India's two-way goods trade as a percent of GDP was only 32.0 percent in 2005, lowest among the peer group. Despite its size, India accounted for only 1.3 percent of world goods exports and 1.6 percent of world goods imports in 2005.

Likewise, India trailed compet- ing Asian economies in attracting foreign direct investment. From 1991 to 2005, India's average annual FDI inflows were equivalent

Scanned by CamScanner

to 0.7 percent of GDP. During the same period, China's average annual FDI inflows were equivalent to 3.6 percent of GDP. As a result, India accumulated a stock of FDI equivalent to 5.8 percent of GDP in 2005, the lowest among the peer group.

Corruption : India ranked 70th of 163 countries in the 2006 Corruption Perceptions Index complied by Transparency International, tied with China. In the world bank Investment Climate Survey, 38.1 percent of Indian firms cited corruption as a major obstacle to economic growth Chronic Large Fiscal Deficits.

In fiscal year 2006-07, the consolidated deficit for both the central and state governments was 6.3 percent of GDP. The relatively high fiscal deficits compared with the peer group limit the ability of central and state policymakers to fund education and necessary investments in infrastructure. High fiscal deficits may also deter some central policymakers from deregulating financial services.

Conclusion : India is at a threshold, where the importance of inclusive growth is being understood at all levels of society, and where every policy directed in this direction be a positive move in making the growth in the Indian economy more sustainable. The challenges that will confront India I this implementation are of the basic kind, which demands for larger number of jobs for India's large population of unskilled workers (labor intensive jobs) as well as basic infrastructure such as electricity and transportation throughout the country. Further more policy makers must not get carried away by the short term gains that India has made over last decade, but instead strategize for long term gains.

Since 1991, the Indian people have supported an economic transformation from socialism toward capitalism through their democratic institutions. If central and state policymakers exercise leadership and address these remaining challenges, India will be a key trade and invest- ment centre in Asia and then only will India truly be able to give competition to the like of China in manufacturing.

Scanned by CamScanner

INSPIRATION TO YOUTHS

(Dr.) B.D. Gupta, Ex-Member, U.P. Higher Edu. Serv. Comm.

Dear Student,

This great institution, Gyan Mah- avidhyalya, was founded by a nationally reputed medical profes- sional and a known philonthrop- ologist and senior citizen, Dr. Gyanendra Goyal.

I am another senior citizen transmitting my experience to you with the spirit that it is the function of 'Education' to transmit earlier generation's culture to the new generation through class-room teaching.

We, both the senior citizens, have witnessed the many ups and downs of the journey. Dr. Goyal had a good life, commendable up to his last journey but I had struggled to become a successful teacher. But we both were successful and attained confidence to the highest level by realising that success is directly proportional to the level of confidence we attained, but with a difference. Dr. Goyal acquired confidence from encouragement and guidance from his enlightened elders while I was not so fortunate. I struggled in life and learnt through experience after many trial and errors. Now at this stage, I have a lot of valuable experience and the maturity to analyse my life and find reasons for my failures.

Following Dr. Gyanendra Goyal (Late), I feel my spiritual duty to guide the youth for a better tomorrow. In introspection, I can see that I would have been more successful had I received guidance at some stages of my career. Peace, happiness and self-confidence are essential forces for a spiritual life. I missed these life-enhancing forces due to lack of guidance and proper advice when-ever I was in adverse situations.

Guidance in teenage years acts as fertiliser to growing crops.

Scanned by CamScanner

All of us (senior citizens) have learnt a lot from our mistakes. In addition to that we have learnt from history and scriptures to make us wise and ripe enough to impart our experiences to youth for their growth in the right direction.

Today's youths are more fortunate than we in terms of information access but they also get lot of negative information alongwith positive inputs. Our role, as senior citizen, is to guide youths to acquire only positive information for a peaceful and happy life. Advice to follow truthful path with honest and sincere efforts and to cultivate virtuous mannerisms can be given to youth of today to help them become achievers.

Misuse of power, scams in every walk of life and health problems like AIDS due to negative information they are exposed to and consequently their self-confidence is lost. Stress at educational institutions and work-places is creating restlessness in youths due to which they are struggling for a career inspite of good education and decent family background. As senior citizens, we can bring back peace and happiness in the struggling youths by advising them as to how to set their goal in this competitive world without being stressed.

For this reason, I direct my students of B.Ed. to try hard with sincere efforts to get maximum marks in the examination. I do this through frequent and regular friendly interaction with them. I have categorically suggested to them that passing an examination with good marks is not enough; it is the feeling of peace, happiness and self confidence which is more important for success in life. I have adviced them to read a book written by me in Hindi language on psychology of the Bhagwadgita. This book has examined in detail the psychotherapy given by Lord Krishna to his devotee Arjun when he was due to face a tight corner in the war situation of Kuruchetra. My B.Ed. students are also due to enter into the Kuruchetra of their career.

Scanned by CamScanner

ENVIRONMENTAL PROTECTION HAS NO MEANING TO THE WORLD'S POOR-AFFLUENT NATIONS KNOW IT BUT DON'T ACT

Dr. Puran Mal, Principal

In our country man can see and hear at the speed of light and move faster than sound. Knowledge, that once would have needed vast libraries to contain it, is now on discs that can be held in the palm of one's hand. The discoveries of molecular biology, as much as the development of weapons of destruction, have almost obliterated the line between life and non-life. Mind and memory are being stretched by the stupendous growth of computer technology.

But are human beings wiser or happier ? Where are we going ? Progress goes in only one direction, it ignores all sides effects. Should we not pause to ponder on the fundamentals of our increasingly complex existence.

In any discussion of the future of mankind, we cannot afford to under-emphasise the state in which the vast majority lives in what is called the developing world. Despite the natural resources and traditional cultures of their lands, this huge segment of humanity is condemned to poverty. If these millions cannot be assured of their basic essentials, what meaning can a discussion of the protection of our environment, or of preserving the ecological balance, or of saving wild life, have for them ? Can we ever hope to achieve a world free of tension if the greater proportion of humanity lives in want, while a small, affluent minority monopolises the benefits of modern technology ?

The ancients in India percieved cosmic energy in its triple aspect of creation, preservation and destruction. Science has been used for technologies of destruction. It has also created new materials. The time has come to give more attention to skills of preservation. Concern with the future cannot be a form of reverse archaelogy. We must discover the art of living with nature and growing with evolution. How long can we draw upon the exhaustable resources of the earth ? Many new forms of energy await harnessing.

Action can only follow thought. We are imprisoned in the old thought processes, motivated by

Scanned by CamScanner

the same old greeds and desires. Plants of action will fructitoy only if our thinking breaks through these barriers and our vision stretches into the twenty first century. The issues that affect Africa and Asia today, and will continue to do so for years to come, are well known and oft-debated. But the world is dominated by the developed offluent nations, who are aware of the world's great wrongs but do not act.

SUCCESS

Smt. Seema Pathak, Lecturer B.Ed.

Some people are very successful in their life. Some fail miserably success in life can not be possible without them. And life with out success is no life qualities necessary for success in life.

1. Character : The first and foremost quality for success in life is character. A man who loss his character, loses everything. For all kinds of success a strong character is essential. A characterless person is disliped by all.

2. Tact : Tact and good contact bring us closer to so many persons. One should be tactful enough to read the situation and then to act accordingly. Tact includes intelligence, wisdom, open-mindedness and foxesightedness.

3. Labour : Labour is the key to success. A hard worker is liped by all. We can get anything out of Rard and continuous efforts. A labourious man can do wonders. One who is hard-working and pains taking wins the hearts of all. Success in life can not be possible without labour and efforts.

4. Honesty : An honest man soon gains popularity. He is loved and liped by all. In all walks of life, honestly pays a lot. "Honesty is the best policy" is rightly said. A dishonest man finds himself nowhere. He loses his health besides reputation and other things.

5. Sincerity : A sincere man never fails in his mission. Sincere efforts are always rawarded. One who is not sincere in one's work can not be successful.

Good character, honesty, tact and intelligence are some of the basic qualities without which one can not achieve success. So we can say-

"LABOUR IS THE KEY OF SUCCESS"

Scanned by CamScanner

RELEVANCE OF ONE YEAR B.Ed.

Smt. Seema Pathak, Lecturer B.Ed.

Since time immemorial, the 'teacher' has been respected in society, as teachers shape society. They preach, guide and inspire the young into leaders, professionals and above all five men and women. A good teacher as a provider of knowledge is the pivot of all civilizations.

Teachers professionally lay the foundation or mould the raw material (Childrens mind and behaviour) to produce effective and socially useful professionals such as doctors, lawyers, engineers etc. professional courses such as B.E., MBBS, MBA etc. have a 3-5 yrs. Duration, a proper entrance procedure and above all due importance in given to practical proficiency in terms of practice time during the course.

The one year B.Ed. course run in Madhya Pradesh is perhaps the only professional teacher training degree available to aspiring teachers in this state. [4 year integrated courses run by RIE, Bhopal has only 14/15 seats in each steam for students of M.P.].

A critical analysis of the practical working system of this course shows how Lapses are occurring and being over looked resulting in making this highly honoured degree a mere formality thus disgracing its position.

Since 2001 the admission procedure has changed thrice- Pre-B.Ed. examination followed by central Counseling in Jabalpur, Pre-B.Ed. examination with campus counseling, no entrance examination and campus counseling purely on the basis of graduation marks. The lower mark limit i.e. the minimum marks required for a student to be eligible for this course is 50% in graduation but is reduced time and again at the time of admission to cater to the huge number of vacant

प्रस्तावित भवन का भूमि पूजन

समाज सेवी श्रीमती स्वराज्यलता गोयल द्वारा भूमि पूजन

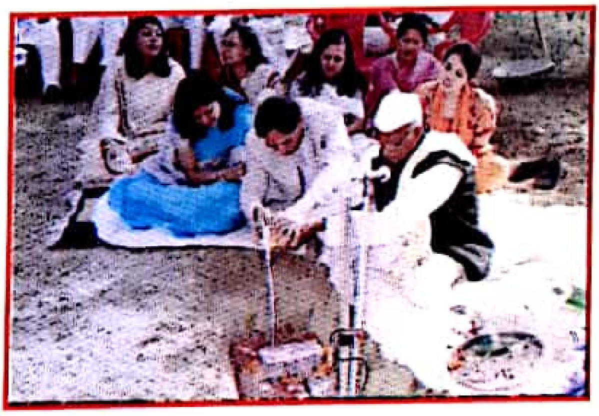

मुम्बई के प्रसिद्ध उद्योगपति श्री लाल गोयल द्वारा सम्पतनिक भूमि पूजन

Scanned by CamScanner

seats in upcoming colleges of education. Most of the colleges of purely commercial interests in this esteemed field of academic achievement. The admission process prolongs from June-July to September, after which only 2-3 months remain for training before the final practical teaching examination conducted in January. This professional degree looses it technical aspect here only, although it carries 400 marks allotted to practical skill acquirement. If-service teacher training is permitted with an year's paid study leave but as not so many financial supporting measures are available to teachers of private schools, they join the course along with their jobs and are unable to give due time to acquiring technical skills of this profession. Te has also been a practice that student takes up this course as an easily available technical degree for a standby job he/she gets a financially rather socio-economically better job. It is many a times the last resort to get a job when one fails in all attempts to get another job. Is it not a pity that a large segment of the school teaching fraternity consists of people who could not succeed in achieving their planned goals or ambitions in life so took up teaching as the last resort for which B.Ed. is required as a technical degree which can easily be attained in an year by a few months half hearted effort.

It need to be seriously though by teacher educators that the duration of this Course be increased to two years with at least six months of intensive internship in recognized schools, is this profession is to be taken up as the last option in ones career or else this course should be integrated with the regular graduation non-technical course (B.Sc., B.Com., B.A. etc.) so that a student may pick up this profession be choice rather than as by chance.

★ ★ ★

★

Scanned by CamScanner

A curse to our society

Gunjan Sharma, B.Sc. IIIrd Year

Introduction :

The dowry system is a curse for the society. It is really a blot on our society. The Evils of dowry is a deep rooted one. The system has made the condition of women in Indian Society very uniserable. Unless this system is abolished, Indian Society can make no progress.

Dowry in the Pst and Present :

The Dowry system is not new for India. It is a very old system. It was also present in the days of Gautam Buddha and Mahavir. But in these days there was no compulsion. The parents willingly gage ornaments and money to their daughters at the time of their narriage. But in modern time this system has taken a very ugly shape. It has now become a compulsion. It is now demanded and settled, after a hard bargain. The boys are now sold in the open market on the highest price. The parents have to purchase them for their daughters. Even if the girl is equally or highly qualified and career girl, still boy's parent's in terms of dowry demand what they have spent on their son's education, career, business etc. when parent's are unable to meet dowry demand their daughters are compelled to accept unmatched marriages.

Evils :

As a result of this system, many young brides commit suicide. This system has made the lives of poor parent's girl miserable. If they are unable to arrange a rich dowry, they find it difficult or rather impossible to marry. Their daughters to suitable young boys. Thousand of poor girls are compelled to pass

Scanned by CamScanner

unmarried life on account of this evil. The birth of a daughter in the house becomes a cause of great worry for the parent's. Their lives loans and remain in debt throughout their lives. Some parents earn money by immoral means for the marriage of their daughters. Some parents are compelled to give their daughters in marriage to old men or widowers. Brides who do not bring insulted and beaten and some times even killed.

Awakening against it :

There is an awakening in the society against, the dowry system now. It has drawn the attention of the government. Anti-dowry act was passed in 1961. But it could not bring any major change in the society. During the Emergency the government again showed deep interest in rooting out this evil. Many state Government passed dowry acts. Now public meetings are often held in towns and cities to consider ways and means of choking this evil. The youth should oppose the direct and indirect ways of offering and accepting dowry. Anti dowry act which was passed to check the evil is now being misused by many girls in may cases.

It has been found that after marriage girls use this Anti dowry act as a means of blackmailing their in laws for not fulfilling all their unreasanable demands. Hence there is need to make some amendments in the Act and to investigate Anti dowry cases seriously.

Conclusion :

Thus we can say that no law will be able to abolish this nenace. It is a social problem and can be fought on the social level alone.

★ ★ ★ ★

Scanned by CamScanner

CO_2 and the Biosphere

Atul Kumar Chauhan, B.Sc. IInd Year (Z.B.C.)

During last few year has been global awareness that carbon dioxide con- centration of the atmosphere is steadily increasing because of the exsire burning of fossil fuel coal oil petroleum and nature gas, man is returning such large quantities of Co_2 to the atmosphere that due to it change anticipated is that the increase in CO_2 may cause an increase in the temperature.

The concentration of CO_2 in the atmosphere is 0.03% as campared to 79% of N_2 or 21% of O_2 but has a signifaction influence on the climate because unlike O_2 or N_2 it absort radiant least radiation.

Main source of the increased atmosphereic CO_2 is the combustion of fossil & fuel harresting or destruction of the forest leads to the decay of organic matter left as latter, including leaves branches, bark, roots and the human. The products of decay are energy water and CO_2.

If harrested forests are allowed to regenerated carbon in taken off from the atmosphere and stored. Than is no way out for the removal of the carbon from the atmosphere as rapidly as it is being release there has been a steadily increased in the atmospheric CO_2.

The most significant effect of the increase in the amount of solar energy anergy retained in the atmosphere and there by enhancing the global temperature.

The need for conserving the remaining forest is equally compell- ing. The forest are important because they are not of the largest power of carbon. The reduction in forest even also reduces the capacity of biotata to remove CO_2 from the atmosphere.

★ ★ ★ ★

Scanned by CamScanner

Just ! A Goal

Dhavan Kumar Varshney, B.Com. IInd Year

What is mean of Goal ? It's your life just set your target and going to the kill her negative thoughts, suddenly you see a new brightness in your mind. This is just the matter of mind.

Generally students think about here and there and sometime there is no welwisher or supporter in one's life that's why that men or women choose the wrong way and make their lives worst.

According to me our Parents and teachers should identify what quality the children or student have and should give advise to him that how he or she can imporove his or her ability to achieve goal.

To Achieve your goal is not so easy, you should make the positive frame of mind as well as do the extremely hard work. Only that person can achieve his goal who make's the "STRATEGY".

Strategy means step by step collection or information about your goal. As a football striker practise harder and harder to make his kick quick and as a painter paints pictures with new thoughts and ideas to make his pictures so lively and attractive.

Some times your ideas or thoughts can be wrong but this is not the end of your goal. This is only the learning proceedure of your target. The man who fear on his failure can't achieve his target. So in my opinion "Life is the opportunity of learning".

Success Mantra : Hard work + Positive frame of mind and never become over confident.

So think positively and do respect your teachers and older people.

Scanned by CamScanner

Water

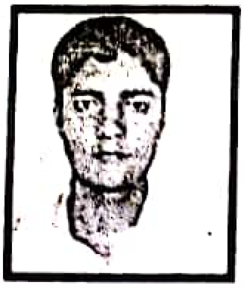

Vipin Kumar Sharma, B.Sc. IInd Year

Water is the basic need of our life. In India there is 4% of total drinking water of world. Which is good thing. But in India per people drinking water availability is very less in comparison of Europian countries it is beacause of the increasing population density. In India the water availability is 2200 cubic meter per year while this water availability in Japan is 6500 cubic meter per year in America 6200 cubic meter per year in reality the water availability in India is sufficient but because of increasing population density it is very low. In the starting of century per square kilometer population density was 77 people which increased up to 267 people per square kilometer in 1996. Thus now days the water availability is decreasing day by day. So some facts about water are thus -

1. On earth there is only 136000 Cubic Kilometer drinking water out of which only 14000 Cubic Kilometer water is used.
2. Water is base of life. Potato Contains 80% tomato 95% and human body has more than 70% water.
3. A person in his life span drinks 61 thousands litre water.
4. In our Country 2000 Million gallon water is needed.
5. For the production of one kilo watt electricity 4000 gallon water is needed.
6. Water is the only substance, which is present in solid, liquid and gas forms.

Education

Must for all is education,
With out it, no one lives with satisfaction
One who is not educated
is always rejected.
India the land of village and rich tradition.
It still backward in the field of education.
Due to the problem. Of over population,
India has a poor economic condition.
People don't bother to send boys and
girls to school.
They are still unknown about this success tool
How to change this mentality ?
which has blemished our nationality.
Better to help each and everyone,
rather than waiting for others to come
to educate the masses is the main target
So that they can know that education is must
If each Indian realises the importance
of education
Only then India can become a bright nation.

Scanned by CamScanner

Grammer

Natasha Gupta, B.Com. IInd Year

There is a beautiful house called 'Grammar'. There are eight members living it.

1. Noun : Noun is the father who does the main work.

2. Pronoun : Pronoun is the elder son who takes the place of father in his absence.

3. Verb : Verb is the name of Mother who does the work of Grammar house.

4. Adjective : She is the youngest daughter who keeps commenting on her father.

5. Adverb : He is the son who is always behind his mother, commenting on her work.

6. Conjunction : She is grandma who joins every member together.

7. Preposition : He is grandpa who tells about the position of the house.

8. Interjection : He is a friend who exclaims at the time of need.

- The most selfish one letter word. - I Avoid it.
- The most satisfying two letter word. - 'We' use it
- The most damaging three letter word. - 'Ego' Quit it
- The most pleasing four letter word. - 'Love' value it
- The most friendly five letter word. - 'Smile' keep it
- The most spreading six letter word. - 'Romour' Ignore it
- The most admisable seven letter word. - 'Success' Achieve it
- The most harmful eight letter word. - 'Jealousy' Distance it
- The most powerful nine letter word. - 'Knowledge' Acquire it
- The most positive ten letter word. - 'Confidence' Possess it

★ ★ ★ ★

Scanned by CamScanner

Teaching

Preeti Gupta, B.Com. IInd Year

(1) Give a man a fish and he will eat for a day. Teach a man to fish and he will eat for the rest of life.

- Chinese Proverb.

(2) Good teaching is more giving of right questions that giving of right answers.

- Josef Albers

(3) The job of an educator is to teach students to see the vitality in themselves.

- Joseph Campbell

(4) By learning you will teach by teaching you will learn.

- Latin Proverb

(5) Teachers open the door, but you must enter by yourself.

- Chinese Proverb

(6) The teacher is one who makes two ideas grow where only one grew before.

- Elbert Husband

(7) Everyone and everything around you is your teacher.

- Ken Keyes Jn.

Poem - When We Share

Harish Kumar Agrawal, B.Com. IInd Year

When we share laughter
There's twice the fun
When we share success
We have surpassed what we have done
When we share problems
There's half the pain,
When we share tear,
A rainbow follows rain.
When we share dreams,
They become more real:
When we share secrets,
It's our hearts we revel.
If we share a smile,
That's when our love shows;
If we share a hug,
That's when our law grows,
If we share with, someone
On whom we depend
That persons is always
Family or a friend, and what draws closer
And makes us all care
Is not what we hare
But the things we share.

Scanned by CamScanner

महाविद्यालय के 15 अगस्त 2007 पर ध्वजारोहण की एक झलक

कार्यवाहक प्राचार्य डा. वाई० के० गुप्ता द्वारा स्वतन्त्रता दिवस पर ध्वजारोहण

महाविद्यालय के प्रवक्तागण, अभिवावकगण तथा विद्यार्थी

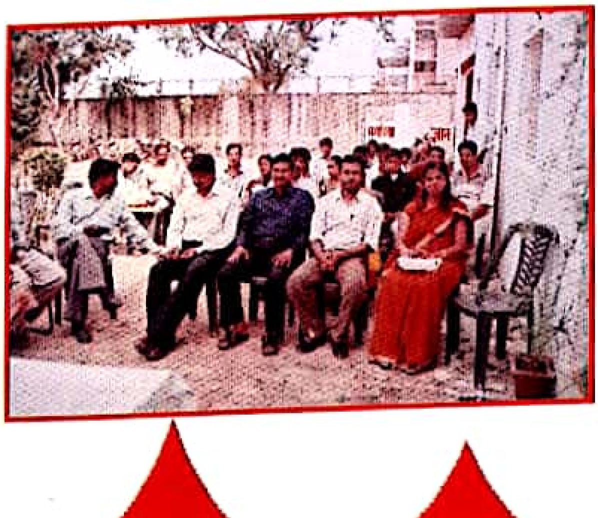

Scanned by CamScanner

मुद्रक : सन्तोष प्रिन्टिग प्रैस, किशनपुर, अलीगढ़ फोन : 9219700609

Scanned by CamScanner